बैठक के दौरान तीन मुख्य बिन्दुओं का मूल्यांकन होता है

- सामुदायिक कार्ययोजना की सफलता एवं असफलता
- उनके पशुओं के कल्याण में बदलाव का रूझान
- पशु कल्याण में सुधार से पशु मालिक के जीवन पर, उनके परिवार पर, समुदाय पर पड़ने वाले प्रभाव का मूल्यांकन

बैठक के शुरूआत में समूह से पूछें कि आप याद करें कि जब शुरूआत में आपने गतिविधियां शुरू की तो उस समय क्या अच्छा हुआ? समूह द्वारा सामूहिक रूप से शुरू की गयी गतिविधियों का ऐतिहासिक समय सारिणी (टी–7) और चुनौतियों को एकत्र कीजिए। इससे गहराई से चर्चा करने के लिए माहौल तैयार होगा।

सामूहिक कार्ययोजना की सफलता एवं असफलता

अवस्था–5 में समूह ने सामूहिक कार्ययोजना की गतिविधियों का आंकलन करके देखा कि जो सहमत गतिविधियाँ थीं वो पशु कल्याण के लिए सही थी या इसमें कुछ बदलाव की आवश्यकता है। अवस्था–6 में समूह मूल्यांकन बैठक करके कार्ययोजना के पहले की स्थिति एवं लागू करने के बाद की स्थिति को तुलना करके बदलाव का विश्लेषण करता है। इसका विश्लेषण आसानी से बदलाव प्रवृत्ति विश्लेषण करके किया जा सकता है (टी–11) समूह विश्लेषण कहता है कि कौन सी क्रिया का प्रभाव हुआ एवं किस क्रिया का प्रभाव नहीं हुआ और क्यों। इससे समूह सीखता है कि कौन सी क्रिया में बदलाव करके कार्ययोजना बनाने की आवश्यकता है। मैट्रिक्स रैंकिग (टी–9) का प्रयोग करके सम्बन्धित गतिविधियों की तुलना की जा सकती है। इस विश्लेषण के समय सामूहिक कार्य से क्या सफलता मिली? क्या परेशानी आयी ? परेशानी का क्या कारण या और इसको कैसे दूर किया जाय ? इसकी चर्चा करना उपयोगी होता है।

पशु कल्याण में बदलाव की प्रवृत्ति

आप द्वारा की गयी प्रक्रिया की सुगमता से पशु मालिक की समझ बनती है कि कब पशु कल्याण अत्यधिक प्रभावित होता है और तत्काल कौन सी क्रिया व्यक्तिगत या सामूहिक रूप से करने की आवश्यकता है। गहरी समझ बनाने के लिए पशु कल्याण भ्रमण का चार्ट विश्लेषण करके बदलाव प्रवृत्ति जानी जा सकती है। समूह के सदस्य बदलाव को मौसमानुसार, पशु पर कार्यबोझ, उनके रहने की स्थिति एवं कार्य वातावरण के अनुसार कर सकते हैं। बदलाव एवं प्रभाव के पहचान के लिए पशु मालिक को सक्षम करने से पशु कल्याण स्थायित्व की ओर बढ़ता है। चित्र 4.13 में आप अश्व कल्याण समूह द्वारा पशु कल्याण भ्रमण 2009 चार्ट का विश्लेषण देख सकते हैं। इसमें जनवरी से मई के बीच माहवार किये गये पांच पशु भ्रमणों का परिणाम देख सकते हैं। इसके द्वारा समूह ने व्यक्तिगत पशुमालिक के कल्याण मुद्दों की संख्या में बदलाव (4.13अ) एवं गांव में पशु पर प्रभाव डालने वाले मुद्दों का विश्लेषण किया है (4.13ब) इस विश्लेषण के द्वारा समूह ऐसे पशु कल्याण मुद्दों की पहचान करता है एवं चर्चा करता है जो सामान्य मॉनिटरिंग में नहीं की गयी (जैसे चरण 5 में दर्शाया गया है) और उसके अनुसार वे नये कार्य की योजना बनाते है। उदाहरण के तौर पर दाहिने हाथ का चार्ट दर्शाता है कि पशु की शारीरिक कमजोरी गांव में अधिक पशुओं का मुद्दा है। यह समूह को पशु के आहार पर सामूहिक कार्य के लिए प्रेरित करता है। (देखें टी–27 पशु के आहार प्रणाली पर विश्लेषण)

कुछ गांव में हमने देखा कि मानिटरिंग चार्ट के विश्लेषण द्वारा ऐसे पशुमालिक को पुरस्कृत किया जाता है जिसने अपने पशु के कल्याण में सबसे अधिक सुधार किया है जो कि समूह को उत्साहित करने का कार्य करता है।

पशु कल्याण भ्रमण का विश्लेषण करने के कई तरीके हैं। आप को समूह को अपनी प्रगति का विश्लेषण करने और तरीका चुनने के लिए सक्षम करना चाहिए।

उदाहरण–

- पशु कल्याण बदलाव मौसम के अनुसार
- पशु के शरीर को प्रभावित करने वाला कल्याण मुद्दा
- मानसिक कल्याण मुद्दे की शारीरिक कल्याण मुद्दों में बदलाव

केस स्टडी I बारंबार मूल कारणों के विश्लेषण का विस्तृत प्रयोग।

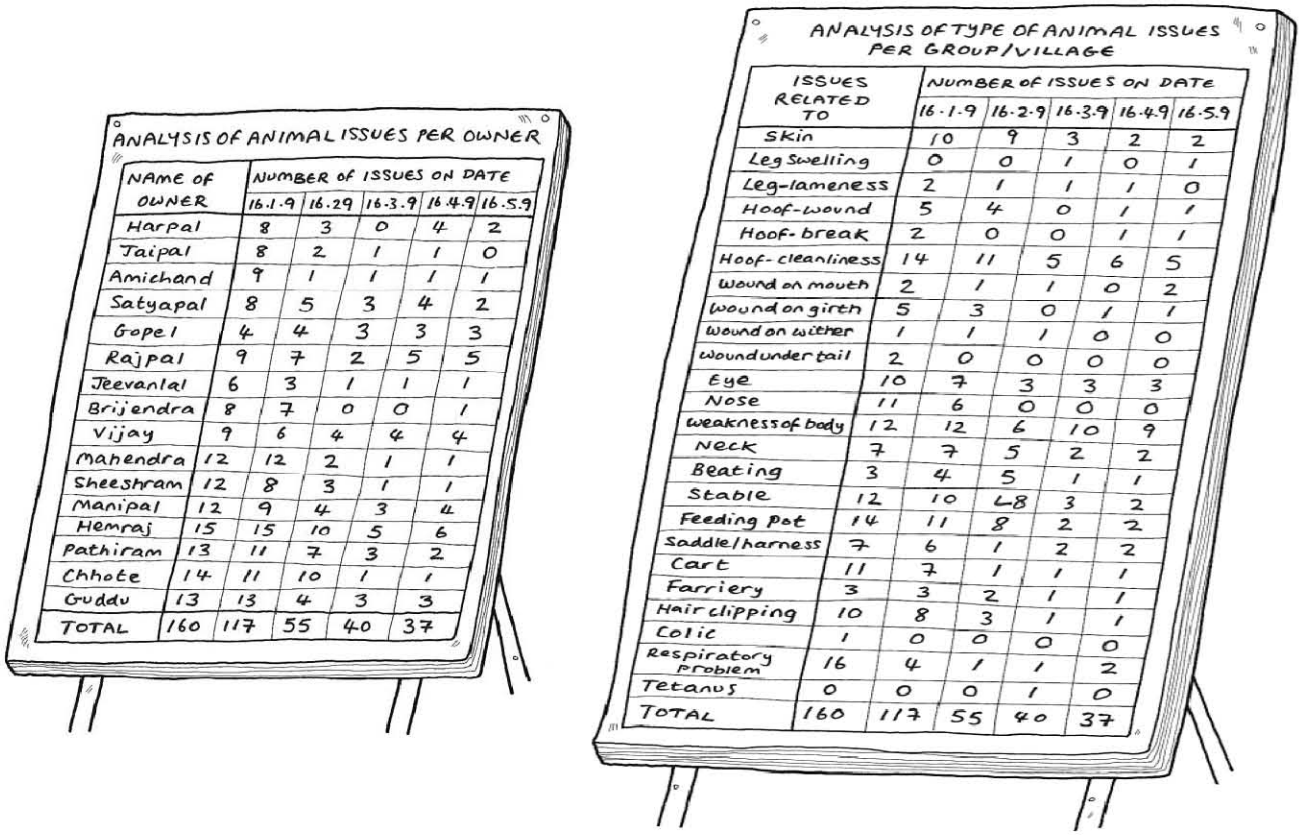

ANALYSIS OF ANIMAL ISSUES PER OWNER

NAME OF OWNER	NUMBER OF ISSUES ON DATE				
	16.1.9	16.2.9	16.3.9	16.4.9	16.5.9
Harpal	8	3	0	4	2
Jaipal	8	2	1	1	0
Amichand	9	1	1	1	1
Satyapal	8	5	3	4	2
Gopel	4	4	3	3	3
Rajpal	9	7	2	5	5
Jeevanlal	6	3	1	1	1
Brijendra	8	7	0	0	1
Vijay	9	6	4	4	4
Mahendra	12	12	2	1	1
Sheeshram	12	8	3	1	1
Manipal	12	9	4	3	4
Hemraj	15	15	10	5	6
Pathiram	13	11	7	3	2
Chhote	14	11	10	1	1
Guddu	13	13	4	3	3
TOTAL	160	117	55	40	37

ANALYSIS OF TYPE OF ANIMAL ISSUES PER GROUP/VILLAGE

ISSUES RELATED TO	NUMBER OF ISSUES ON DATE				
	16.1.9	16.2.9	16.3.9	16.4.9	16.5.9
Skin	10	9	3	2	2
Leg Swelling	0	0	1	0	1
Leg-lameness	2	1	1	1	0
Hoof-wound	5	4	0	1	1
Hoof-break	2	0	0	1	1
Hoof-cleanliness	14	11	5	6	5
Wound on mouth	2	1	1	0	2
Wound on girth	5	3	0	1	1
Wound on wither	1	1	1	0	0
Wound under tail	2	0	0	0	0
Eye	10	7	3	3	3
Nose	11	6	0	0	0
weakness of body	12	12	6	10	9
Neck	7	7	5	2	2
Beating	3	4	5	1	1
Stable	12	10	48	3	2
Feeding Pot	14	11	8	2	2
Saddle/harness	7	6	1	2	2
Cart	11	7	1	1	1
Farriery	3	3	2	1	1
Hair clipping	10	8	3	1	1
Colic	1	0	0	0	0
Respiratory Problem	16	4	1	1	2
Tetanus	0	0	0	1	0
TOTAL	160	117	55	40	37

चित्र 4.13अ (बायें) पशु मालिकवार मुद्दे
चित्र 4.13 ब (दायें) पूरे गांव/समूह को प्रभावित करने वाले मुद्दे

पशु मालिक के मुद्दों का विश्लेशण					
पशु मालिक का नाम	दिनांक के अनुसार मुद्दे				
	16/01/09	16/02/09	16/03/09	16/04/09	16/05/09
हरपाल	8	3	0	4	2
जयपाल	8	2	1	1	0
अमीचन्द	9	1	1	1	1
सत्यपाल	8	5	3	4	2
गोपाल	4	4	3	3	3
राजपाल	9	7	2	5	5
जीवनलाल	6	3	1	1	1
बृजेन्द्र	8	7	0	0	1
विनय	9	6	4	4	4
महेन्द्र	12	12	2	1	1
शीसराम	12	8	3	1	1
मनीपाल	12	9	4	3	4
हेमराज	15	15	10	5	6
पथीराम	13	11	7	3	2
छोटे	14	11	10	1	1
गुड्डू	13	13	4	3	3
कुल	**160**	**117**	**55**	**40**	**37**

चित्र 4.13 (अ) का हिन्दी रूपान्तरण गाँव समूह के मुद्दे

पशु कल्याण मुद्दे का विश्लेशण (समूह/गाव)					
सम्बन्धित मुद्ददे	दिनांक के अनुसार मुद्दों की संख्या				
	16/01/09	**16/02/09**	**16/03/09**	**16/04/09**	**16/05/09**
शरीर	10	9	3	2	2
पांव में सूजन	0	0	1	0	1
लंगडापन	2	1	1	1	0
जख्म–खुर	5	4	0	1	1
खुर टूटा	2	0	0	1	1
खुर की सफाई	14	11	5	6	5
मुंह में जख्म	2	1	1	0	2
छाती पर जख्म	5	3	0	1	1
पीठ पर जख्म	1	1	1	0	0
पूंछ के नीचे जख्म	2	0	0	0	0
आंख	10	7	3	3	3
नाक	11	6	0	0	0
शरीर की कमजोरी	12	12	6	10	9
गला	7	7	5	2	2
पीटना	3	4	5	1	1
थान	12	10	18	3	2
खोर	14	11	8	2	2
काठी	7	6	1	2	2
बुग्गी	11	7	1	1	1
नालबन्दी	3	3	2	1	1
बाल कटा	10	8	3	1	1
पेटदर्द	1	0	0	0	0
सांस की समस्या	16	4	1	1	2
टिटेनस	0	0	0	1	0
कुल	**160**	**117**	**55**	**40**	**31**

चित्र 4.13 (ब) का हिन्दी रूपान्तरण गाँ/समूह के मुद्दे

पशु कल्याण सुधार के प्रभाव से जीवन पर प्रभाव

इसके द्वारा पशु कल्याण सुधार से समूह के जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों को समझा जा सकता है। यह महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे पशु मालिक को पशु कल्याण के लिए प्रोत्साहन मिलता है। आप पहले और बाद में विश्लेषण (टी–11) मैपिंग (टी–1) और मौसमी विश्लेषण (टी–6) करके प्रभाव व बदलाव की स्थिति देख व जान सकते हैं।

हमारे कार्यक्रम के उदाहरणों में निम्न शामिल हैं–

- पशु की बीमारी के लिए खर्च कम होना और पैसे की बचत से घर के बजट में सुधार होना।
- समूह सदस्यों के बीच एकता होना।
- सेवा प्रदाताओं, संसाधन विक्रेताओं, निर्णय करने वालों से सामूहिक लेन–देन की क्षमता का विकास होता है।
- कम ब्याज दर पर उधार की व्यवस्था
- आत्मविश्वास में बढ़ोतरी होती है।
- समाज में पहचान बढ़ती है।
- आकस्मिक पैसों की आवश्यकता की पूर्ति होती है एवं
- बच्चों की शिक्षा के लिए पैसे की पूर्ति होती है।

'महत्वपूर्ण बदलाव' तकनीक (देखें सिद्धान्त बॉक्स–9) के द्वारा लोग साथ मिलकर अपनी सफलता की कहानी और कार्यक्षेत्र का साक्ष्य तैयार कर सकते हैं। मूल्यांकन टूल द्वारा हम देख सकते हैं कि समूह किस प्रकार अपनी सफलता को देखते हैं।

इस अवस्था का एक महत्वपूर्ण आशय है सीखों की साझेदारी

- पूरे गांव या समुदाय जिसमें पशु मालिक रहते हैं में।
- या किसी कार्यशाला में जिसमें विभिन्न समूह या समुदाय एक साथ आते हैं चाहे वे एक ही जनपद या क्षेत्र के हो या अलग–अलग। इसके द्वारा अन्य लोगों को भी प्रोत्साहन मिलता है और वे भी गतिविधियों में भाग लेते हैं और कार्यक्रम का फैलाव बढ़ता है।

सिद्धान्त बाक्स– 9 महत्वपूर्ण बदलाव तकनीक

महत्वपूर्ण बदलाव तकनीक का विकास बांग्लादेश के रिक डेविस द्वारा 1996 में किया गया था। यह एक पशु मालिक द्वारा किये जाने वाले मॉनिटरिंग और मूल्यांकन का प्रकार है। यह तकनीक पहले से ही तय मानकों के आधार पर नहीं की जाती है। इसके बदले पशु मालिक अपने पशुओं में बदलाव और जीवन में बदलाव की कहानी एकत्रित करते हैं। अपने क्रिया के द्वारा आये बदलाव को नापते हैं।

कहानी पशु मालिकों के द्वारा पढ़ी जाती हैं, चर्चा की जाती है और समूह के द्वारा ही विश्लेषित की जाती है। जिससे पशु मालिक अपनी सफलता और की गयी क्रिया को अनुभव करता है।

एक महत्वर्पूण बदलाव की कहानी, भारत

गांव के एक हमारा गांव गधा मालिक द्वारा बताया गया। फरीदपुर वर्ष 2008 में अलीगढ़ जनपद अश्व कल्याण इकाई द्वारा चुना गया। सुगमकर्ता द्वारा हमें अश्व कल्याण के लिए संवेदनशील करने हेतु विभिन्न अभ्यास किया गया। एक साल बाद नवम्बर में टीम द्वारा बताया गया कि किस प्रकार आप स्वयं पशु कल्याण बदलाव को नाप सकते हैं। 27 दिसम्बर को हमने एक अभ्यास किया जिसे सामूहिक कल्याण आवश्यकता आंकलन कहते हैं। हम गांव में सभी पशु मालिक के घर गये और ट्रैफिक लाइट रंग द्वारा सभी पशुओं को नम्बर दिया। अभ्यास के द्वारा हमें अपने रख–रखाव में कमी दिखाई दी। इसके बाद हमारे बीच गम्भीर चर्चा हुई क्योंकि कुछ लोग इससे सहमत नहीं थे। अलीगढ़ टीम ने हमें बताया कि यह अभ्यास इसलिए नहीं है कि किसी की कमी को निकाला जाये बल्कि इसलिए है कि आप प्रोत्साहित होकर सामूहिक क्रिया करके कमी को दूर करें।

24 फरवरी 2009 को हमने दूसरा पशु कल्याण आवश्यकता आंकलन भ्रमण किया और पाया कि 22 पशु में से केवल एक पशु 100 प्रतिशत स्कोर (नम्बर) पाया । तीसरा भ्रमण जुलाई में किया गया और पाया गया इस बार 22 में से 7 पशु 100 प्रतिशत स्कोर पाये। इस समय अलीगढ टीम ने और मालिकों को भी प्रोत्साहित किया और पशु कल्याण में निरन्तरता बनायें रखने का आग्रह किया।

एक दूसरे गधे मालिक ने यह कहकर अलीगढ़ टीम का आभार व्यक्त किया कि 'अगर हम एक साथ मेहनत करें तो निश्चित ही अश्व कल्याण में सुधार होगा।'

स्रोत– मानिटरिंग और मूल्यांकन टीम, भारत 2009.

महत्वपूर्ण बदलाव तकनीक की विस्तृत जानकारी के लिए देखें –डेवीज आर0 एवं डार्ट, जे0 (2005) द मोस्ट सिगनीफिकेन्ट चेन्ज टेकनीक ए गाइड टू यूजwww. mande.co.uk/docs/msc guide.htm (online)

केस स्टडी–I – सहभागी कल्याण आवश्यकता आंकलन की पुनरावृत्ति और कारण प्रभाव द्वारा गम्भीर मुद्दों का समाधान

श्रोत– गिरिजेश पाण्डे, न्यूपब्लिक स्कूल, अमर भट्टा उन्नाव जनपद, भारत जून 2009

भट्टे पर गधे एवं खच्चर के कल्याण में सुधार हमेशा ही एक चुनौती है क्योंकि कार्य करने वाले पशु और मालिक भट्टे पर केवल नवम्बर से जून तक ही रहते हैं। सहभागी पशु कल्याण आंकलन गांव के समूह में सफल होता है। लेकिन प्रक्रिया में समय लगता है और भट्टे का समय कम होता है। इसलिए टीम शुरू में इसका प्रयोग भट्टे पर करने में हिचकिचा रही थी।

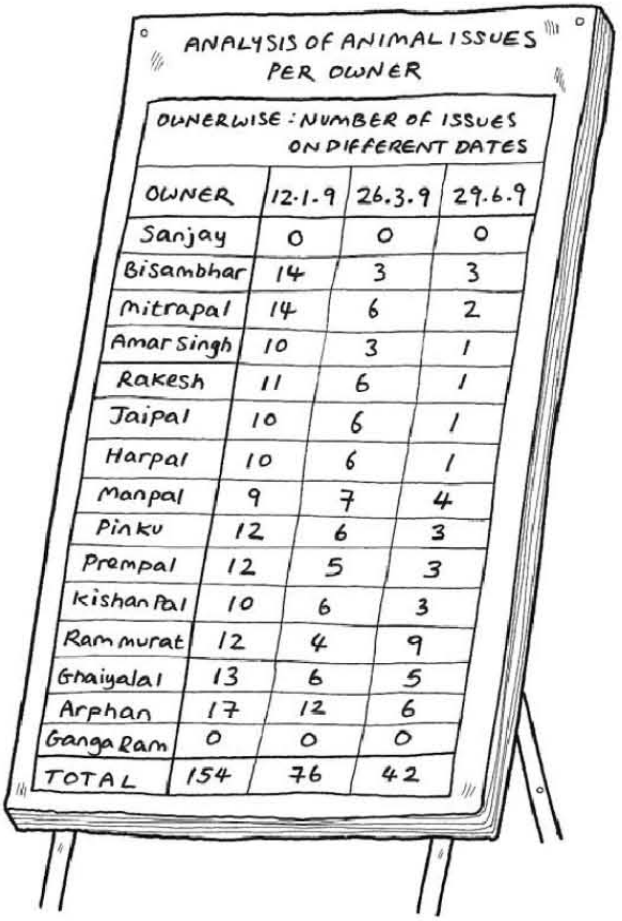

ANALYSIS OF ANIMAL ISSUES PER OWNER

OWNERWISE : NUMBER OF ISSUES ON DIFFERENT DATES

OWNER	12.1.9	26.3.9	29.6.9
Sanjay	0	0	0
Bisambhar	14	3	3
Mitrapal	14	6	2
Amar Singh	10	3	1
Rakesh	11	6	1
Jaipal	10	6	1
Harpal	10	6	1
Manpal	9	7	4
Pinku	12	6	3
Prempal	12	5	3
Kishanpal	10	6	3
Ram murat	12	4	9
Ghaiyalal	13	6	5
Arphan	17	12	6
Ganga Ram	0	0	0
TOTAL	154	76	42

इसके बाद भी हमने इस प्रक्रिया की शुरूआत जनवरी 2009 में अमर भट्टे पर किया। मोहम्मद खलीफ, समुदाय कार्यकर्ता ने भट्टे पर रह रहे 16 पशु मालिकों को समझाने के लिए कई बार भ्रमण किया। उन्होने सबसे पहले वहां समूह बनाकर आपस में बचत योजना लागू की। जिससे सभी पशुमालिक एक साथ आ सके। उसके बाद उन्होंने सामूहिक दाना चारा खरीदने और सदस्यों में बांटने का निश्चय किया।

इसके पश्चात मोहम्मद ने (यदि मैं घोड़ा होता) टूल का प्रयोग करके समूह को पशु कल्याण के 28 मानक निकालने में सहायता किया। पहला पशु भ्रमण (टी–22) जनवरी 2009 में हुआ। समूह द्वारा सभी पशुओं को एक साथ जांचा गया और उन्होंने ट्रैफिक लाइट स्कोरिंग चार्ट बनाया। सभी मानकों को एक साथ देखकर अमर भट्टे के पशुमालिकों को मुख्य मुद्दा के बारे में पता चला।

चित्र 4.14 अ. अमर भट्ठे में पशु कल्याण आंकलन का प्रत्येक पशु मालिकों द्वारा विश्लेषण

इसके बाद समूह ने गम्भीर मुद्दे का कारण प्रभाव विश्लेषण (टी–2) किया जैसे आंख की समस्या, पीठ और छाती का जख्म, खोर की सफाई, बुग्गी का संतुलन। मोहम्मद खलीफ के सहयोग से समूह ने एक कार्ययोजना तैयार की। सभी सदस्यों ने एक दूसरे पर विश्वास करते हुए सहमत कार्ययोजना के अनुसार क्रिया शुरू की।

अगली बैठक मार्च में हुई और दूसरी बार पशु भ्रमण किया गया और समूह ने पाया कि 154 मुद्दों मे 76 कल्याण मुद्दे अभी भी बाकी है। उन्होंने अपनी कार्ययोजना पर क्रिया चालू रखी और तीन महीने बाद फिर से जून में पशु भ्रमण किया। और इस बार कई मुद्दों का समाधान हो गया लेकिन 42 समस्या अभी भी शेष रह गयी।

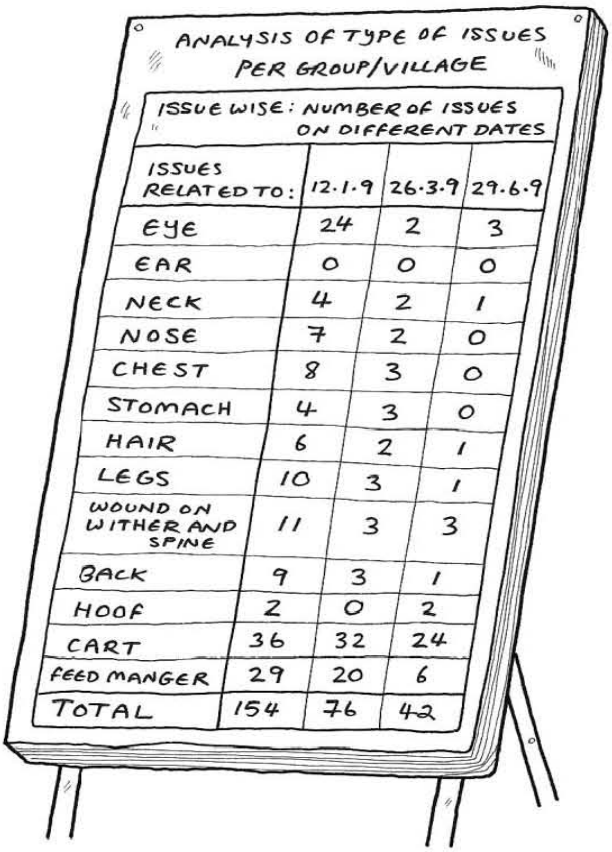

ANALYSIS OF TYPE OF ISSUES PER GROUP/VILLAGE

ISSUE WISE: NUMBER OF ISSUES ON DIFFERENT DATES

ISSUES RELATED TO:	12.1.9	26.3.9	29.6.9
EYE	24	2	3
EAR	0	0	0
NECK	4	2	1
NOSE	7	2	0
CHEST	8	3	0
STOMACH	4	3	0
HAIR	6	2	1
LEGS	10	3	1
WOUND ON WITHER AND SPINE	11	3	3
BACK	9	3	1
HOOF	2	0	2
CART	36	32	24
FEED MANGER	29	20	6
TOTAL	154	76	42

चित्र 4.14 ब. अमर भट्ठे में सम्पूर्ण पशु कल्याण आंकलन

चार्ट का दो सार बनाया गया एक पशुमालिक के अनुसार कल्याण मुद्दों की संख्या (चित्र 14 अ) दूसरा चार्ट कुल समूह के मुद्दों (चित्र 14 ब) को दर्शा रहा है। समूह ने एक विशेष बैठक आयोजित करके दोनों चार्टों का विश्लेषण करके बाकी मुद्दों पर क्रिया करने का निर्णय लिया ।

बैठक के दौरान समूह ने गहराई से कारण विश्लेषण किया। विशेषतया जख्म का। इसके द्वारा कुछ कारण आये जो पहले विश्लेषण में नहीं आया था। इसलिए इन कारणों के समाधान हेतु नयी योजना तैयार की गई। सभी पशुमालिकों ने जून में भट्टा पर काम समाप्त होने के बाद कार्य योजना के अनुसार कार्य करने की सहमति बनायी। कुछ पशुमालिकों ने अपने गांव में समूह बनाकर इस प्रक्रिया को जारी रखा।

सीखने की प्रक्रिया के द्वारा पशुमालिकों को सुगम करना, गंभीर और खतरनांक मुद्दों के समाधान हेतु आवश्यक था। जो पहले समूह क्रिया द्वारा नहीं हुआ था। दबाव और प्रतिक्रिया द्वारा सुगम करने से समस्याओं का गहराई से विश्लेषण हुआ और पशु कल्याण में सुधार हुआ जो पहले एक चुनौती लग रहा था।

चरण 6. 2 नियमित सहयोग से क्रमिक वापसी

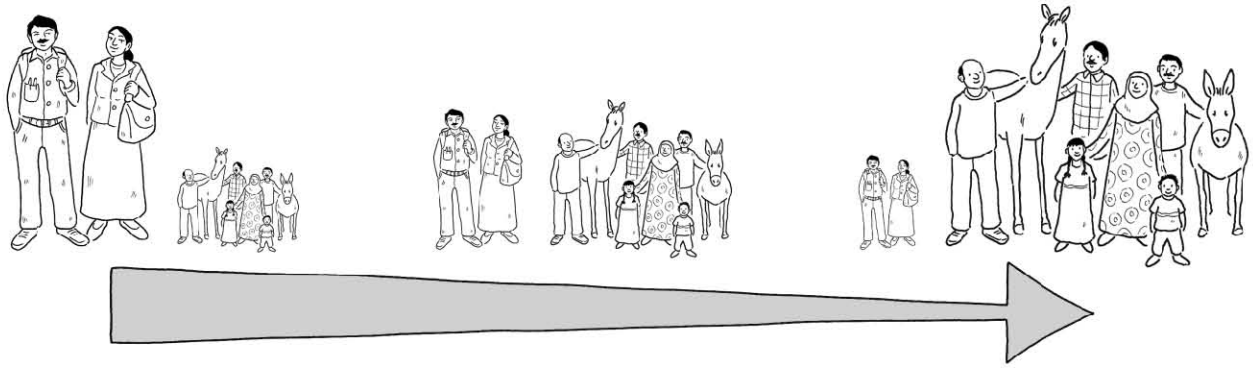

इस चरण का उद्देश्य यह है कि समूह के सदस्य इस बात से सहमत हो जाएं कि वो बिना किसी बाह्य सहायता/सहयोग के ही अपनी समूह की बैठक करते रहेंगे एवं अश्व कल्याण के सतत् सुधार की दिशा में कार्य करते रहेंगे।

उपरोक्त विषय पर सहमति बनाने हेतु सावधानी पूर्वक नियोजन करने की आवश्यकता होगी। योजना–निर्माण के दौरान, अश्व समूहों द्वारा व्यक्तिगत एवं सामूहिक कार्य अश्व कल्याण के प्रति, दूसरे अन्य समूह एवं स्थानीय संस्थाओं से समन्वय कर संयुक्त रूप से अश्व कल्याण सम्बंधी विषय पर कार्य हो, इस पर विस्तृत चर्चा की जानी चाहिए। उदाहरणार्थ, स्थानीय सेवा/संसाधन प्रदाताओं से समूहों का जुड़ाव।

बाह्य सहायतित सहयोग के संदर्भ में, पशु कल्याण में सतत् सुधार हेतु सघन प्रयास किये जाने की आवश्यकता है। वापसी का अभिप्राय यह है कि संस्था के सहयोग से गठित समूहों को आजीवन सहयोग, वापसी के उपरान्त संस्था कर्मियों द्वारा प्रदान नहीं किया जायेगा। गांव से वापसी किये जाने के उपरान्त सहयोगी संस्था से जुड़ाव/सम्बंध बनाए रखना अनिवार्य है। वापसी रणनीति के अन्तर्गत यह भी आवश्यक है कि समूह द्वारा आयोजित वार्षिक आम सभा बैठक एवं समूहों को अन्य सामुदायिक संस्थाओं/संकुल से सम्पर्क/जुड़ाव इत्यादि गतिविधियों में मार्गदर्शन/सहयोग सहयोगी संस्था द्वारा दिया जायेगा (संदर्भ : अध्याय–5)

चयनित क्षेत्र से वापसी के सम्बन्ध में निर्णय उस स्थिति में लिया जाए जब ''अश्व कल्याण समूह'' के सदस्यों की सक्षमता/आत्मनिर्भरता अश्व कल्याण के प्रति विकसित हो चुकी हो। समूह सदस्यों का ''अश्व कल्याण कार्यों/कार्यक्रमों को आगे बढ़ाने हेतु दृढ़ इच्छाशक्ति हो। वापसी के संदर्भ में निर्णय निम्नांकित विषयों पर बहस/चर्चा पर आधारित हो :–

1– समूह/समुदाय द्वारा स्वंय मूल्यांकन के आधार पर (संदर्भः अवस्था–6 चरण 6.1 स्वमूल्यांकण) पूर्व में बनाए गए ''सामुदायिक कार्य योजना'' का पुर्ननिर्माण/संशोधन करने के समय ही ब्रुक द्वारा दिए जा रहे नियमित सहयोग/सहायता के सम्बंध में चर्चा बहस आरंभ की जा सकती है।ब्रुक संस्था द्वारा धीरे–धीरे क्षेत्र भ्रमण/सहायता में कमी की जानी चाहिए ताकि समूह आत्म निर्भर बन सकें एवं बिना किसी बाह्य सहायता/सहयोग के अपना कार्य स्वंय कर सकें। सामुदायिक कार्य योजना ''संशोधन के समय'' पशु कल्याण सम्बंधी विभिन्न मुददों की पहचान/चिन्हांकन हेतु पशु मालिक, संस्था कर्मियों से सहयोग की अपेक्षा कर सकते है। इसी दौरान, ''आपसी सहमति'' का प्रारूप भी तैयार होना चाहिए जिसके अन्तर्गत इस बात का उल्लेख हो कि किस प्रकार से ''अश्व कल्याण सम्बंधी मुद्दों का समाधान निर्धारित समयावधि के अंदर किए जाने हेतु आपस में सहमति होना चाहिए। साथ ही, सहमति बनाते समय'' वापसी–सम्बंधी मानकों का भी

उल्लेख स्पष्ट रूप से होना चाहिए एवं समूह/समुदाय द्वारा इसका अक्षरशः अनुपालन हेतु सर्वसम्मति से निर्णय होना चाहिए।

2– या समूह सदस्यों द्वारा ''आत्म निर्भरता'' पर 'स्वं–ऑकलन' करने का अवसर प्रदान किया जाए। इस हेतु, आपस में अच्छी बहस/चर्चा करनी चाहिए। बहस/चर्चा के उपरान्त तय किए गये बिन्दुओं/विषय/सामग्री इत्यदि की सूची तैयार कर इसका उपयोग आत्मनिर्भरता की दिशा में हुए प्रगति को मापने हेतु किया जा सकता है।

''वापसी प्रक्रिया'' की समाप्ति होने पर समूह/समुदाय द्वारा किए गए ऐसे अनुरोध/मांगों पर संस्था कर्मियो को सहयोग प्रदान करना चाहिए, जिसे समूह/समुदाय कर पाने में असमर्थ है।

यद्यपि समूह के लिए ''स्व–मूल्य आंकलन'' अभ्यास करना सहज है। परन्तु इस अभ्यास प्रक्रिया को अश्व कल्याण समूह के संकुल द्वारा बेहतर/प्रभावी ढंग से किया जा सकता है। (देखें केस स्टडी जे) अश्व कल्याण समूहों को जोड़कर संकुल गठन व विकास करने से अश्व कल्याण के क्षेत्र मे, आशातीत सुधार होगा वापसी होने के बाद भी (समूह से संकुल गठन प्रक्रिया का विस्तृत विवरण अध्याय–5 में)

प्रक्रिया बॉक्स–7 अश्व मित्र/अश्वप्रेमी

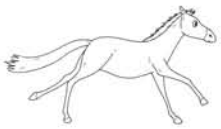

ग्राम स्तर पर गठित अश्व कल्याण समूह के सदस्यों द्वारा अश्व मित्र/प्रेमी का चयन किया जाता है। ऐसे व्यक्ति प्रायः अश्व कल्याण सम्बंधी गतिविधियों/कार्यक्रमों में अहम भूमिका निभाते हैं। इनकी अश्व कल्याण के प्रति विशेष रूचि होती है। अश्वमित्र, समूह एवं सेवा प्रदाताओं (यथा, एलएचपी, नालबंद एवं चारा विक्रेता) के बीच सम्बंध/समन्वय बनाने में एक महत्वपूर्ण कड़ी का काम करते हैं। सहयोगी संस्था/एजेंसी द्वारा अश्व मित्रों को प्राथमिक उपचार विषय पर प्रशिक्षण दिया जाता है अश्वमित्रों द्वारा समूह को अश्व कल्याण के प्रति जागरूक भी किया जाता है। साथ ही, ''सहभागी कल्याण आवश्यकता आंकलन'' (PWNA) प्रक्रिया को समूह–सदस्यों की सहभागिता से पूर्ण भी कराता है।

एक लम्बे समय के अन्तराल के बाद अश्वमित्रों द्वारा सामुदायिक प्रेरक की ही भांति अहम् भूमिका/जिम्मेदारी निभायी जायेगी। ऐसी स्थिति में, गांव से वापसी करना काफी सहज होगा।

केस स्टडी J – बाहय संस्था द्वारा ''समूह के माध्यम से'' दिए जा रहे नियमित सहयोग से ''वापसी'' हेतु निर्धारित मानकों पर सहमति

स्रोतः कमलेश गुहा एवं देव कांडपाल, ब्रुक इण्डिया, सहारनपुर, उ0प्र0 जून 2009)

सहारनपुर जनपद के फकीराबाद गांव में ब्रुक इण्डिया पिछले 3 वर्षों से गांव के अश्व मालिकों के साथ मिलकर कार्य कर रही है। अश्व मालिकों ने एक अश्व कल्याण समूह का गठन किया है। समूह द्वारा ग्राम स्तरीय कार्य योजना बनाकर इसका सफलता पूर्वक क्रियान्वयन भी किया गया है। समूह द्वारा समूहिक रूप से कई सारे अश्व कल्याण सम्बंधी मुददों का समाधान भी किया गया है एवं अन्य पशु मालिकों को प्रेरित कर उनका भी समूह का गठन करवाया है। फकीराबाद गांव में अन्य सफलताओं की झलकियां निम्नवत हैं :–

- समूह का एक सदस्य अश्व मित्र है। ये समूह एवं स्थानीय सेवा प्रदाताओं व अन्य बाहय संस्थाओं से समन्वय/सम्पर्क बनाने में अहम भूमिका निभाते हैं।
- अश्व सम्बंधी गम्भीर बीमारियों की संख्या में कमी आई है।
- अश्व मालिक अश्व सम्बंधी कई मुददों के समाधान करने में सक्षम हो गए हैं। सामूहिक रूप से, टेटनस बीमारी से पशुओं का बचाव के उद्देश्य से टीकाकरण करवाया है।
- इनके समूह में कुल बचत रू0 50,000/– है। इस धनराशि का उपयोग पशु मालिकों ने पशुधारकों की छोटी मोटी आवश्यकताओं, इलाज, टीकाकरण बुग्गी एवं साज की मरम्मत इत्यादि हेतु किया है। साथ ही इस धनराशि का उपयोग घरेलू आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु भी किया गया है।
- समूह के सदस्य बिना किसी बाह्य सहायता के स्वंय ही समूह की बैठक भी कर लेते हैं।
- अभी हाल ही में हुए समूह की मासिक बैठक में ब्रुक टीम को भी भागीदारी करने हेतु आमंत्रण समूह द्वारा भेजा गया था। बैठक में, समूह ने ब्रुक संस्था से सहयोग हटाने पर चर्चा किया। गांव से वापसी होने की स्थिति में, ब्रुक संस्था को दूसरे गांवों में कार्य आरंभ करने में काफी मदद एवं सहुलियत होगी। समूह सदस्यों ने यह प्रश्न पूछा कि हम एवं अन्य समूह कैसे जान/समझ पायेंगे कि हम पूर्णतः वापसी के लिए तैयार हैं।
- फकीराबाद के समूह संचालक ने इस प्रश्न को जिला स्तरीय कार्यशाला में उपस्थित समूह प्रतिनिधियों के समक्ष रखा। समूह प्रतिनिधियों ने इस बात पर चर्चा किया कि कैसे ब्रुक की अनुपस्थिति में भी अश्व कल्याण सम्बंधी गतिविधियाँ/कार्यक्रम संतत चलती रहें। कार्यशाला में उपस्थित समूह प्रतिनिधियों ने सुगमकर्ता की सहायता से ''वापसी सम्बंधी मानकों की सूची'' तैयार की। (देखें: सिद्वान्त बॉक्स–10) तैयार की गई मानकों की सूची यह इंगित करती है कि किसी गांव या समूह में वापसी से पूर्व किन –किन व्यवस्थाएं/स्थितियां की मौजूदगी होनी चाहिए? मानक तय करने के उपरान्त समूह प्रतिनिधियों ने प्रत्येक गांवों में ब्रुक कर्मियों के साथ भ्रमण करने का निर्णय लिया। भ्रमण के दौरान, समूह के दौरान, समूह प्रतिनिधियों ने तय किए गये मानकों के आधार पर समूहों के दस्तावेज/रिकार्ड इत्यादि का आंकलन किया। इन लोगों ने भ्रमण के दौरान, स्थानीय सेवा प्रदाताओं से भी सम्पर्क किया।

प्रत्येक भ्रमण के समय, एक–एक मानक पर स्कोरिंग भी की गई। तदोपरान्त आए परिणामों पर समूह के सदस्यों के समक्ष चर्चा कर आम सहमति बनाई गई। समस्त गांवों के भ्रमण करने के उपरान्त, बैठक बुलाया गया, जिसमें यह निर्णय लिया गया कि कौनसा गांव वापसी के लिए पूर्णतः तैयार है। 5 गांवों का चयन हुआ जिसमें से फकीराबाद गांव भी शामिल था। यह भी तय किया गया कि गांव से वापसी की प्रक्रिया'' धीरे धीरे होगी ताकि ब्रुक कर्मियों द्वारा कभी–कभी गांव का भ्रमण किया जाऐगा। जब भी समूह को सहयोग/मदद की आवश्यकता पड़ेगी, ब्रुक सदस्य से सहयोग/सहायता की मांग कर सकता है।

सिद्धान्त बॉक्स–10 गांव से वापसी हेतु निर्धारित मानक

1. समूह क्रियाशील हों, नियमित बैठकें होती हों। मुद्दों/समस्याओं का सामूहिक रूप से निस्तारण हो रहा हो एवं इनकी कार्यवाही भी गांव के रजिस्टर में लिखी जाती हो।
2. समुदाय द्वारा नियमित रूप से पुराने एवं नये खरीदे गए पशुओं को टेटनस का टीका लगवाया जाता हो।
3. अश्व मित्र द्वारा अश्व कल्याण के प्रति सक्रिय भूमिका निभाई जाती हो एंव अश्व मालिक अपने कार्यों को पूर्ण आत्मविश्वास से करते हों।
4. पशु मालिकों को अश्व सम्बंधी प्रमुख बीमारियाँ, इनके कारण व बचाव के बारे में अच्छी ज्ञान व समझ हो।
5. गाँव स्तर पर पशुओं के इलाज हेतु स्थानीय सेवा प्रदाताओं की उपलब्धता हो एवं समुदाय द्वारा इनके सेवाओं का लाभ भी लिया जाता हो। इलाज के अलावा, समय–समय पर बीमार पशुओं को इलाज में स्थानीय सेवा प्रदाताओं से सलाह/परामर्श भी दिया जाता हो।
6. गांव स्तर पर प्राथमिक उपचार किट की व्यवस्था, स्थानीय दवा विक्रेता का सहयोग सुनिश्चित हो एवं इसका जयादा से ज्यादा उपयोग पशु मालिक अपने पशुओं के इलाज/उपचार के लिए करते हों।
7. नालबंद, बाल काटने वाला एवं चारा विक्रेता की स्थानीय स्तर पर उपलब्धता हो एवं उनके द्वारा पशु मालिकों के इच्छानुसार ही सेवा प्रदान किया जाता हो।
8. परिवार के पुरूष, महिला एवं बच्चे अश्व कल्याण सम्बंधी विभिन्न मुद्दों के प्रति सजग हों एवं अश्व के सतत् कल्याण से सम्बंधित कार्यक्रमों/गतिविधियों में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करते हों।
9. पशुओं की आवश्यकताओं (यथा, चारा एवं बीमारियों से बचाव इत्यादि) की पूर्ति हेतु तैयार कार्य योजना के अनुसार सामूहिक कार्य'' समूह द्वारा किया जा रहा हो। किए गए सामूहिक कार्यो का उल्लेख समूह के रजिस्टर में हो।
10. मौसम के अनुसार, पशुओं के रहने एवं छाया की समुचित व्यवस्था हो ।
11. पशुओं को समय–समय पर पिलाने हेतु साफ एवं स्वच्छ पानी की व्यवस्था अनिवार्य रूप से होनी चाहिए।
12. गांव में थान एवं खोर की अच्छी तरह से सफाई होती हो। पशुओं को पर्याप्त मात्रा में गुणवत्ता युक्त खाद्य पदार्थ (जैसे भिगा हुआ भूसी इत्यादि) मिलता हो।
13. समूह सदस्यों को बुग्गी के संतुलन एवं साज के रख–रखाव इत्यादि के बारे में अच्छी जानकारी हो।,
14. पशु एवं पशु मालिक एक दूसरे के प्रति दोस्ताना व्यवहार रखते हों।
15. पशु मे होने वाले जख्म को रोकने हेतु प्रभावी ढंग से प्रबंधन व समुचित देखभाल होना चाहिए ताकि पशुओं पर जख्मों की संख्या बहुत कम या बिल्कुल भी न हो।
16. पशुओं में लंगड़ापन की बीमारी नहीं हो।
17. पशुओं की नियमित रूप से खुरेरा–मालिश व आंखों की अच्छी तरह सफाई होती हो।
18. पशुओं पर दागने का निशान न हो।
19. नर पशुओं के लिंग बंधे हुए नहीं होने चाहिए ताकि पशु को अपने सामान्य व्यवहार प्रदर्शित करने में कोई भी कठिनाई/परेशानी न हो।
20. कम उम्र के पशुओं से कार्य नहीं लिया जाता हो।

अध्याय 5
अश्व–कल्याण की ओर बढते कदम

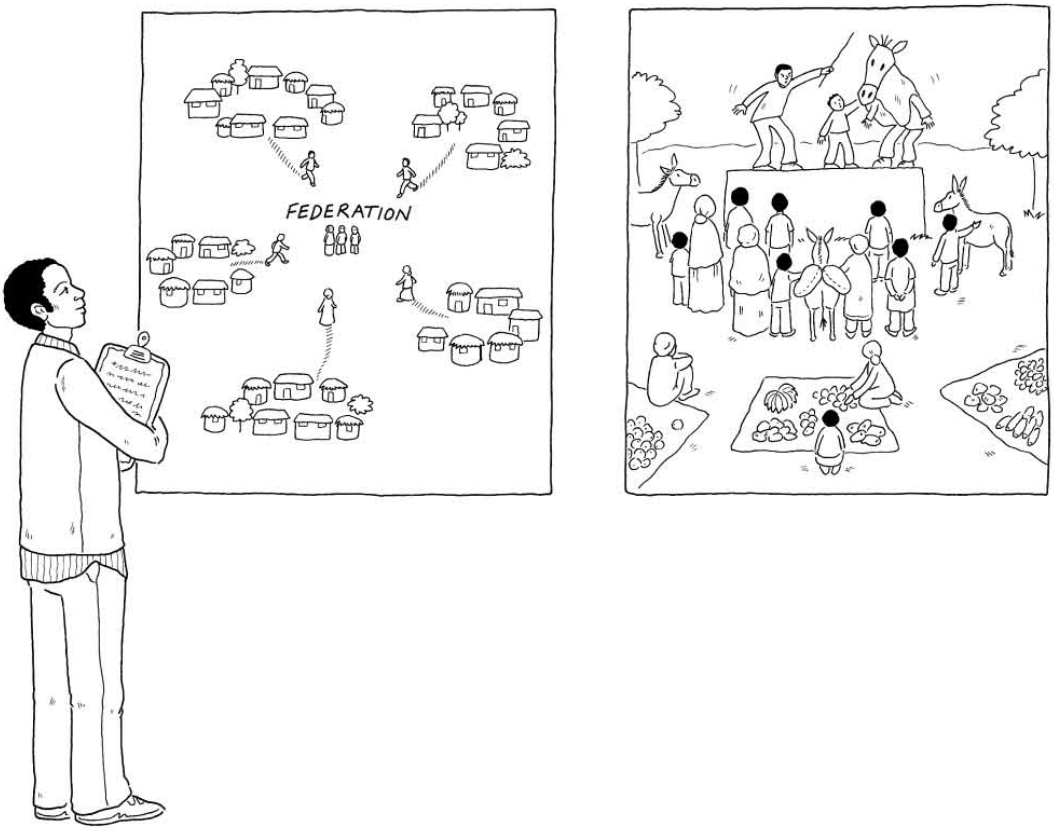

इस अध्याय से क्या सीख मिलेगी?

यहाँ सीखने व समझने को मिलेगा कि कैसे सामूहिक क्रियाकलापों/गतिविधियों से अश्व कल्याण कार्यक्रम/गतिविधियों को प्रभावी ढंग से बढाया जा सकता है? समूह /संगठन के माध्यम से कैसे अपने कार्यों को बेहतर/प्रभावी बनाया जा सकता है? (संदर्भःअध्यायः4)

अध्याय–4 के पहले भाग से यह समझ बनी कि कैसे समूह/संगठनों के माध्यम से अश्व कल्याण संबंधी कार्य प्रभावी ढंग से किये जा सकते हैं? दूसरे भाग में समुदाय को अश्व कल्याण के प्रति जागरूकता पैदा करने के विभिन्न तरीकों का उल्लेख मिलता है। हमारे अनुभव से यह सिद्ध हुआ है कि उक्त तरीकों का प्रभाव स्थायी अश्व कल्याण के लिए कम है। समूह/संगठन बनाकर समूहिक कार्य के द्वारा स्थायी अश्व कल्याण लिए किया जा सकता है।

उपरोक्त तरीके से समाज के विभिन्न वर्गों का अश्व कल्याण के प्रति रूचि पैदा करने के लिए काफी उपयोगी है। समुदाय तक अपने उद्देश्यों को पहुंचाने हेतु विभिन्न तकनीकों/तरीकों से सम्बंधित अनगिनत जानकारियां/उदाहरण सहजता से उपलब्ध हैं। इस अध्याय में उन्हीं तरीकों/तकनीकों का उल्लेख किया जा रहा है जिसे हम अपने कार्यक्षेत्र में अश्व कल्याण के लिए कर रहे हैं। इस अध्याय मे दी गयी जानकारियों का प्रयोग/उपयोग पाठक/सुगमकर्ता अपने कार्यक्षेत्र में कर सकते हैं।

संघ–गठन कैसे?

प्रथम चरण

उद्देश्य

संघ की अवधारणा पर समझ विकसित करना एवं संघ का गठन (0–6 माह)

प्रक्रिया

- प्रक्रिया के स्वरूप पर बैठक एवं चर्चा के द्वारा आम राय/सहमति बनाना।
- प्रशिक्षण एवं कार्यशाला के द्वारा संघ से जुड़े प्रत्येक सदस्यों की भूमिका के बारे में समझ विकसित करना।
- संघ गठन हेतु समूह प्रतिनिधियों का बेहतर तरीके से चुनाव करना।
- समूह प्रतिनिधियों की सहभागिता से संघ के लक्ष्य व उद्देश्यों को निर्धारित करना।
- संघ की नियमावली कार्य प्रणाली जिम्मेदारियों का बंटवारा एवं संघ की कार्ययोजना का निर्माण करना।

द्वितीय चरण

क्षमता संवर्द्धन/विकास (6–12 माह)

उद्देश्य

नवगठित संघ के प्रभावी संचालन व विकास हेतु संघ से जुड़े पदाधिकारियों/प्रतिनिधियों का क्षमता विकास एवं नियमित सहयोग व मार्गदर्शन प्रदान करना।

प्रक्रिया

- संघ के सदस्यों द्वारा बनायी गई कार्य योजना को संघ के निर्धारित लक्ष्य/उद्देश्यों के अनुरूप ही क्रियान्वित करने हेतु सक्षम बनाना।
- संघ सदस्यों को कार्य–योजना के सफल क्रियान्वयन, मुद्दों का निपटारा जैसे, संगठनात्मक विकास एवं अन्य वांछित विषयों पर क्षमता विकास करना।
- संघ सदस्यों को अपने ही जैसी सोच वाली संगठनों/संस्थाओं से जुड़ाव/सम्पर्क स्थापित करने हेतु प्रेरित करना।
- अभिलेखों का बेहतर रख–रखाव वित्तीय प्रबंधन एवं अनुश्रवण पर विशेष ध्यान रखना।

तृतीय चरणः–

संघ को सशक्त एवं आत्मनिर्भर बनाना (12–24 माह)

उददेश्य

सशक्त व आत्मनिर्भर संघ बनाने के उपरान्त संस्था कर्मियों द्वारा प्रत्यक्ष सहयोग एवं मार्गदर्शन से धीरे–धीरे क्रमिक वापसी करना।

प्रक्रिया

- संघ की बैठक एक निश्चित अवधि/अन्तराल पर करना।
- संघ के सुदृढीकरण हेतु सहयोग एवं मार्गदर्शन प्रदान करना।
- सहभागी मूल्यांकन एवं पुर्नःकार्य योजना का निर्माण
- कभी–कभी संघ के कार्यक्रमों एवं बैठकों में भाग लेना ताकि यह मालूम हो सके कि संगठन सही दिशा में कार्य कर रही है या नहीं। आपातकालीन/विषम परिस्थितियों में संस्था कर्मियों द्वारा संघ को सहायता प्रदान करना।

टेबल– 5.1 अश्व कल्याण समूहों का संघ–गठन प्रक्रिया।

अश्व कल्याण समूहों का संघ गठित करने की दिशा में सहयोग

संस्था कर्मियों द्वारा गांव से वापसी के उपरान्त भी अश्वों का सतत कल्याण होता रहे इसके लिए यह आवश्यक है कि "अश्व मालिकों का अपना संघ/संगठन गांव या ब्लाक स्तर पर हो।

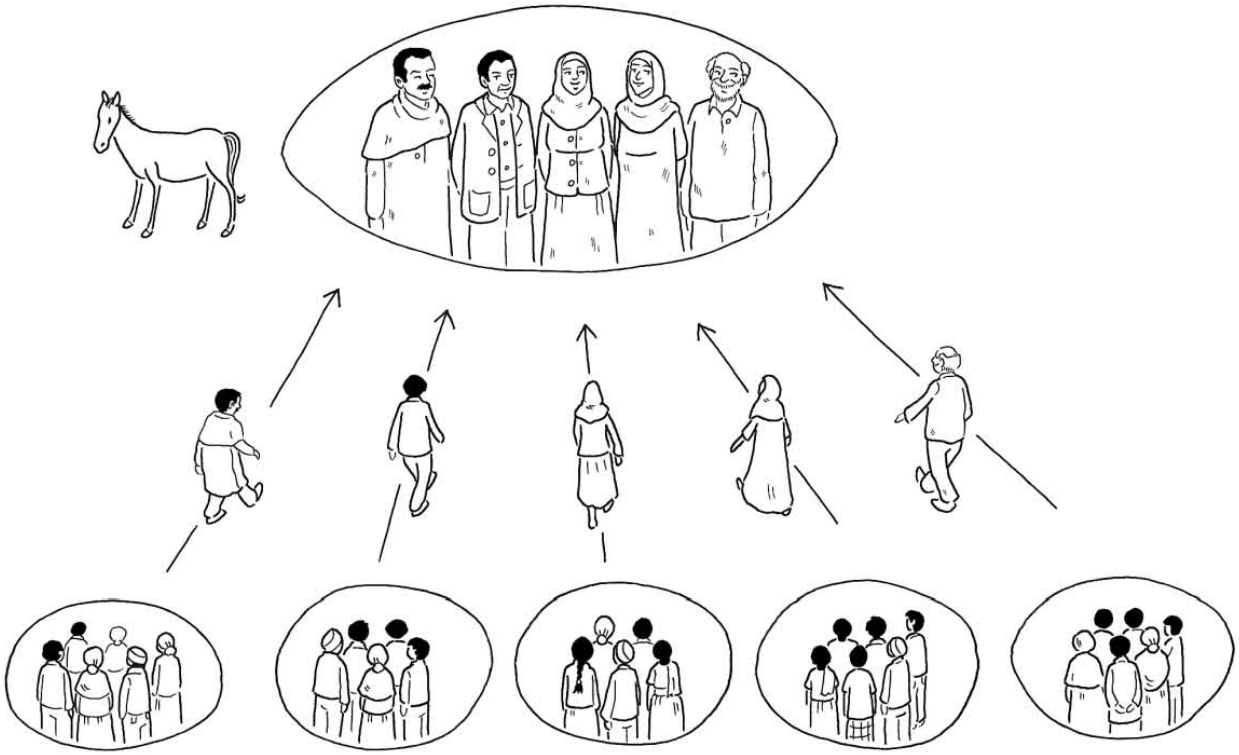

अश्व कल्याण समूहों का संघ क्यों?

- वैसे कार्य जो एक (सूमह) की क्षमता से बाहर है, संघ के द्वारा बड़ी आसानी से किया जा सकता है। उदाहरणार्थ, स्थानीय प्रशासन/संस्थाओं से समन्वय स्थापित कर अश्व कल्याण हेतु संसाधन एवं सेवाओं की व्यवस्था सुनिश्चित करवाना जैसे पशुओं को स्वच्छ जल आपूर्ति, छाया एवं आश्रय की व्यवस्था के लिए।
- जानकारी/अनुभवों के आदान प्रदान का मंच

  संघ से जुड़े समूह सदस्यों को यह मंच मिला है जिसका उपयोग ये पशु सम्बंधी जानकारियों/अनुभवों को एक दूसरे के साथ बांटने के लिए कर सकते हैं। सभी एक दूसरे से सीख कर नयी जानकारियों को समुदाय के दूसरे सदस्यों/पशु मालिकों को बांट सकते हैं। जिसका अच्छा प्रभाव अश्व कल्याण कार्यों/कार्यक्रमों पर पड़ेगा। स्थानीय स्तर पर विकसित 'समाचार पत्रिका' का उपयोग जानकारियों को पहुचांने/देने के लिए किया जा सकता है।
- संघ ऐसे मंच के रूप में विकसित होगा जिसके अन्तर्गत कई सारे सेवा प्रदाताओं का जुड़ाव स्थायी रूप से होगा। आगे चलकर समाज में संघ की अच्छी छवि अश्व कल्याण के प्रति अच्छा कार्य करने वाली संगठन के रूप में बनेगी। संघ से सेवा प्रदाताओं के रूप में अश्व समूह, स्वंयसंगठन, स्थानीय प्रशासन, नेता समाज सुधारक इत्यादि का जुड़ाव होगा।

संघ का गठन कैसे?

संघ गठन की प्रक्रिया टेबल सं0–5.1 मे दी गई है शुरूआत में सक्रिय अश्व समूह सदस्यों के साथ वार्ता कर संघ बनाने के सम्भावित अवसरों की तलाश करना।

शुरूआत में बड़े संगठन/संघ का संचालन करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। अतः यह बेहतर है कि 05–15 अश्व समूहों को मिलाकर एक संघ का गठन किया जाए। स्थायी संघ की आधार शिला क्रियाशील समूह है। (सिद्धान्त बक्सा–10)

जब समूह इच्छुक है एवं अश्व कल्याण के प्रति कार्य करने के लिए प्रेरित है तब संघ प्रभावी रूप से विकसित होगा एवं सक्रिय रूप से कार्य भी करेगा। संकुल की प्रारंभिक बैठकों में समूह अपने दो या तीन प्रतिनिधियों को बैठक में भाग लेने हेतु भेज सकता है। शुरूआत में मासिक बैठकों में समूह द्वारा अश्व कल्याण के क्षेत्र में किए गए उपलब्धियों एवं पशु पर हो रहे सकारात्मक प्रभाव पर चर्चा करना चाहिए। बैठक की अवधि, एक या दो दिन तक हो सकती है। यह अवधि, समूह सदस्यों की उपसमिति पर निर्भर करती है। ऐसे कार्यक्रम में अश्व पर आधारित प्रतियोगिता का आयोजन भी किया जा सकता है। बाद में, संकुल की बैठक, प्रत्येक त्रैमास में किया जा सकता है।

संघ की त्रैमासिक बैठकों में सांस्कृतिक कार्यक्रम, कम्यूनिटी–ड्रामा/नाटक इत्यादि भी शामिल करना चाहिए, जिससे बैठक में उपस्थित सदस्यों/प्रतिभागियों की रूचि एवं उत्साह अश्व कल्याण के प्रति बनी रहे।

संघ की बैठक करने के लिए निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना चाहिए :–

- बैठक के लिए कम से कम दूरी एवं समय जिन समूह प्रतिनिधियों के हिस्से में आ रहा हो उन्हें प्राथमिकता दी जानी चाहिए।
- समूह में आपस में समानता होनी चाहिए।
- समान मुद्दें/उद्देश्यों पर कार्य करने हेतु समस्त समूहों की सहमति।

सिद्धान्त बॉक्स–11 संघ के अच्छे सदस्य बनाने हेतु आवश्यक शर्तें

- समूह की बैठकें नियमित रूप से होती है एवं समूह के समस्त सदस्यों द्वारा बैठक में भाग लिया जाता हो।
- सामूहिक/साझा कोष सभी सदस्यों के अंशदान द्वारा सृजित किया गया हो एवं इसका उपयोग सामूहिक एवं व्यक्तिगत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए किया जाता हो।
- समूह की नियमावली व शर्तें अच्छी तरह से बनायी गयी हो एवं इसका पालन समूह के सदस्यों द्वारा अच्छी तरह से किया जा रहा हो।
- समूह के पदाधिकारियो का समयबद्ध तरीके से परिवर्तन भी हो रहा हो।

संघ को अपनी पूंजी को निरन्तर बढ़ाना है। इस पूंजी का उपयोग संघ द्वारा तैयार की गई कार्य योजना के क्रियान्वयन के लिए करना है। जैसे संकुल के अभिलेखों का रख–रखाव, स्थानीय प्रशासन के साथ बैठक करना, आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों/गतिविधियों में होने वाले छोटी–मोटी खर्चो का वहन संघ द्वारा किया जायेगा। संघ हेतु पूंजी में बढोतरी निम्नांकित तरीकों से किया जा सकता है:–

- सदस्यता शुल्क (एक बार) जुड़ने वाली समूह से अनिवार्य रूप से लेना।
- जुड़े समूहों से प्रत्येक माह में अंशदान लिया जाना।

- संघ स्तर पर तय किए गए उद्देश्यों की पूर्ति हेतु अन्य बाहरी संस्थाओं द्वारा की गई भागीदारी के क्रम में स्वैच्छिक दान व अंशदान एकत्र करना।
- संघ द्वारा आय जनित गतिविधियों द्वारा प्राप्त आय द्वारा भी संघ की पूंजी में बढ़ोतरी होगी।
- संकुल/संघ की नियमावली का उल्लंघन करने वाले सदस्यों से दंड के रूप मे धनराशि लिया जाना । उदाहरण–बैठक में अनुपस्थित सदस्यों द्वारा दंड।

अश्व कल्याण समूहों द्वारा किए जा रहे गतिवधियों एवं समूहों की वर्तमान स्थिति इत्यादि के बारे में संघ द्वारा अनुश्रवण कर समूह की स्थिति अच्छी प्रकार जानी जा सकेगी। समूह के सदृढ़ीकरण हेतु सुझाव, प्रशिक्षण एवं एक्सपोजर विजिट का आयोजन किया जा सकेगा। जो गतिवधियां/कार्य स्वंय समूह करना चाहती है उस पर संघ द्वारा किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं किया जाऐगा। यह बेहतर होगा कि समूह के सदस्य, अश्व कल्याण सम्बंधी मुद्दों पर केन्द्रित होकर कार्य करें।

केस स्टडीः K – गांव स्तर पर "अश्व कल्याण" पर आधारित प्रतियोगिता का आयोजन

स्रोतः देव कांडपाल, दिनेश मोहिते, ब्रुक इण्डिया, सहारनपुर अक्टूबर, 2008

अश्व कल्याण ईकाई सहारनपुर द्वारा 30 गांवों में अश्व मालिकों के साथ मिलकर कार्य किया जा रहा है। पहले वर्ष में, ब्रुक संस्था के कर्मियों द्वार चयनित गांवों में "अश्व कल्याण समूह" का गठन करने के लिए अश्व मालिकों को प्रेरित किय गया। "अश्व कल्याण समूह" के गठन के उपरान्त, समूह सदस्यों द्वारा अश्व कल्याण के प्रति सामूहिक कार्य किये जाने लगे।

प्रत्येक गांव में, विकसित "अश्व कल्याण समूह" मुददों पर आधारित कार्य योजनाओं का क्रियान्यन करने लगे। अनुश्रवण संयुक्त रूप से समूह सदस्य एंव ब्रुक के कर्मियों द्वारा किया गया। शुरूआत के 2 वर्षो में प्रत्येक गांव में ब्रुक द्वारा किए जा रहे कार्यों की प्रगति संतोषप्रद रही।

नियोजित तरीके से कार्य योजना के क्रियान्वयन के फलस्वरूप गांवों में पशुओं के कल्याण में काफी सकारात्मक सुधार आया। प्रत्येक गांव में अश्व मित्र तैयार किए गए जो कि समूह एवं सेवाप्रदाताओं के बीच की एक महत्वपूर्ण कड़ी है अश्व कल्याण में इनकी भूमिका काफी महत्वपूर्ण है।

इसके बाद यह निर्णय लिया गया कि जितने भी समूह गांव स्तर पर गठित हुए हैं सब ने साथ मिलकर एक बैठक का आयोजन किया। इस बैठक में प्रत्येक समूह से 2–3 प्रतिनिधि को बुलाया गया। बैठक में, समूहों द्वारा किए जा रहे अच्छे कार्यों के बदले पुरस्कार देने पर भी निर्णय लिया गया। यह तय हुआ कि जिन समूहों ने सबसे बढ़िया कार्य किया है वे बधाई के पात्र हैं। पुरस्कार देने के लिए अश्व मालिकों ने जो मानक/आधार तय किए वो निम्नवत हैं:–

1– समूह की बचत एवं आन्तरिक लेन–देन की स्थिति। 2– सामूहिक कार्य/प्रयास द्वारा अश्व कल्याण सम्बंधी मुद्दों का समाधान 3– कितने पशुओं का टीकाकरण करवाया? 4– पशुओं की बीमारी में कमी (गांव स्तर पर)
5– अन्य पशु मालिकों को प्रेरित कर कितने नये समूहों का गठन करवाया?

छः माह बाद समूह–प्रतिनिधि दोबारा इक्ट्ठा हुए। इस बार की बैठक में पिछली बार तय किए गए 'मानकों' के आधार पर ग्रामवार परिणाम क्या–क्या हैं, इस बार चर्चा की गई। परिणाम जानने के उपरान्त पुरस्कार वितरण कार्यक्रम भी हुआ। ऐसी अपनाई गई प्रक्रिया की समाप्ति के उपरान्त गांवों के बीच प्रतिस्पर्धा का भाव विकसित हुआ। प्रतिस्पर्धा का माहौल बनने से पशु कल्याण के क्षेत्र में साकारात्मक प्रभाव पड़ा। पशु मालिकों द्वारा अश्व कल्याण सम्बंधी मुद्दों के समाधान के लिए "सामूहिक प्रयास"/कार्य बड़ी तेजी से समूह/गांव स्तर एवं बाहर भी शुरू होने लगे।

वर्तमान में उक्त प्रकार की बैठकें सिर्फ सहारनपुर में ही नहीं हो रही है बल्कि अन्य जनपदों में पशु मालिकों द्वारा भी आयोजित की जा रही है। पशु मालिकों द्वारा अश्व कल्याण विषय पर लोक गीत, नाटक इत्यादि तैयार किये जा रहे हैं एवं इनकी प्रस्तुति/मंचन इस तरह के बैठकों/कार्यक्रमों में किया जाता है। साथ ही सक्रिय व्यक्तियों को चिन्हित कर एवं पुरस्कार देकर सम्मानित भी किया जाता है। ऐसी प्रतियोगिताओं के आयोजन से अश्व कल्याण सम्बंधी गतिविधियों /कार्यक्रमों को बढावा मिलता है, साथ ही अश्व मालिकों का संशक्तिकरण भी होता है। सभी के लिए सीखने–सिखाने का अवसर मिलता है। ऐसे कार्यक्रमों से पशु मालिक उत्साहित होकर अश्व कल्याण की दिशा में ठोस कार्य करने हेतु प्रेरित होते हैं।

समुदाय तक अपनी पहुंच बढाने के तरीके

अध्याय–4 में सुझाए गए तरीकों से हमेशा पशु मालिकों/समूहों के साथ कार्य करना संभव नहीं हो पाता है। ग्रामीण क्षेत्रों में पशु मालिकों की आबादी बिखराव में होने के कारण सक्रिय समूह/संगठन बनाने में काफी मेहनत करनी पड़ती है। ठीक इसके विपरीत शहरी क्षेत्रों में आबादी अधिक होने पर सभी के साथ एक साथ काम करने मे कठिनई आती है। कई बार व्यवहारिक कारणों की वजह से पशुमालिकों से भी सम्पर्क करने में कठिनाई आती है।

मण्डी एवं तांगा स्टैण्ड पर पशुमालिकों एवं तांगे पर सफर करने वाले व्यक्तियों के साथ कार्य करना एक चुनौती है। ऐसे स्थानों पर पशु मालिकों के पास समय का अभाव होता है एवं वो अपने कार्यों में अधिक व्यस्त रहते हैं, जिसकी वजह से समूह–गठन करना एक चुनौती है।

ऐसे स्थानों पर जागरूकता सम्बंधी कार्यक्रम काफी प्रभावी साबित होते हैं। साधारणतः ऐसे तरीके, समूह/संगठन द्वारा किए जा रहे सामुदायिक/सामूहिक कार्य की तुलना में कम प्रभावी होते हैं क्योंकि व्यक्ति विशेष के ज्ञान, जागरूकता एवं सोच में बदलाव नहीं हो पाता है।

अचयनित क्षेत्रों के लिए ऐसे तरीके काफी उपयोगी साबित होते हैं। (संदर्भः– अध्याय–3 क्रियान्वयन कैसे पर निर्णय?)

'दीवार लेखन' विधि द्वारा भी समुदाय तक पहुंच बनाई जाती हैं। समूह/संगठन बनाने के समय समस्त पशुमालिकों से सम्पर्क नहीं हो पाता है क्योंकि पशु मालिक की आबादी बिखराव में होती है। पशु–कल्याण सम्बंधी विषयों पर पशुमालिकों को जागरूक करने के लिए पशु मालिक स्वंय ही "पशु कल्याण सम्बंधी" नई–जानकारियां एवं संदेश दीवारों में लिखता है।

केन्या में, गधों के कल्याण से सम्बंधित काफी समस्याएं हैं। ऐसी स्थिति में, सुधार के लिए अश्व सम्बंधी कल्याणकारी संदेशों का समाज में व्यापक, प्रचार–प्रसार के लिए रेडियो का प्रयोग किया जा रहा है। (केस स्टडी–L)

इस अध्याय में दिए गए तरीकों का उपयोग 'समूह गठन' के दौरान भी किया जा सकता है। (संदर्भ– अध्याय–4)

प्रकिया बॉक्स–8: समुदाय तक पहुंच बनाने हेतु महत्वपूर्ण सिद्धान्त

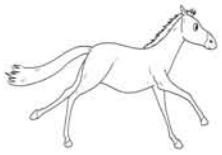

- योजनाबद्ध तरीकों से संदेशों का प्रचार/प्रसार करना।
- समुदाय की सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित करना।
- विभिन्न तरीकों/माध्यमों का प्रयोग/उपयोग हो ताकि समुदाय बेहिचक अपनी व अपने पशुओं से सम्बंधित मुददों पर बात कह सकें एवं चर्चा कर सकें।
- किसी भी धारणा के आधार पर संप्रेषण नहीं करना चाहिए। व्यक्तियों की जानकारी का स्तर कैसा है? इस विषय पर अच्छी तरह विश्लेषण करना आवश्यक है। (उदाहरणः अभ्यास गैप विश्लेषण T-21)
- स्थानीय भाषा में संदेश/साहित्य विकसित करना चाहिए।
- संदेश तैयार करने के समय पशु मालिकों की भागीदारी निश्चित रूप से होनी चाहिए।
- पशु मालिकों के द्वारा अनुश्रवण एवं स्पष्ट सुझाव इस विषय पर मिलनी चाहिए ताकि इसमें सुधार किया जा सकता है।

समुदाय तक पहुंच बनाने हेतु विकसित योजना के अन्तर्गत निम्नांकित बिन्दुओं का समावेश होना चाहिए,

क– आप क्या संदेश देना पंसद करेंगे?

ख– आप किसे संदेश देना पसंद करेंगे?

ग– आप कैसे संदेश देना पंसद करेंगे?

''सम्प्रेषण–योजना'' किसी भी परियोजना/कार्यक्रम के सफल क्रियान्वयन में अहम भूमिका अदा करती है। परियोजना के क्रियान्वयन–रणनीति के अनुसार ही संम्प्रेषण–योजना/रणनीति बनाई जानी चाहिए।

यद्यपि पशु मालिकों से सीमित अवसरों पर ही मिलन हो पाता है। फिर भी उन तक संदेश पहुंचाने हेतु सुझाये से गए ''तरीकों'' का उपयोग करना लाभकारी होगा। द्विपक्षीय संचार, चर्चा/बहस इत्यादि से बेहतर अवसर/माहौल तैयार होता है। जहां तक हो सके, पशु मालिक एवं उनके परिवार के सदस्य तथा अन्य व्यक्तियों के साथ भी पशु कल्याण सम्बंधी अनुभवों को बांटना चाहिए ताकि नई–नई जानकारियां एक दूसरे को मिल पायेगी।

एक पक्षीय संचार माध्यम जैसे पोस्टर, साहित्य, पुस्तिका इत्यादि के उपयोग से अश्व कल्याण हेतु व्यवहार परिवर्तन करना आसान नहीं हैं। व्यवहार परिवर्तन उस स्थिति में होगा जब व्यक्ति द्वारा पूरी लगन, सक्रियता एवं रूचि के सथ कार्यक्रम में भाग लिया जाता हो। उपरोक्त सुझाये गए तरीकों/माध्यमो से सहभागी प्रक्रियाओं के बेहतर इस्तेमाल के लिए भी अवसर सृजित होंगे।

नीचे दिए गए दृश्यों में आप किसे ज्यादा प्रभावी महसूस करते हैं, और क्यों? सीमित अवसरों पर समुदाय से मिल पाने की स्थिति में,

''अनुश्रवण एवं मूल्यांकन'' सम्बंधी कार्य करना चुनौतीपूर्ण है। ऐसी स्थिति में, निम्नांकित तरीके सुझाए गए हैं:–

1– संदेश के प्रचार–प्रसार हेतु प्रयुक्त माध्यमों/तरीकों पर समुदाय द्वारा सुझाव ली जानी चाहिए।

2– संदेश के प्रचार–प्रसार हेतु कम्यूनिटी ड्रामा एवं अन्य सशक्त माध्यमों का प्रयोग/उपयोग समुदाय के रूचि के अनुसार होना चाहिए।

3– रेडियो एवं टेलीविजन के माध्यम से प्रसारित/प्रचारित संदेशों का मूल्यांकन किया जाना चाहिए। समुदाय से इनके प्रभाव पर लिखित या मौखिक रूप से राय व सुझाव प्राप्त किये जाने चाहिए।

4– ऐसे इच्छुक पशुमालिक जो कि इस प्रकार के कार्यक्रमों में रूचि रखते हैं उनका एक अलग से समूह तैयार किया जाये। इनके ज्ञान व अनुभव का लाभ ''संप्रेषण–रणनीति'' विकसित करने के लिए किया जाना चाहिए। इनके द्वारा इस विषय पर दिए गए सुझाव एवं अपेक्षाओं को ''अनुश्रवण एवं मूल्यांकन'' हेतु मानक समझा जाये।

5– संदेश के प्रचार–प्रसार हेतु प्रयुक्त साहित्य, तरीकों इत्यादि पर सीधे पशु मालिकों से गांव/क्षेत्र स्तर पर ही संचार माध्यमों के प्रभाव का निष्पक्ष आंकलन किया जाना चाहिए। प्रभाव आंकलन करते समय पशु मालिकों के अलावा अन्य समुदाय के व्यक्तियों से भी पूछना चाहिए तभी मूल्यांकन प्रभावी ढंग से पूर्ण हो पायेगा।

समुदाय तक संदेश पहुंचाने हेतु विभिन्न मंच/अवसरः–

समुदाय तक संदेश पहुंचाने हेतु कई सारे मंच/अवसरों की तलाश करनी चाहिए। क्षेत्र स्तर पर, उपयुक्त मंच/अवसर की पहचान कर संदेश समुदाय तक पहुंचाना चाहिए। समुदाय के साथ नई–नई जानकारियां जो उनके लिए उपयोगी है को बताना चाहिए।

अपने क्षेत्र में, इस दिशा में किए जा रहे प्रयास को नीचे दिए गए चित्र के माध्यम से दर्शाया गया है।

मण्डी एवं टांगा–स्थल पर संदेशाों का प्रचार–प्रसार

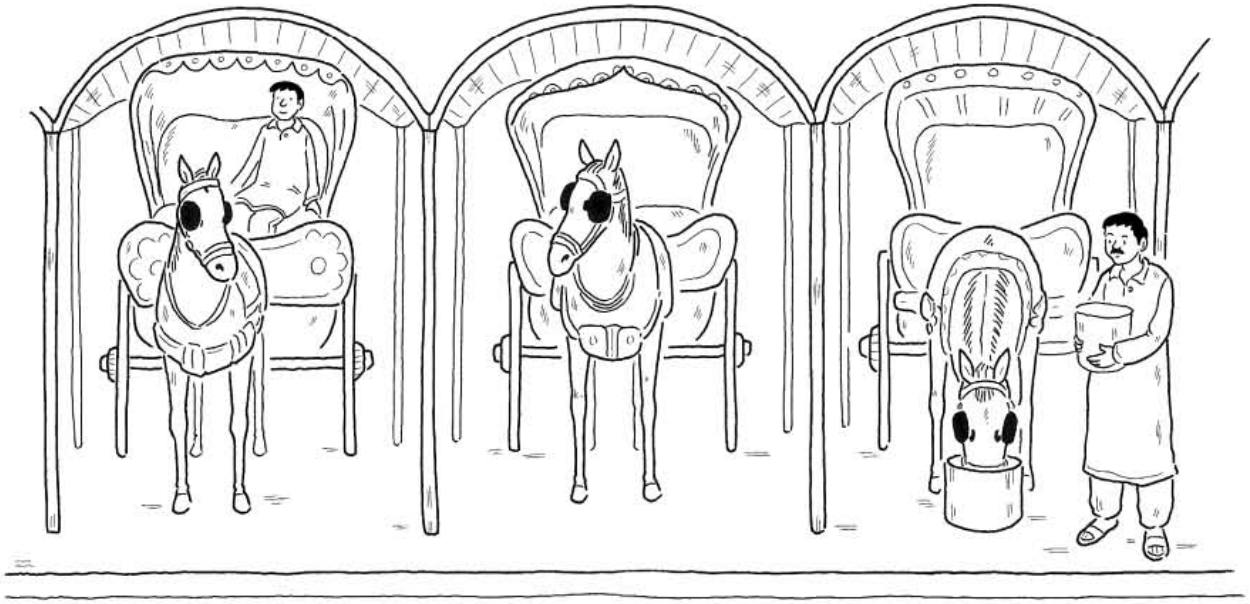

विशेष आयोजनः–

कुछ देशों में, धार्मिक कार्यक्रम एवं त्यौहार के समय पशुओं से कार्य लिया जाता है। ऐसे समय में, अश्व कल्याण सम्बंधी जागरूकता हेतु प्रचार–प्रसार के लिए स्थानीय संस्था/प्रशासन के साथ मिलकर शिविर या प्रदर्शनी कार्यक्रम लगाया जा सकता है। उदाहरणार्थ– सरकारी पशुपालन विभाग से समन्वय कर अश्व स्वास्थ्य एवं कल्याण के क्षेत्र में प्रचार–प्रसार किया जा सकता है।

विभिन्न समुदायों का रोजमर्रा कार्यों हेतु एक स्थान पर एकत्रित होना

जैसेः– पानी पीने की व्यवस्था हेतु "प्याऊ" पर एकत्रित होना।

प्रदर्शनी, मेला एवं क्षेत्र विकासः–

मेले एवं प्रदर्शनी का उपयोग बेहतर ढंग से पशु मालिक, व्यापारियों, सरकारी कर्मियों एवं समाज के अन्य व्यक्तियों का भी अश्व कल्याण के विभिन्न पहलूओं पर संदेश के माध्यम से जागरूक करने के लिए किया जा सकता है।

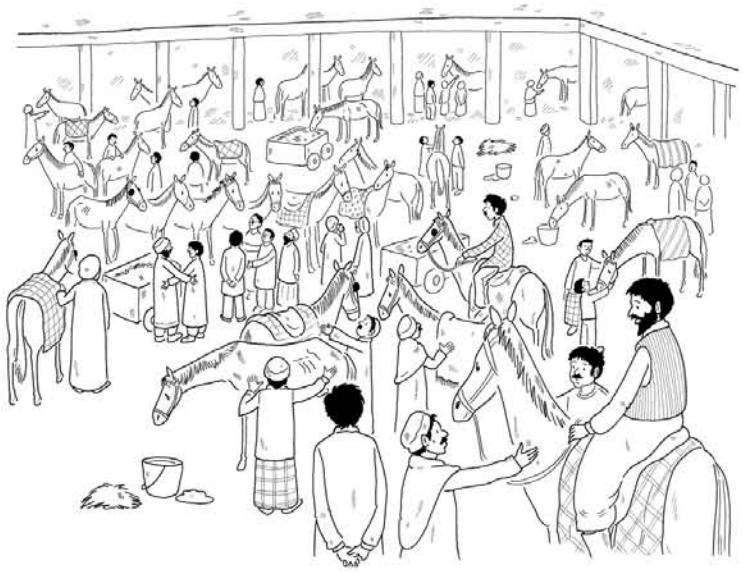

अश्व कल्याण सम्बंधी प्रचार–प्रसार हेतु संप्रेषण विधियांः–

अश्व कल्याण सम्बंधी संदेशों के प्रचार–प्रसार हेतु संप्रेषण की कई सारी विधियों का उपयोग किया जा सकता है। अपने कार्यक्षेत्र एवं समुदाय की स्थिति विश्लेषण के अनुसार ही सबसे उपयुक्त विधि का उपयोग संदेश पहुंचाने के लिए करना श्रेयस्कर होगा।

जब तक संभव हो, पशु मालिकों को ही संदेश के विकास एवं इसके प्रचार–प्रसार के लिए ज्यादा से ज्यादा मौका देना चाहिए। उपरोक्त परिप्रेक्ष्य में यहां पर समस्त विधियों के बारे में विस्तृत वर्णन करना संभव नहीं है। इस सम्बन्ध में अधिक जानकारी के लिए पुस्तक के अन्तिम खंड में दिए गए "रिफरेन्स–सूची" की मदद लें।

अश्व पर आधारित प्रतियोगिता का आयोजन

ऐसे कार्यक्रमों से अश्व मालिकों एवं अन्य व्यक्तियों जो अश्व से लाभान्वित होते हैं का अधिक से अधिक जुडाव अश्व कल्याण सम्बंधी कार्यों के प्रति होता है। ऐसे कार्यक्रम में समुदय की भागीदारी, अश्व कल्याण के आंकलन हेतु मानक तैयार करने एवं मानकों के आधार पर पशुओं का स्वास्थ्य परीक्षण करने के लिए होता है। स्वास्थ्य परीक्षण के उपरान्त अच्छे पशु एवं पशु मालिकों का चुनाव कर पुरस्कार देने के समय समुदाय की भागीदारी होती है। प्रतियोगिता का आयोजन गांव के स्तर पर या कई सारे गांव के बीच होता है (देखें केस स्टडी–के)

परम्परागत सांस्कृतिक गतिविधियॉं एवं ड्रामा (थियेटर फॉर डेवेलपमेन्ट) का आयोजन

ये ऐसे सबसे सशक्त माध्यम हैं जो समुदाय के लिए रूचिकर हैं तथा समुदाय द्वारा इसमें सक्रिय भागीदारी भी निभाई जाती है। उक्त माध्यम के अन्तर्गत लोक–गीत, नृत्य, कहानी, नुक्कड़ नाटक इत्यादि का अच्छा मिश्रण किया जाता है। ऐसे कार्यक्रमों से समुदाय पर अश्व कल्याण के प्रति रूचि एवं जानकारी बढ़ाई जाती है। समुदाय अश्व कल्याण के प्रति सामूहिक कार्य करने के लिए भी प्रेरित होते हैं।

नाटक के माध्यम से पशु मालिक, सेवा प्रदाताओं एवं अश्व द्वारा लाभानिवत व्यक्तियों को भी "अश्व कल्याण" कार्यक्रमों के प्रति निःस्वार्थ भाव से योगदान/भागीदारी करने के लिए प्रेरणा मिलती है। कुछ उदाहरण नीचे दिए गये हैं,

1– पाकिस्तान देश में, कूडा–इकट्ठा करने वाले व्यक्तियों को एक समूह है जिनने गधों के कल्याणार्थ प्रचार–प्रसार चित्र एवं संदेश बनाया है। इनके द्वारा बनाए गए "संदेशों एवं चित्रों" का प्रचार–प्रसार नाटक के माध्यम से कराया जा रहा है।

2– अश्व मालिकों द्वारा अश्व की स्थिति/व्यथा पर ''लोक–गीत एवं कविता'' तैयार की गई है। समूह की बैठकों में तैयार की गई लोक गीत एवं कविता गाकर सुनाई जाती है।

3– भारत एवं मिस्र में, स्थानीय लोगों के द्वारा गधों के हालात पर नुक्कड़ नाटक विकसित किया गया है। विकसित की गई नुक्कड़ नाटकों का मंचन बच्चों के द्वारा अश्व मेलों में किया जाता है।

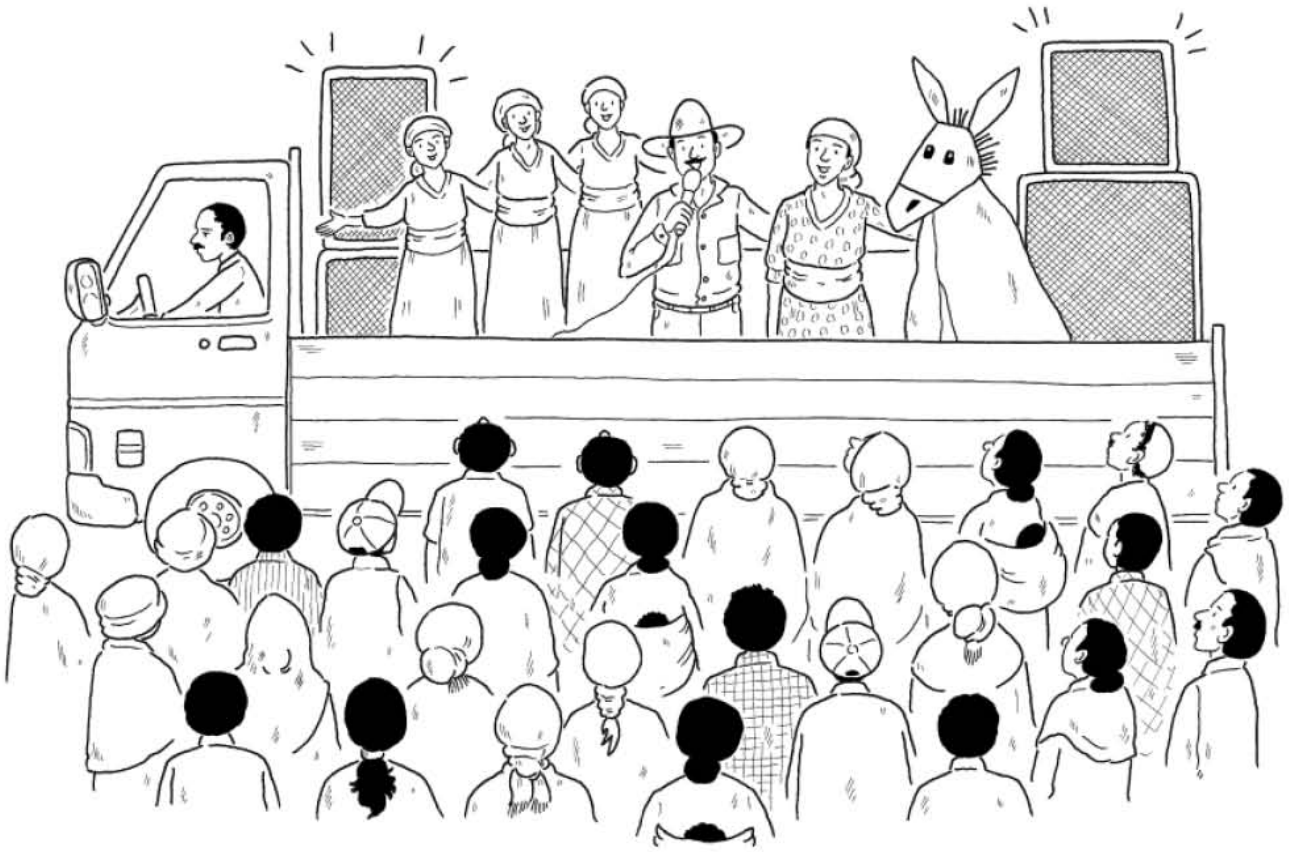

4– अश्व मेलों, क्षेत्र दिवसों एवं प्रदर्शनियों में पेशेवर समूह के द्वारा अश्व कल्याण सम्बंधी विषय पर नाटक का मंचन किया जाता है। इस माध्यम के उपयोग से, अश्व कल्याण विषय पर समुदाय को जागरूक किया जाता है।

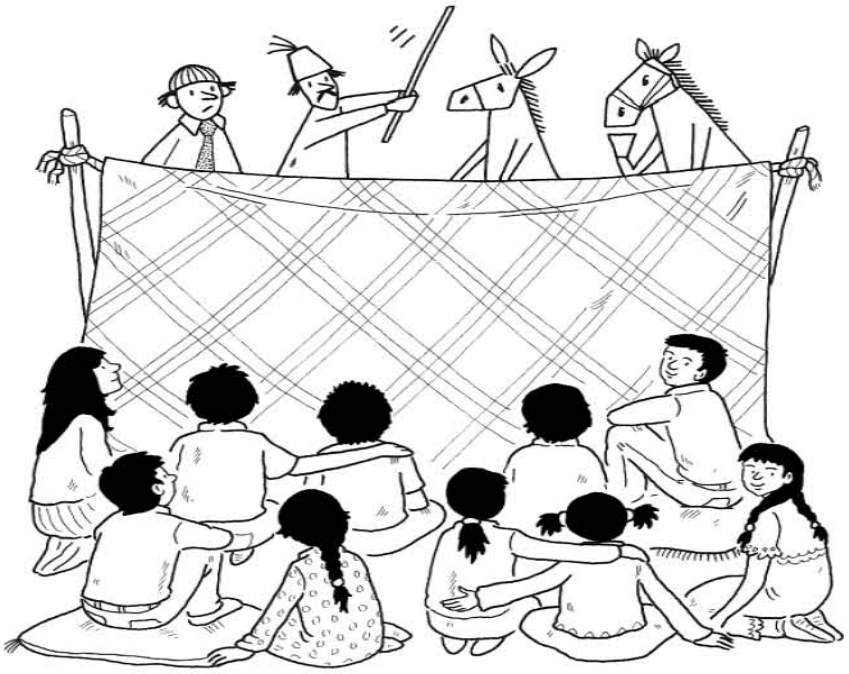

अनगिनत साहित्य एवं दस्तावेज ''सामुदायिक ड्रामा'' पर बड़ी ही आसानी से उपलब्ध है। इस संम्बन्ध में अधिक जानकारी हेतु इस पुस्तक के आखिरी खंड में सन्दर्भ–सूची की मद्द लें।

रिकार्डिंग किए गए संगीत/कहानी इत्यादि समुदाय के बीच काफी प्रचलित है, एवं इसका उपयोग बड़ी ही आसानी से कम खर्च एवं थोड़ी सी तकनीकी सहायता से अश्व कल्याण के प्रति जागरूकता करने के उद्देश्य से किया जा सकता है। पशु मालिकों द्वारा आयोजित समूह की बैठक, गोष्ठी/सभा, अश्व मेला एवं प्रदर्शनियों में ''रिकार्डिंग सामाग्रियों'' का उपयोग बडी संख्या में उपस्थित अश्वमालिकों/समुदाय को अश्व–कल्याण के प्रति जागरूकता करने के लिए किया जा सकता है। रिकॉर्डिंग कार्यक्रम/प्रोग्राम'' पशु स्वास्थ्य एवं प्रबंधन' एवं अन्य अश्व कल्याण सम्बंन्धी महत्वपूर्ण विषयों पर विकसित की जानी चाहिए। उक्त विषय पर रिकार्डिंग तैयार करने हेतु विशेषज्ञ एवं समुदाय की मदद आवश्यक रूप से लेना चाहिए। इससे सम्बंधित उदाहरण है समुदाय की सहभागिता से की गई ''विडियोग्राफी'' या पॉर्टीसिपेटरी विडियोग्राफी (पार्टीसिपेटरी–विडियोग्राफी पर अधिक जानकारी के लिए पुस्तक के अन्तिम खंड में दिए गए रिफरेन्स सूची का संदर्भ लें)

रेडियो की मदद से भी, अश्व कल्याण सम्बंधी संदेशों का प्रचार–प्रसार अश्व मालिकों एवं समाज के अन्य व्यक्तियों के लिए भी किया जा सकता है। वैसे व्यक्ति/पशुमालिक जो कि किसी बैठक या सभा में किसी कारणवश सम्मिलित/भाग नहीं ले पाते हैं, रेडियो के माध्यम से उन तक आसानी से पशु सम्बंधी संदेश पहुंचाया जा सकता है। (संदर्भः केस स्टडी–एल अश्व कल्याण कार्यक्रमों को बढ़ावा देने के लिए रेडियो का उपयोग)

''सामुदायिक रेडियो'' इस दिशा में एक नई पहल है, जिसके अंतर्गत समुदाय द्वारा स्वंय ही कार्यक्रम विकसित किए जाते हैं। अधिक जानकारी के लिए 'संदर्भ सूची' की मदद लें।

केस स्टडी – L गधों के कल्याण में सुधार हेतु रेडियो के माध्यम से संदेशों का प्रचार–प्रसार

स्रोत:– होशिमो पंडा (रेसपेक्ट डंकीज) परियोजना, KENDAT, 2006

केन्डॉट संस्था द्वारा अप्रैल, 2003 में, गधों के कल्याण पर रेडियो–कार्यक्रम की शुरूआत की गई। रेडियो कार्यक्रम का नाम "तून्जे पुंडा अकूतून्जे" रखा गया। कार्यक्रम का प्रसारण किस्वाडिली भाषा में किया गया। "तून्जे पंडा अकूतून्जे" वाक्य का मतलब है। आप अपने गधों की अच्छी तरह से देखभाल करें, बदले में वो आपकी देखभाल करेंगे।"

इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य यह था कि गधों के कल्याण एवं इनके कार्य–वातावरण में अच्छा सुधार एवं परिवर्तन हो। ये कार्यक्रम अपने आपमें अनोखा था जिसकी वजह से गधों के कल्याण की दिशा में सकारात्मक प्रभाव पड़ा।

कार्यक्रम –प्रसारण के अन्त में, श्रोताओं से प्रसारित कार्यक्रम से सम्बंधित प्रश्न पूछे जाते थे। श्रोताओं से अपील की जाती थी कि वे अपना उत्तर लिखकर भेजें। सही उत्तर भेजने वाले प्रतिभागियों को इनाम स्वरूप टी–शर्ट मिलता था।

गधों पर आधारित कार्यक्रम अन्तर्गत निम्नांकित मुद्दों को शामिल किया गया :–

- गधों के महत्व एवं कल्याण हेतु मानसिकता परिवर्तन एवं जागरूकता फैलाना।
- गधों की बीमारी एवं बचाव।
- मां बनने वाली गधी एवं उनके बच्चों का अच्छी तरह से रख'रखाव एवं देखभाल करना।
- अच्छी प्रकार से खुरैरा एवं मालिश करना।
- गधों के स्वास्थ्य जैसे–सूम की छंटाई, जख्म की देखभाल एवं इलाज की समुचित व्यवस्था/प्रबंध।
- गधों के रहने, दांत की घिसाई इत्यादि की व्यवस्था करना।
- अच्छे चारा, पानी इत्यादि की व्यवस्था के लिए, कार्यक्रम के माध्यम से, श्रोताओं को प्रेरित किया जाता था कि वे अपने गधे से सम्बंधित प्रश्न कार्यक्रम प्रसारण टीम को लिखकर भेजें। प्राप्त प्रश्नों के उत्तर कार्यक्रम प्रसारण टीम द्वारा बारी बारी से दिया जाता था।
- वर्तमान में गधों के कल्याण पर आधारित रेडियो कार्यक्रम राष्ट्रीय रेडियो तक अपनी पहुंच बना चुका है। प्रत्येक शनिवार को, रात्रि में 8.30 बजे "सिटीजन रेडियो" के अन्तर्गत इस कार्यक्रम का प्रसारण किया जाता है।
- शैक्षिक कार्यक्रम भी इस कार्यक्रम के साथ प्रसारित किया जाता है। शैक्षणिक कार्यक्रम का प्रसारण साक्षात्कार, बहस/चर्चा पशु मालिक एवं विशेषज्ञों/सेवा प्रदाताओं के बीच हुई, की रिकॉर्डिंग के माध्यम से की जाती है।
- श्रोताओं की रूचि जानने के उद्देश्य से प्रसारित कार्यक्रमों के बारे में श्रोताओं से सुझाव/राय नियमित रूप से ली जाती है। रेडियो कार्यक्रम टीम द्वारा एक व्यक्ति को नियुक्त किया गया है जो देश के विभिनन हिस्सों में भ्रमण कर गधों के प्रति अच्छे कार्य करने वाले मालिकों/व्यक्तियों की पहचान करता है एवं बदले में पुरस्कृत भी करता है। इस कार्यक्रम के प्रभाव से गधों के प्रति उत्साहपूर्ण कार्य करने वाले व्यक्रियां का "फैन क्लब" भी बन रहा है। रेडियो के माध्यम से "फैन–क्लब" की उद्घोषणा भी की जाती है।
- इस परियोजना से रेडियो के माध्यम से कैसे समुदाय तक प्रभावी पहुंच बनाई जाती है? यह सीखने को मिलता है।

पोस्टर, समाचार पत्रिका एवं लीफलेट्स:–

पोस्टर का प्रयोग संक्षिप्त अश्व कल्याण सम्बंधी संदेशों के प्रचार–प्रसार के लिए किया जाना चाहिए। पोस्टर को प्रभावी बनाने के लिए इसमें चित्रों का समावेश किया जाना चाहिए। तकनीकी जानकारियों के प्रचार–प्रसार के लिए ''लीफलेट्स'' का इस्तेमाल करना चाहिए। समुदाय के शैक्षणिक स्तर की जानकारी के अनुरूप ही लीफलेट्स तैयार की जानी चाहिए।

ज्यादा पढ़े लिखे नहीं होने के कारण पशु मालिक समुदाय के लिए लीफलेट्स उपयुक्त नहीं है परन्तु कृषि प्रसार क्षेत्र में कार्यरत कर्मियों के लिए यह बेहद उपयोगी एवं प्रभावी है। (संदर्भ: प्रसार कर्मियों को पोस्टर पर जानकारी चित्र –5.1 पृष्ठ सं0 137)

पढ़े लिखे व्यक्तियों/समुदाय के लिए 'समाचार पत्रिका' काफी उपयोगी है। इथोपिया में, अंग्रेजी भाषा में समाचार पत्रिका का उपयोग 'अश्व कल्याण सम्बंधी' विषयों पर जागरूकता फैलाने के लिए किया जा रहा है। भारतवर्ष में, हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषा में, समाचार पत्रिका का उपयोग निम्नलिखित कारणों के लिए किया जा रहा है:–

1– सफलता की कहानियॉ एवं नई सीखों के आदान–प्रदान के लिए।

2– सफलता की कहानियॉ से प्रेरित होकर अश्व मालिकों ने अपने समूह में भी प्रतिस्पर्द्धा का माहौल बनाया ताकि अश्व कल्याण की दिशा में सामूहिक कार्य किया जा सके।

3– पशु मालिकों के आत्म गौरव को बढ़ाने के लिए।

4– अश्व कल्याण से सम्बंधित तकनीकी एवं देशी तकनीकी जानकारियों का आदान–प्रदान करने के लिए।

चित्र 5.1 प्रसार में काम करने वाले कार्यकर्ता हेतु सूचना पोस्टर का एक प्रारूप

<table>
<tr><td colspan="3">टेटनस
(हवा की बीमारी/हिरणब्याल/जकड़ा स्थानीय भाषा)</td></tr>
<tr><td colspan="3">कारण:– टेटनस के जीवाणु पशु की लीद एवं मिट्टी में रहते हैं। जीवाणु पशु में हुए जख्म से शरीर के अन्दर प्रवेश कर बीमारी को फैलाते हैं।</td></tr>
<tr><td>लक्षण</td><td rowspan="2">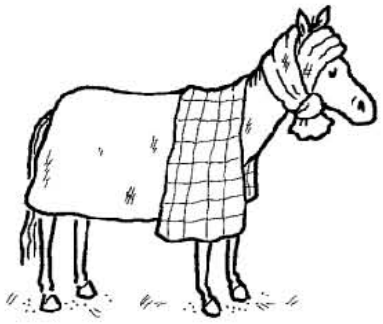</td><td>बचाव</td></tr>
<tr><td>• सिर एवं गर्दन में रूखापन एवं अकड़ापन
• कान एवं पूँछ उठी हुई हो।
• चौड़ी नासिकाएं।
• आंख की तीसरी पुतली का दिखाई देना।
• काठनुमा शरीर, ध्वनि, प्रकाश एवं छूने के प्रति अतिसंवेदनशील</td><td>• नुकीली वस्तुओं से होने वाले जख्म को रोकना।
• जख्म पर अच्छी तरह से सफाई एवं खुला न छोड़ना
• टीकाकरण (2 फुल डोज) एवं एक वार्षिक डोज।
गर्भवती घोड़ी को बच्चा जनने के 4–6 सप्ताह पूर्व टी.टी. का टीकाकरण करवाना</td></tr>
<tr><td colspan="3">**नोट:–** बचाव इलाज से बेहतर है– टीकाकरण इलाज काफी महंगा है। इलाज करने के बाद भी कई बार पशु की मृत्यु हो जाती है।</td></tr>
</table>

सिद्धान्त बॉक्स–12– अश्व कल्याण में सुधार हेतु प्रभावी संप्रेषण वस्तुओं/सामग्रियों के विकास सम्बन्धी चेकलिस्ट

पशु मालिकों, पशुओं से लाभान्वित अन्य व्यक्तियों या सेवाप्रदाताओं इत्यादि को उक्त विषय हेतु निर्धारित प्रक्रिया के समस्त चरणों में सम्मिलित कराना परमावश्यक है। ऐसा करने से, सम्प्रेषण हेतु तैयार सामग्रियाँ, टूल्स प्रभावी होंगी।

1– परियोजना के उद्देश्य के अनुसार ही 'सम्प्रेषण–रणनीति' को परिभाषित करना चाहिए।

2– लक्ष्य समूह एवं प्रतिभागियों को चिन्हांकित, प्राथमिकीकरण एवं परिभाषित करना चाहिए।

3– क्या जानकारियॉं/सूचनाएं समुदाय/प्रतिभागी जानना चाहेगी? यह निर्धारित किया जाना चाहिए।

4– समुदाय किन स्रोतों से प्राप्त जानकारियों का उपयोग करते हैं? यह भी चिन्हित किया जाना चाहिए।

5– अच्छे सम्प्रेषण के "बाधाएं एवं अवसरों" का चिन्हांकन भी करना चाहिए।

6– सबसे उपयुक्त सम्प्रेषण विधि/अवसरों का चिन्हांकन भी करना चाहिए।

7– समुदाय की भागीदारी से संदेशों को तैयार किया जाना चाहिए।

8– नियोजित ढंग से सम्प्रेषण किया जाना चाहिए।

9– सम्प्रेषण हेतु उपयुक्त सामग्री का विकास करना चाहिए।

10– सहभागी विधि से सम्प्रेषण हेतु तैयार सामग्री/विधि का परीक्षण करना चाहिए।

11– सम्प्रेषण हेतु विकसित सामग्रियों का उपयोग करना चाहिए।

12– सहभागी मूल्यांकन भी करना चाहिए।

स्रोत: बरके (1999) "सैंपल कम्यूनिकेशन स्ट्रेट्जी" क्यूनिकेशन एवं डेवलपमेन्ट–ए प्रैक्टिकल गाइड –पृ0स0 25

भाग 3

अश्व कल्याण के लिए सहभागी क्रियाशील टूल/तकनीक

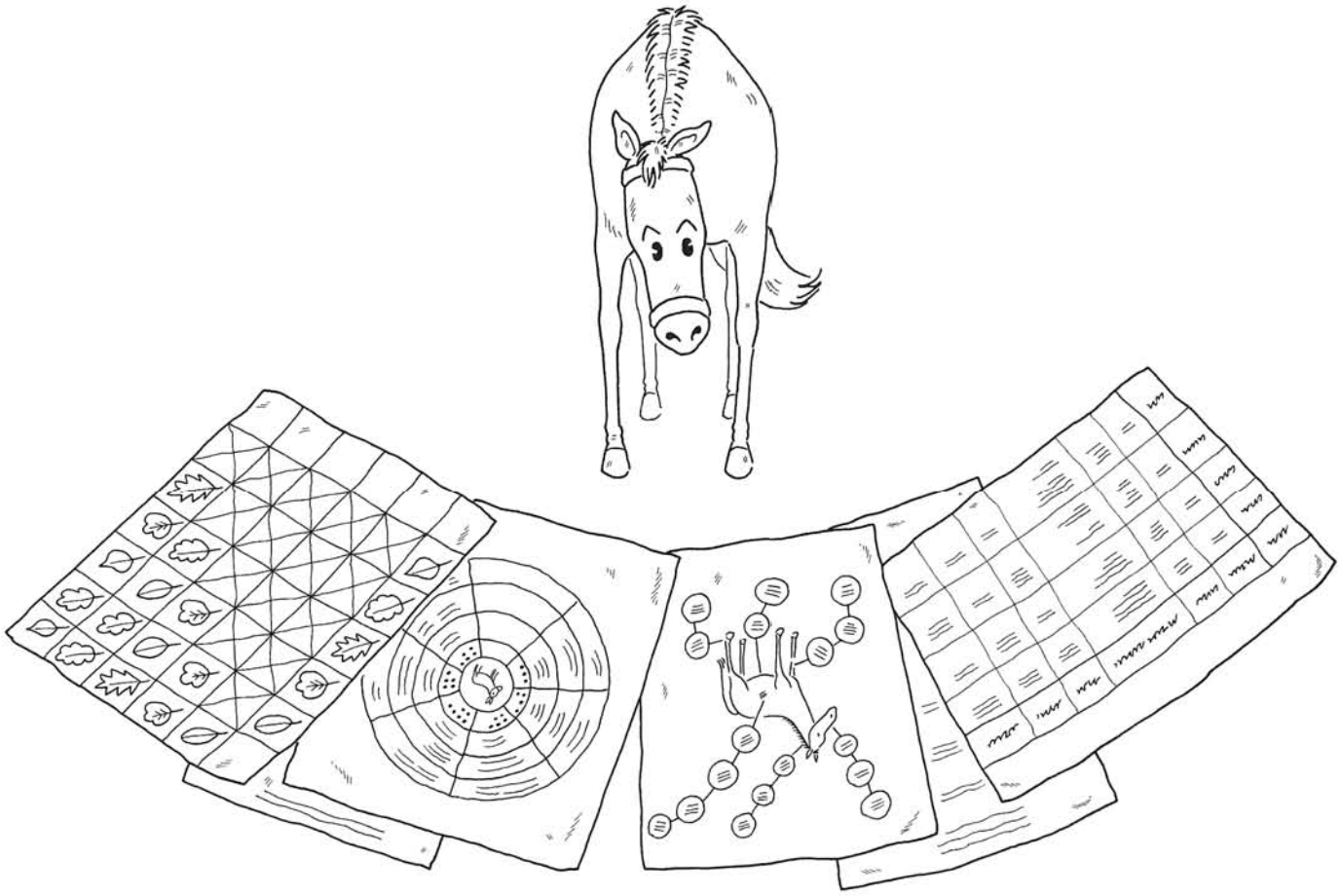

इस टूल किट में आप क्या पायेगें

यह टूल किट पशु कल्याण के लिए सहभागी क्रियाशील टूल्स का पिटारा है। जिसमें से कुछ पूर्व प्रचलित सहभागी ग्रामीण मूल्यांकन (PRA) टूल्स से लिया गया है। जहाँ कोई उपयुक्त प्रचलित तकनीक नहीं था, या जहां लिया गया तकनीक समुदाय के साथ परखने पर अच्छा कार्य नहीं किया वैसे जगह पर हमने विशेष रूप से अभिकल्पित नये टूल्स विकसित किए ताकि समुदाय को इस तरह से सुगम किया जा सके कि वे अपने काम काजी पशुओं के कल्याण को समझकर विश्लेषित करते हुए उसमें सुधार कर सकें।

सभी टूल्स हमारे क्षेत्रीय सुगमकर्ताओं द्वारा क्षेत्र में विस्तृत रूप से आजमाये एवं परखे हुए हैं। जिसने पशुओं और समुदाय की विशेष आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए बहुत से रचनात्मक कार्य किये हैं। इस टूल किट में ज्यादातर वे टूल/वृतान्त लिए गये हैं जिनका सामान्यतः प्रयोग किया गया है साथ ही प्रत्येक टूल के कम से कम एक विकल्प दिए गए हैं। फिर भी हम मानते हैं कि कोई भी टूल हर समय एक राह पर ठीक तरह से लागू नहीं होता है, तथा यहीं पर क्षेत्रीय सुगमकर्ताओं द्वारा अपार रचनाओं/उत्पत्ति एवं नवाचार की संभावना दिखती है। हम आशा करते हैं कि आप सब पशु कल्याण में सुधार हेतु समुदाय को समर्थ बनाने के लिए उपयुक्त, निरन्तर अनुकूल एवं नवीन प्रक्रिया के अन्यन्त प्रभावशाली मार्ग को ढूंढ़ निकालेगें।

प्रयोग के समय इस टूल किट से अपेक्षाएँ :–

आप को पी0आर0ए0 टूल का प्रयोग करना सिखाने के लिए यह एक व्यापक हस्तावली नहीं है। आप के लिए यह आवश्यक है कि आप के पास भी स्थान, समय एवं सम्बन्धों के विश्लेषण करने के लिए अन्य पुस्तकों जैसे कि मेथड्स ऑफ कम्युनिटी पारटिसिपेशन (कुमार 2002)में वर्णित पी0आर0ए0 टूल्स के प्रयोग का बुनियादी ज्ञान हो। अगर आप के पास इनमें से कुछ टूल्स को इनके मूल संदर्भ में प्रयोग का पूर्व अनुभव है (अन्य कार्य क्षेत्र में व्यवहार परिवर्तन में सुगमीकरण का जैसे स्वास्थय, शिक्षा, पानी और सफाई) तो यह आप को गहरी समझ देगा कि आप इन टूल्स को पशु कल्याण के संदर्भ में कैसे प्रयोग करेंगे।

इस टूल किट का प्रयोग कैसे करें :–

प्रत्येक टूल के लिए हमने निम्न का वर्णन दिया है :–

1. **यह क्या है :–** टूल का संक्षिप्त विवरण और इनका मूलरूप में प्रयोग(अगर कहीं और से लिया गया है तो)।

2. **उद्देश्य** :–विचार–विमर्श और विश्लेषण का क्षेत्र जिसे टूल सुगम करेगा एवम् पशु कल्याण में प्रयोग हेतु इसका अनुकूलन ।
3. **आप इसे कैसे करेगें** :– पशु कल्याण के संदर्भ में टूल प्रयोग करने के लिए आप जो कदम उठाएगें। यह उस प्रक्रिया के भाग पर केन्द्रित है जो कि मूल टूल से अलग है।
4. **सुगमकर्ता के लिए टिप्पणी** :– इसमें प्रत्येक टूल के प्रयोग के लिए संकेत और सुझाव है,जो हमारे क्षेत्रीय सुगमकर्ता के द्वारा पशु पालक समुदाय के साथ टूल के प्रयोग में उनके अनुभव के आधार पर प्रस्तावित परिणाम है।
5. **चित्र एवं उदाहरण** :– आप के समझ हेतु पशु मालिक समुदाय के साथ मिलकर प्रयोग किए गये टूल के वास्तविक उदाहरण एवं प्रतिलिपि जो कि क्षेत्रीय अभिलेख/दस्तावेजों से लिए गये है।

यदि आप अपने स्वयं के समुदाय में लामबंदी प्रक्रिया के एक अनुभवी सुगमकर्ता हैं तो आशा है कि आप पशु सम्बन्धी सूचनाओं को एकत्र एवम् विचार–विमर्श करने के लिए एक विशेष टूल निकालेगें। प्रत्येक टूल के वर्णन के बाद एक चित्र (प्रतिमा) जो कि यह दिखायेगा कि टूल किस तरह से विचार–विमर्श करने के लिए प्रयोग किया गया है:

	पशु और इसके मालिक का जीवन :– • समुदाय की रचना को समझना – कौन कौन है और वे कहां रहते है, प्रत्येक परिवार में निर्भर व्यक्तियों की संख्या। • समुदाय और परिवार में पशुओं की संख्या व प्रकार निकालना। • जीविका की प्रणाली एवं जीविका की गति विधियों की छानबीन लोग करते क्या है, मुख्य और द्वितीयक रोजगार, रोजमर्रा व मौसमी उतार–चढ़ाव। • यह पता लगाना कि कौन किसे, कैसे प्रभावित करता है–आदमी, आदमी के साथ, पशु पशुओं के साथ, आदमी के साथ पशु। • पशुओं के जीवन को समझना: पोषण करना, चराना और अन्य पशुओं की प्रबन्धन प्रक्रिया, आराम व काम का समय, रोजाना और मौसमी परिवर्तन/उतार–चढाव।
	कार्यकारी पशुओं की आवश्यकता क्या है और वे कैसा महसूस करते है। • पशुओं को उनकी निर्धारित कल्याण स्थिति से समझना। • पशु कल्याण आवश्यकताओं की पहचान, उनके मालिको के ज्ञान बोध के आधार पर। • पशु से सम्बन्धित संसाधनों की पहचान करना, जैसे कि भोजन, पानी, आवास व अन्य। • पशुओं से सम्बन्धित सेवाओं की पहचान करना, उन व्यक्तियों की जो कार्यकारी पशुओं की मदद कर सकते है जैसे कि साजविक्रेता, नालबंद पशु चिकित्सा कार्यकर्ता। खराब पशु कल्याण के लिए कारण एवं सुधार हेतु प्राथमिकीकरण। • खराब पशु कल्याण के प्रमुख भूमिका वाले मूल समस्या को ढूँढ निकालना। • यह निश्चित कीजिए कि क्या परिवर्तन करना है और उसके लिए क्या करना है।
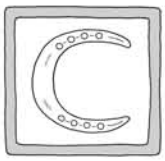	**खराब पशु कल्याण के कारण एवं बेहतरी हेतु प्राथमिकताएं** • ऐसे मूल कारणों की खोज जिससे कल्याण प्रभावित होता है। • निर्णय लेना कि किसमें और कैसे परिवर्तन लाना है।

नीचे दिये गये तालिका में अश्व कल्याण के लिए समुदाय को गतिशील बनाने की प्रक्रिया के अनुरूप सहभागी क्रियाशील टूलों को सूचीबद्ध किया गया है, जिनका वर्णन इस किताब के पाठ्यक्रम संख्या चार में किया गया है। यदि आप इस तरह की प्रक्रिया से अपरिचित है तो शायद यह आप को प्रत्येक पायदान पर एक मार्ग दर्शक के रूप में मदद कर सकती है। यह जरूरी नहीं है और वास्वत में उचित भी नहीं कि प्रत्येक चरण हेतु सभी परामर्शित पी0आर0ए0 अभ्यासों का प्रयोग किया जाये। इससे पहले ढेर सारे अभ्यासों/टूलों का प्रयोग किया भी जिससे सम्भवतः भ्रम पैदा हुआ और खराब अनुभव जिससे बैठको में उनकी भागीदारी और उपस्थिति कम हुई। हमें याद रखना चाहिए कि एक सुगमकर्ता के रूप में हमारा लक्ष्य इस प्रक्रिया को अच्छी तरह शुरू कर उसे जारी रखना जिससे सामुदायिक प्रयास कार्य हेतु माहौल बन (उत्पन्न) सके। यह केवल किसी विशेष क्रम में पडने वाले विशेष अभ्यास को पूर्ण करना/समापन करना नहीं है।

तालिका T 1 समुदाय को गतीशील बनाने की प्रक्रिया में पशु कल्याण हेतु सामुदायिक क्रियाशील टूलों के प्रयोग का दृष्टिकोण :–

अवस्था/स्थिति	चरण	टूल
1 नब्ज टटोलना	1.1– अश्व पालक समुदाय के साथ सम्बन्ध निर्माण 1.2– पशु पालकों का समूह गठन और मजबूतीकरण	मानचित्रण (टी–1) दैनिक गतिविधि तालिका (टी–4) जेंडर का विश्लेषण (टी–5) पशु कल्याण पर सांप सीढी खेल (टी–16) ऐतिहासिक समय देखा (टी–7) मौसमी विश्लेषण (टी–6) निर्भरता विश्लेषण (टी–12) ऋण विश्लेषण (टी–13)
2 सामूहिक दृष्टिकोण एवं सम्मिल्लित सोच	2.1– निम्न से सम्बन्धित मुददों की पहचान करना (अ) पशुपालको की कार्य प्रणाली एवं जीविको पार्जन (ब) कार्यरत पशुओं का जीवन (स) पशु सम्बन्धी सेवा प्रदाता एवं संसाधन	मानचित्रण (टी–1) गतिशीलता मानचित्र (टी–2) चपाती चित्रण (टी–3) दैनिक गतिविधि तालिका (टी–4) लिंग आधारित गतिविधि का विश्लेषण (टी–5) मौसमी विश्लेषण (टी–6) लिंग की पहुॅच और नियन्त्रण की रूपरेखा (टी–10)प्रचलन परिवर्तन (रुझान) विश्लेषण (टी–11) अश्व कल्याण एवं बिमारी मानचित्र (टी–1) पशु कल्याण चपाती चित्रण (टी–3) पशुओं की दैनिक गतिविधि सारणी (टी–4) निर्भरता विश्लेषण (टी–12) पशु शरीर मानचित्रण (टी–20) पशु कल्याण अभ्यास अन्तराल विश्लेषण (टी–21) पशु सम्बन्धी सेवा एवं संसाधन मानचित्रण (टी–1)गतिशीलता मानचित्र (टी–2) जोड़ावार रैकिंग (टी–8) पशु सम्बन्धी सेवा प्रदाताओं का मैट्रिक्स स्कोरिंग (टी–9) लागत लाभ विश्लेषण (टी–15)
3– सहभागी पशु कल्याण आवश्यकता आंकलन	3.1– पशु कैसा महसूस करता है का विश्लेषण तथा अपने कल्याण/तन्दुरूस्ती के लिए वे क्या चाहते हैं। 3.2– पशु आधारित एवं संसाधन आधारित कल्याण के सूचको की सूची का निर्माण तथा इस पर कैसे अंक देगें पर आम सहमति बनाना। 3.3– पशुओं का अवलोकन तथा उनके कल्याण स्थिति का अभिलेखीकरण करना। 3.4– समूह के सदस्यो के पशुओं की वर्तमान स्थिति का विश्लेषण करना।	• पशु कल्याण मुददों का मैट्रिक्स रैकिंग (टी–9) • यदि मैं घोडा होता (टी–17) • अपने पशु की कीमत कैसे बढायेगें (टी–18) • पशु की भावनाओं का विश्लेषण (टी–19) • पशु शरीर का मानचित्रण(टी–20) • पशु कल्याण अभ्यास अन्तराल विश्लेषण (टी–21) • पशु कल्याण भ्रमण (टी–22)

4– सामुदायिक कार्य योजना का निर्माण	4.1– कार्यरत पशुओं और उनके मालिकों के लिए महत्वपूर्ण कल्याण मुद्दों का प्राथमिकी करण 4.2– पशु कल्याण मुद्दो के मूल कारण का विश्लेषण 4.3– मुद्दों के सुधार के लिए सामूहिक कार्य योजना तैयार कराना।	• ऐतिहासिक समय रेखा (टी–7) • जोड़ावार रैकिंग (टी–8) • मैट्रिक्स स्कोरिंग (टी–9) • तीन पत्ती का वर्गीकरण(टी–22) • पशु कल्याण का गैप के साथ कहानी (टी–24) • अश्व की समस्या (टी–25) • पशु कल्याण कारण और प्रभाव विश्लेषण (टी–26)
5 क्रिया एवं प्रतिक्रिया	5.1– सामूहिक कार्य योजना की गतिविधिकयों का क्रियान्वयन तथा अनुश्रवण 5.2– पशु कल्याण में बदलाव की सहभागी अनुश्रवण क्रिया एवं प्रतिक्रिया के लिए एक चक्र की उत्पत्ति	• जोड़ावार रैकिंग(टी–8) • मैट्रिक्स स्कोरिंग या मैट्रिक्स रैकिंग (टी–9) • पशु कल्याण भ्रमण(टी–22) • पशु कल्याण कारण एंव प्रभाव चित्रण (टी–25)
6– स्वयं द्वारा मूल्यांकन एवं नियमित मदद की क्रमिक वापसी	6.1– स्वयं द्वारा मूल्यांकन 6.2– नियमित सहायता से क्रमिक पापसी	• प्रचलन में परिवर्तन का विश्लेषण (टी–11) • समूह में आन्तरिक ऋण का विश्लेषण (टी–14) • सफलता और असफलता की कहानी (अध्याय 4 अवस्था 6)

विशेष पशु प्रबन्धन के उद्देश्य के लिए टूल्स :–

इस टूल किट के अन्त में ऊपर दिये गये टूल्स की सूची से आप को दो उदाहरण मिलेगें जो विशेष रूप से पशु प्रबन्धन मुद्दों पर प्रयोग कर देखे गये हैं। पशु पोषण अभ्यास का विश्लेषण एक टूल है (टी–27) जिसमें समुदाय एवं बाहरी विशेषज्ञ दोनों लोग जुड़े हैं जैसे कि पशु चिकित्सक व पशु पोषण विशेषज्ञ। ऊपर सूचीबद्ध किये गये टूल्स में कई टूल्स ग्रामीण पशु स्वास्थ योजना में सम्मिलित है। कार्यरत पशुओं के पोषण मे सुधार और बिमारियों की रोकथाम व बचाव हेतु कार्य योजना को विकसित करने में हमने सफलता पूर्वक बहुत से समुदाय के साथ प्रयोग किये है। इस दौरान इन टूलों के विकास को जारी रखने में बहुत सी जटिलता, विविधता व अनुकूलन का सामना होगा।

प्रक्रिया बॉक्स 9 पी0आर0ए0 टूल्स के प्रयोग के लिए महत्वपूर्ण सुझाव

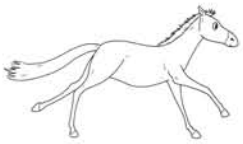

समूह के सदस्यों को शुरू में ही आप स्पष्ट रूप से अभ्यास के उद्देश्य को बता दें ताकि वे समझ बना सकें।

अभ्यास के पश्चात उसके निष्कर्ष को कैसे आपस में बाटेगें पर सहमति बनाने के साथ ही इसे कौन देखेगा और इसे भविष्य में कैसे प्रयोग करेगें।

- उपयुक्त समूह को एकत्रित करना, क्या आप पशु पालक व उनके एकत्र हुए परिवार के साथ कार्य करना चाहते है। क्या पशुपालक व पशु की देख रेख करने वाले के साथ अलग से बातचीत करना उपयोगी है? क्या वहॉ इस कार्य को करने में किसी सामाजिक समस्या की सम्भावना है? इस क्रिया में अधिकतम 10–15 लोगों के समूह के साथ कार्य करने का प्रयास करें। यदि समूह बड़ा है तो बेहतर होगा उसे दो या अधिक सुगमकर्ताओं के मध्य विभाजित करना। अगर समूह एक जैसा अभ्यास कर रहा है या दूसरा कोई तो कार्य उपरान्त परिचर्चा हेतु उन्हें एक जगह बुला सकते हैं।
- प्रतिभागी उपयोग की जा रही वस्तुओं के साथ उन गतिविधियों में सहभाग कर सकते हैं जिसे वे रोजमर्रा की जिन्दगी में प्रयोग करते है जैसे कि झाड़ू उस समय के लिए जब वे सफाई कर लिए हो, या खाने के बर्तन जब वे खाना खा लिया हो। विकल्प के तौर पर वे बीज, पत्ती, बुरादा, चूने का चूर्ण, रंगीन खड़ियों या अन्य कोई सामग्री जो स्थानीय स्तर पर उपलब्ध हो का प्रयोग कर सकते हैं। अभ्यास को चार्ट पेपर या अखबारी कागज पर भी चित्रित कर सकते हैं। हॉलकि चित्रित चार्ट को जमीन पर फैलाने पर उसे सक्षम व्यक्तियों द्वारा देख कर सुविधानुसार बदलाव कर लेंगे।
- गतिविधियों को चित्रों या संकेतो का प्रयोग कर प्रदर्शित करने का प्रयास करें। ताकि इसे ऐसे व्यक्ति भी समझ सकें जो लिख–पढ़ नही सकते। स्कोरिंग अथवा महत्ता अभ्यास को बाकला बीज, अथवा अलग–अलग लम्बाई की लकड़ी के साथ कर सकते है।
- मानचित्रण जैसे किसी अभ्यास को करते समय उसमें शामिल न हुए समुदाय सदस्यों से पूछिए कि क्या वे ऐसा सोचते हैं कि प्रत्येक आकृति का स्थान सही है या नहीं। यदि वे स्थापन से असहमत हैं तो उसकी सही स्थिति को दर्शाने के लिए आमंत्रित करें। यह आवश्यक है कि जहां कहीं भी सम्भव हो इस प्रक्रिया में समुदाय के अन्दर विभिन्न समूहों के प्रतिनिधियों को शामिल करें। सबको अपने विचार रखने हेतु प्रोत्साहित करें।
- यदि कोई विशेष प्रतिभागी समूह पर हावी हो रहा है तो पूछें या इससे अलग से साक्षात्कार के लिए सहमति दें। मानचित्र और सारणी से दूर उसे वार्तालाप में ही व्यस्त रखें जिससे कि प्रक्रिया के ऊपर उसका प्रभाव कम हो सकें।
- सभी पी0आर0ए0 अभ्यासों के साथ, विचार विमर्श, प्रतिक्रिया एवं विश्लेषण, मानचित्र, सारणी और आरेख के सापेक्ष अपने आप ही ज्यादा महत्वपूर्ण है। यह विश्लेषण समूह के लिए भरपूर एवं विविध अनुभव ला सकता है जिससे वे समुदाय के लिए आवश्यक चीजों के बारे में समझौता कर पायें।
- अपने बिन्दु पर विचार–विमर्श करने के लिए मौके को देखें और प्रतीक्षा करें। प्रतिभागियों के बीच हो रहे वार्तालाप के बीच में हस्तक्षेप न करें। सभी पारस्परिक क्रियाओं (चर्चित बिन्दुओं) एवं उन चीजों के सारे विवरण ले लें, जिन पर विचार–विमर्श किया गया हो।
- दस्तावेजी करण महत्वपूर्ण है जिससे कि भविष्य में उन अभ्यासों का उल्लेख किया जा सके, और समयानुसार अनुश्रवण प्रगति में प्रयोग किया जा सकता है। समूह के साथ यह अन्वेषण कीजिए कि वे अपने विचार–विमर्श के अभिलेख और अभ्यास को रखना कैसे पंसद करते हैं, जैसे कि ए–4 पेपर पर या खाताबही पर। एक कॉपी समूह के पास रखने के लिए और एक प्रति आप के पास सुगमीकरण हेतु। इस कार्य को बहुत प्रभावी तरीके से समुदाय से स्कूली बच्चे व कॉलेज विद्यार्थी कर सकते हैं।
- इसमें सभी प्रतिभागियों के नाम, तारीख और गांव के नाम को सम्मिलित करें, यह निश्चित कीजिए कि आप के पास एक चाभी है जिससे आप सभी प्रयोग हुए संकेतो का अर्थ दिखा सकते है।
- अंत में, सभी लोगों को उनके समय और उनके द्वारा किये गये क्रियाशील सहयोग के लिए धन्यवाद दें।

टी–1 मानचित्रण

पशु सम्बन्धी सेवाएं एवम् संसाधन, पशु कल्याण और पशु बीमारियाँ :

जब आप किसी समुदाय के साथ काम करना शुरू करते हैं, तब यह जानना मुश्किल हो जाता है कि उसे कहां और कैसे शुरू करना है? अधिकतर समुदाय सदस्य अपनी विशेषज्ञता को पूछे जाने के आदी नहीं होते हैं। मानचित्रण शुरूआत करने के लिए एक अच्छा विकल्प है, क्योंकि यह एक आसान अभ्यास है जो कि आप और आप के समुदाय के बीच में संचार एवं विचार–विमर्श (चर्चा) लायेगा। स्थानीय लोग अपने तथा अपने वातावरण के अनुकूल होते है, जहां उनके परिवार पुश्तों से रहे हैं तथा वहां के ज्ञान के धनी होते हैं, इसीलिए स्थानीय समुदाय द्वारा किया गया मानचित्रण विस्तृत, प्रमाणिक और सही होते हैं।

यह क्या है :–

मानचित्र महत्वपूर्ण स्थानों, सेवाओं और क्षेत्र के साधनों का एक दृष्टिचित्रण है, जैसा कि उपस्थित क्षणों में समुदाय के द्वारा देखा और समझा गया है। मानचित्र पशुओं की कल्याण स्थिति या पशु किसी विशेष बीमारी या समस्या से ग्रस्त है या सही है को भी दिखा सकता है। इस अभ्यास के प्रयोग करने से आप और समुदाय दोनों पशु कल्याण, समस्याओं और मुद्दों पर ध्यान दे सकेंगे जो कि दूर तक की खोज के लिए आवश्यक है।
आप मानचित्रण को कई तरीकों से प्रयोग कर सकते है। यहां हमने कुछ रूपान्तरों का वर्णन किया है।

पशु सेवाओं और संसाधनों का मानचित्रः–

यह सामाजिक मानचित्र (चित्र-T1a) समुदाय के स्वयं के गांव और वातावरण को दर्शाता हैं। इसमें घर सड़कें, पीने के पानी की सुविधायें, कार्यस्थलों और प्राकृतिक संसाधनों यहां तक कि कार्यकारी पशुओं से सम्बन्धित संसाधन जैसे कि चरने के लिए जमीन, आराम स्थल, पोषण करना और जलक्षेत्र सम्मिलित है। यहाँ पता चलता है कि कौन सी जगह और व्यक्ति पशु की देखभाल करने में समुदाय के लिए आवश्यक है, जैसे कि चारा/दाना विक्रेताओं की स्थिति, नालबन्द, बाल काटने वाले, गाड़ी (खड़खड़ा/बुग्गी) बनाने वाले, स्थानीय स्वास्थ्य सुविधा दाता, ग्रामीण चिकित्सक या औषघालय और सरकारी पशु चिकित्सालय।

पशु कल्याण मानचित्र :–

एक पशु कल्याण मानचित्र (चित्र-T1b) प्रत्येक परिवार में पशु के कल्याण की स्थिति को दर्शाता है। जो कि विशेष तथ्यों पर आधारित हैं जो कि समुदाय को आवश्यक लगते है, यह एक चिडियाँ की ऑख जैसा सर्वेक्षण देता है या गांव में पशु स्थिति का पूर्ण सर्वेक्षण। इस प्रारम्भिक अवस्था में समुदाय अपने कार्यरत पशुओं के कल्याण को किस रूप में देखते हैं इस पर निर्भर करता है। मानचित्र में शायद इन चीजों का मिश्रण हो।

(अ) पशु आधारित अवलोकन :– जैसे कि स्वस्थ या कमजोर पशु, पंगु/लंगड़ा पशु, घायल और चोटिल पशु।

(ब) पशु मालिक का व्यवहार/आचरण, जैसे कि कौन अपने पशु पर अधिक भार लादता है या कौन अपने पशु को पीटता है या पशु का आवास साफ नहीं रखता है।

(स) संसाधन, जैसे कि किसके पास पशुओं को चराने के लिए जमीन पर्याप्त है या किसके पास नहीं है।

पशु कल्याण मानचित्र का प्रयोगः–

स्थिति का विश्लेषण करने में तथा जो सबसे पहले दिमाग में समस्यायें आती है उनको हल करने में करते हैं। (टी–17 'अगर मैं घोड़ा होता और टी–25 घोडे की समस्या इसे अधिक विस्तार से वर्णित करता है) प्रत्येक आदमी के पशु की कल्याण स्थिति पर विचार–विमर्श एवं प्रदर्शन करना, बदलाव के लिए दबाव बनाने का पहला कदम है। मानचित्र का प्रयोग वर्तमान पशु प्रबन्धन का पता लगाने में, कार्य अभ्यास, भविष्य की प्रगति के अनुश्रवण हेतु आधार रेखा बनाने में होता है। एक निश्चित कालावधि के दोहराव के बाद, पशु कल्याण स्थिति में बदलाव और प्रबन्ध अभ्यास को भी मानचित्र में दिखाया जा सकता है।

पशु बीमारी मानचित्र :–

यह (चित्र-T1c) पशुओं को किसी बीमारी से ग्रस्त होना दिखाता है। जैसे अन्धापन, लगड़ापन और अन्य स्थितियाँ, इसका प्रयोग गांव में वर्तमान और बीते दोनों बीमारियों–समस्याओं के लिए किया जाता है। मानचित्र पर बीमारियों को दिखाना उनके विश्लेषण को प्रोत्साहित करता है और आगे उनके लक्षणों कारणों और उसके मूलों या संक्रमण के तरीके तथा इसके अलावा पशुओं, पशु पालकों तथा समुदाय पर उसके प्रभाव पर विचार–विमर्श करना। यह विचार–विमर्श लोगों को अपने कार्यरत पशुओं के स्वास्थ्य और वे चीज जो वे बदलना चाहते है, के प्रति उनके लगाव को बढ़ावा देता है।

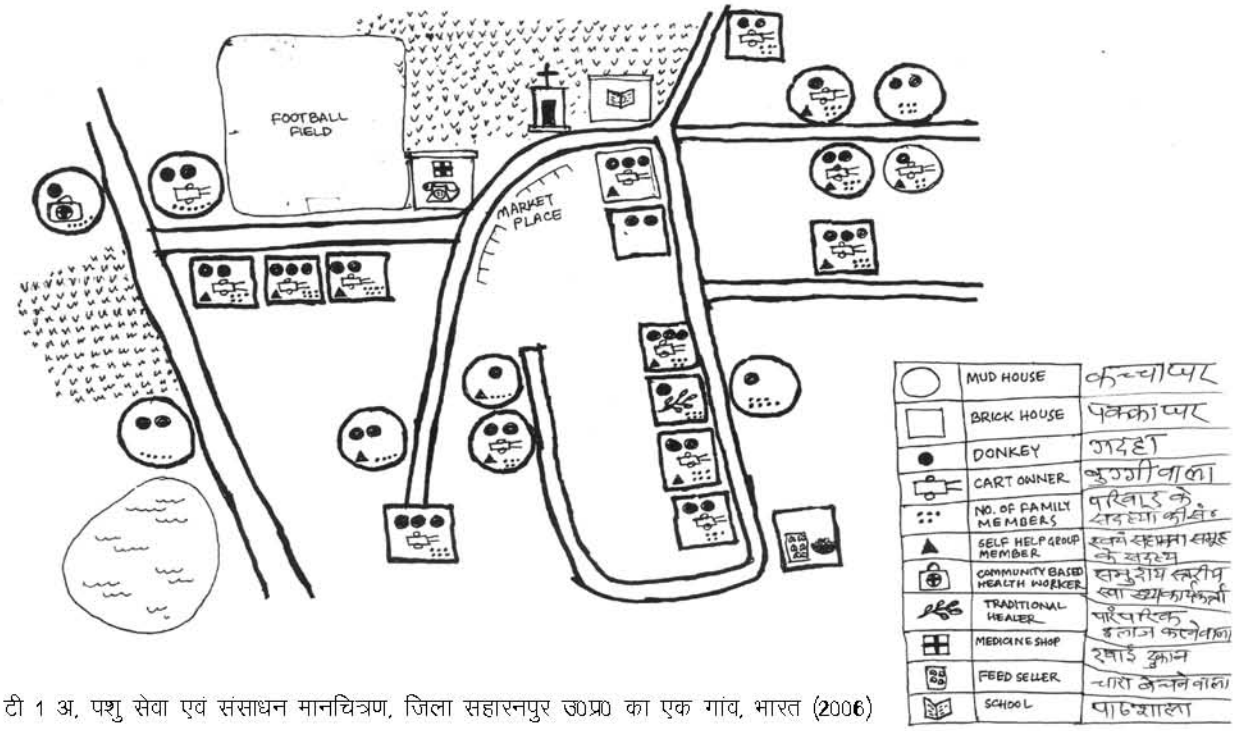

चित्र टी 1 अ, पशु सेवा एवं संसाधन मानचित्रण, जिला सहारनपुर उ0प्र0 का एक गांव, भारत (2006)

(एक बार एक गांव की रूप रेखा बनायी गयी, समूह ने प्रत्येक परिवार के गधों की संख्या को जोड़ा तथा गधे) पीठ से या गाड़ी के साथ कार्य कर रहे है या नहीं तथा पशु से सम्बन्धित सेवादाताओं और संसाधनों को चित्र में दर्शाए हैं और समुदाय आधारित पशु स्वास्थय सेवा दताओं, दवाखाना, चारा विक्रेता, और पारम्परिक चिकित्सकों को भी शामिल किया है। मानचित्र के निर्माण के दौरान और बाद में उपलब्धता संसाधनों की लागत व गुणवत्ता तथा गांव में सेवादाताओं की उपलब्ध पर ही केन्द्रित थी।

आप इसे कैसे करेगें	
पायदान 1	समूह से उनके गांव का दृश्य भूमि पर खींचने को कहकर शुरूआत करें तथा उनके द्वारा चयनित कोई भी स्थानीय सामग्री का प्रयोग करने को कहे और दर्शाऐं:– • सामान्य संरचना जैसे कि सड़क और रास्ते। • समुदाय के प्रत्येक परिवार के सदस्यों की जानकारी को भी सम्मिलित करें। • उनके लिए महत्वपूर्ण स्थान, जैसे कि चिकित्सक, मंदिर, मस्जिद या वो स्थान जहां पर वे बैठक कर सकें।
पायदान 2	मानचित्र को अधिकाधिक पशु केन्द्रित बनाना, समूह से उन परिवारों को सूचित करने को कहें जिनके पास कार्यकारी पशु है। किसी भी प्रतीक या स्थानीय समाग्री से पशुओं की संख्या और उनके प्रकार को दर्शाइये। कुछ जानकारियाँ और जोड़ जैसे कि पशु नर है या मादा और वे किस प्रकार का कार्य करते है।

पायदान 3	गांव में पशुओं के लिए उपलब्ध किसी भी सेवा व संसाधन की पहचान करें। • प्राकृतिक संसाधन जैसे कि पशु को पानी उपलब्ध कराना आराम करने का स्थान, और चरने का क्षेत्र। • सेवा प्रदाता, जैसे कि नालबंद, गाड़ी बनाने वाला, राशन विक्रेता, पशु स्वास्थ्य सेवादाता, पशुधन प्रसार कार्यकर्ता आदि। प्रतिभागियों के बीच विचार–विमर्श के अनुसार, आप शायद इनके बारे में प्रश्न पूंछ सकते हैं। • गांव में कौन सी सुविधाएँ और साधन उपलब्ध नहीं है और प्रतिभागी उनकी पूर्ति के लिए कहाँ जाते हैं। • सेवाओं की उपलब्धता, गुणवत्ता और कीमत के बारे में अलग–अलग व्यक्तियों के दृष्टिकोण की विशिष्टता को दर्शाइये। • कुछ लोगों के पास बहुत सी सुविधायें और संसाधन हैं और अन्य के पास नहीं ऐसा क्यों है इसका कारण ढूंढिएँ। कुछ समय पहले हमने इन सवालों का अधिक गहराई से विश्लेषण करने के लिए विशेष टूलों का वर्णन किया (जैसा कि टी 12 निर्भरता विश्लेषण) शायद आप इस बिन्दु पर परिचित होगें यदि समूह चाहे या पूर्व की बैठकों में से इन्हें ला सकते है। इस स्थल पर आकर पशु सेवाओं और संसाधनों का मानचित्र पूर्ण होता है, प्रतिभागियों से पूछिए कि क्या कुछ ऐसा बचा है जो वे मानचित्र पर दिखाना चाहते हैं जो कि उन्हें लगता है कि वह उनके जीवन और जीविका के विषय में आवश्यक है, विकल्प के तौर पर इसके अतिरिक्त आप मानचित्र को विकसित करना जारी रखेगें, पशु कल्याण मानचित्र के अन्दर या पशु बीमारी मानचित्र (नीचे दिये उपायों का अनुसरण करें) पशु कल्याण मानचित्र के लिए इन तीन पायदानों का प्रयोग करें।
पशु कल्याण चित्रण के तिए	
पायदान 4	प्रतिभागियों से गांव में कौन सा पशु उत्तम है पर विचार विमर्श कर आम सहमति के लिए कहें। इसे मानचित्र पर किसी प्रतीक चिन्ह के द्वारा उसके घर के बगल में दर्शायें। फिर पूछें कि यदि कोई और पशु समान रूप से अच्छी स्थिति में है तो उन परिवारों को भी वही चिन्ह दें। उसके पश्चात् पता लगाइए कि कौन से पशु सामान्य स्थिति में है उन्हें, मानचित्र पर किसी अन्य चिन्ह का प्रयोग कर दर्शाइए, अन्त में उन पशुओं को दर्शाएँ जो अत्यन्त बुरी हालत में है। (दूसरी ओर आप को लोगों से अत्यन्त खराब स्थिति के पशुओं के विषय में चर्चा शुरू करनी चाहिए उसके पश्चात सामान्य स्थिति और उत्तम हालत के पशुओं की तरफ अग्रसर हो जाना चाहिए। यदि कुछ परिवारों के पास एक कार्यकारी पशु से अधिक पशु है तो उन पशुओं को प्रत्येक परिवार के अन्दर इंगित करें।
पायदान 5	जब प्रतिभागी यह चर्चा कर रहे हों कि कौन सा पशु सामान्य स्थिति का है और कौन सा खराब स्थिति में है तो उनसे यह पूछें कि वे इसका निर्णय कैसे कर रहे हैं। वे अपनी चर्चा में किस मानक का प्रयोग कर रहे हैं इसमें पशु के स्वास्थ्य के प्रति पशु मालिक का बर्ताव, पशु की स्वयं से सम्बन्धित टिप्पणियॉ (अवलोन के बाद) जैसे कि घाव, चोट और शरीरिक स्थिति सम्मिलित हो सकती है।
पायदान 6	संकेतो का प्रयोग करके, उन्हीं पशुओं या परिवारों के पास उन मानकों को सूचीबद्ध कीजिए जिनका प्रयोग करके उन पशुओं का वर्गीकरण किया गया है। उदाहरण के लिए, यदि किसी पुश को मालिक के पिटाई के कारण खराब स्थिति में वर्गीकृत किया गया हो, खराब गुणवत्ता का चारा, और पशु के आवास के लिए अपर्याप्त स्थान, इन प्रत्येक के लिए हर परिवार के पास प्रतीक चिन्ह लगायें।

पशु बीमारी मानचित्र के लिए निम्न तीन विकल्पों का प्रयोग करें	
पायदान 4(अ)	प्रतिभागियों से पूछें यदि इस सयम यहां पर कोई पशु है जो कि किसी बीमारी से ग्रसित है अथवा रोग ग्रस्त है तो इस क्षण उन्हें विभिन्न बीमारियों के लिए अलग–अलग चिन्हों/प्रतीकों का प्रयोग कर सभी बीमार पशुओं को मानचित्र में दर्शाने के लिए प्रोत्साहित करें।
पायदान 5(अ)	पुनः प्रत्येक परिवार से सम्बन्धित पशुओं को पिक्षले सालों में हुई बीमारियों को दर्शाने को कहें ।
पायदान 6(अ)	दिखाए गए बीमारियों के कारणों पर चर्चा करें। वे कब होती है (मौसमी या काम करने के तरीकों से सम्बन्धित), वे कैसे पहचाने जाते हैं, संक्रमण एवं दूषण (सम्पर्क प्रभाव) के संभव स्त्रोत। वे कैसे फैलते हैं और कोई अन्य बीमारी संबंधी विषय जो प्रतिभागियों द्वारा लायी गई है।

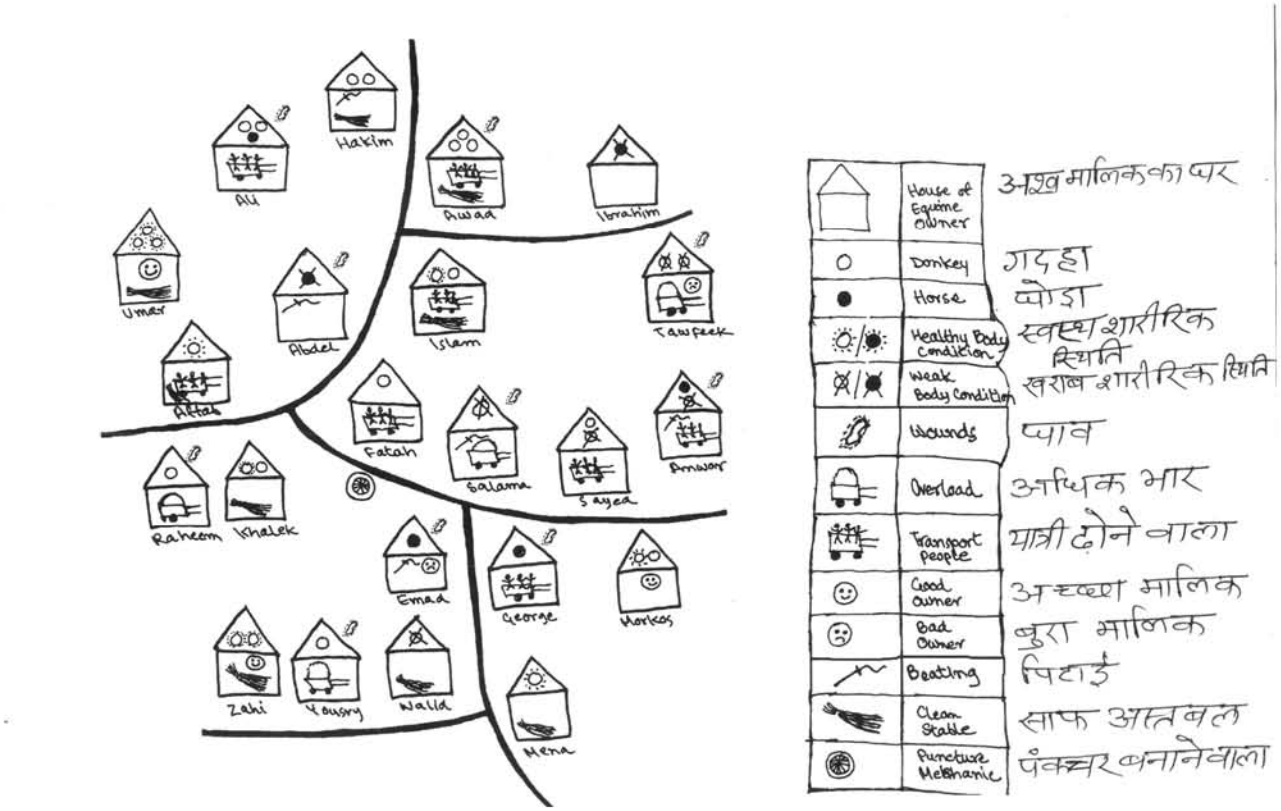

चित्र टी 1 ब, पशु कल्याण चित्रण, सहारनपुर जिले के एक गांव में।

यह मानचित्र विशेष पशु प्रबन्धन और संचालन अभ्यास को दर्शाता है इसके अलावा प्रत्येक परिवार में पशु की कल्याण स्थिति को भी दर्शाता है। एक बार यह पता चल जाए कि परिवार में घोड़ा है या गधा, फिर समूह इस बारे में जानकारी बढ़ाता है कि क्या पशु मालिक अपने पशु को पीटता है या उस पर अधिक भार लादता है और इसका आवास (अस्तबल) साफ रखता है या नहीं। फिर वे पशु कल्याण के कुछ मानक (संकेत) जोड़ते है, जैसे पशु स्वस्थ है या कमजोर है और इसके घाव हैं या नहीं। मानचित्र पर आधारित, समूह ने पता लगाया कि कौन अच्छा मालिक हैं और कौन बुरा मालिक हैं, प्रबन्धन और संचालन अभ्यास के प्रदर्शन के लिए कारणों को ढूढंना और पशु के मालिकों को अपने पशु के प्रबन्धन और संचालन के लिए तत्कालीन क्रिया करने में उनका मार्गदर्शन करेगा।

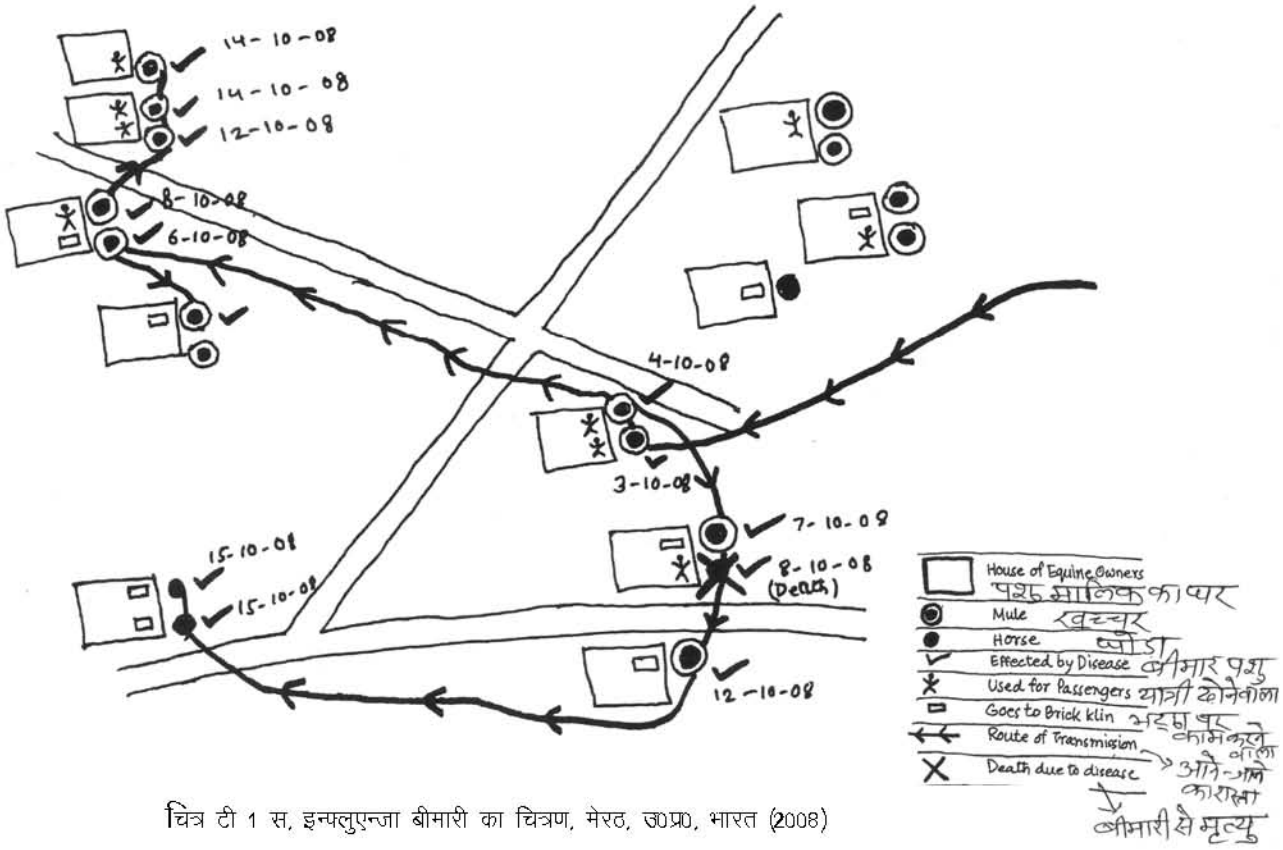

चित्र टी 1 स, इन्फ्लुएन्जा बीमारी का चित्रण, मेरठ, उ0प्र0, भारत (2008)

यह मानचित्र एक गांव में खच्चर और घोड़े मालिकों के समूह द्वारा बनाया गया है वहां जहां पर एक्वाइन इनफ्लूएन्जाँ की महामारी थी, पहले पशु मालिकों ने अपने परिवारों घरों का मानचित्र किया और फिर प्रत्येक पशु द्वारा किस तरह का काम किया जाता है वह भी दर्शाया। फिर उन्होनें दिखाया कि कौन से पशु इनफ्लूएन्जॉ से ग्रस्त हुए और और कब से। और यह भी दिखाया कि कौन से पशु मर गये। बीमारी होने की तारीख का प्रयोग करके समूह ने तारों से इनफ्लूएन्जा के फैलने के सूत्र/स्त्रोत एवं मार्गो का मानचित्र किया। इस पर आधारित, ग्रसित पशुओं के उपचार के लिए और इससे अधिक बीमारी के प्रसारण होने से बचाव के लिए पशु मालिकों ने एक कार्य योजना बनायी।

सुगमकर्ताओं के लिए मानचित्रण हेतु टिप्पणी

- जमीन पर मानचित्रण करना समुदाय के लिए बहुत सरल है, हर कोई मानचित्र के चारों तरफ घूम सकता है और उसे विभिन्न कोणों से देख सकता है, यह बड़ी भीड़ को भी अनुमति देता है कि वे मानचित्र को देख सकते हैं और उसके निर्माण में सहयोग कर सकते हैं।
- विभिन्न प्रतिभागी एक ही क्षेत्र के भिन्न–2 मानचित्र बना सकते हैं और वह ठीक है यह समुदाय के विभिन्न लोगों की चर्चित विषय पर टिप्पणी को प्रदर्शित करता है।
- इस अभ्यास को शुरू करने से पहले, यह चर्चा करें, कि मानचित्र का प्रयोग कैसे होगा। यह प्रतिभागियों को सुखद बनायेगा और वे अधिक रूचि के साथ स्वच्छन्दता से अपनी जानकारी बाटेंगे।
- याद रखें कि आप मानचित्र को नियन्त्रित नहीं कर रहे हैं, आप लोगों को विश्वास दें कि वे खुद को क्रमशः इस पूरी प्रक्रिया में ले जाएँ तथा उन लोगों को प्रोत्साहित करें जो भाग नहीं ले रहे हैं।
- आप तभी हस्तक्षेप करें जब छूटे हुए लोगों को शामिल कराना जरूरी हो जाए, जैसे कि वे महिलाएं जो कि अभ्यास को देख रही हैं उनसे पूछे कि क्या इस प्रदर्शित स्थान में कहीं उनका घर, जानवर या कोई अन्य आवश्यक जगह दिखाया गया है। उनसे प्रयोग किए गए चिन्हों, निशानों और प्रत्येक विषय/सामग्री के बारे में पूछें उनके नजरिये की महत्ता के बारे में समझिए।
- उन अलग–अलग लोगों से मानचित्र पर चर्चा करें जो कि पशु कल्याण पर भ्रमण (Transect Walk) कर रहे हों, यह देखने के लिए कि क्या इसने जमीनी सच्चाई दर्शाई है या नहीं।
- मानचित्र यह भी दिखाता है कि चीजें पहले कैसे दीखती थी, वर्तमान में कैसे दीखती हैं और लोग अपने समुदाय को भविष्य में कैसा देखना चाहते हैं। पशु कल्याण क्षेत्र में आये हुए बदलाव तथा कार्यरत पशुओं और पशु मालिकों के लिए उपलब्ध संसाधनों तथा सेवाओं के लिए हस्तक्षेप के पश्चात् एवं पहले का भी मानचित्र बनाया जा सकता है।

टी–2 गतिशीलता मानचित्रण

कार्यरत पशुओं का संचलन

यह क्या है

गतिशीलता मानचित्र एक ऐसा रेखाचित्र है जो लोगों का उनके स्थानीय जगहों पर संचलन (MOVEMENT) की स्थिति को दिखाता है और उनके संचलन का कारण दिखाता है। यह टूल मानक (STANDARD) गतिशीलता मानचित्र और सेवाएं एवं अवसर मानचित्र से लिया गया है, जिसमें कि कार्यरत पशुओं के संचलन (गतिशीलता) के तरीके को सम्मिलित किया गया और यह उनके कल्याण को कैसे प्रभावित कर रहे हैं को दर्शाया गया है।

उद्देश्य

गतिशीलता मानचित्र हमें यह समझने में मदद करता है कि लोग अपने कार्यरत पुशओं के साथ कहॉ जाते हैं और क्यों जाते हैं। गतिशीलता मानचित्र कार्यकारी पशुओं के कल्याण पर गतिशीलता/पशु के संचलन के प्रभाव पर चर्चा एवं विश्लेषण हेतु प्रयोग करते हैं तथा पशु की समस्याएं उसके मालिक के जीवन को कैसे प्रभावित करती है का भी विश्लेषण करते हैं।

सेवाओं एवं संसाधनों का स्थान

गतिशीलता मानचित्र अक्सर सेवाओं और संसाधनों के कार्य स्थल (LOCATION) को दर्शाने पर केन्द्रित होता है। इसमें पशु का उनके कार्यक्षेत्र में चलना तथा कार्य करते समय उनके द्वारा तय की गयी दूरी सम्मिलित है यह विभिन्न सेवाओं और संसाधनों की दूरी को कैद करता है (CAPTURE)। यात्रा की संख्या और एक यात्रा के लिए अपेक्षित समय जैसे कि पशु चिकित्सा सम्बन्धी मदद लेना, घोड़े की साज सामग्री की मरम्मत, पशुओं के लिए चारा इकट्ठा करना अथवा उन्हें पानी के लिए या चराने ले जाना आदि शामिल होता है।

अवसर मानचित्र

गतिशीलता मानचित्र को एक अवसर मानचित्र के रूप मे विस्तृत कर सकते हैं, जिसमें सेवादाताओं और उपलब्ध संसाधनों तथा संभावित संसाधनों की खोज करना जो क्षेत्र में उपस्थित है, लेकिन प्रयोग में नहीं है पर सामुदायिक अवबोधन (समझ) सम्मिलित हो सकते हैं। प्रत्येक संसाधन और सेवाओं की महत्ता, मूल्य, गुणवत्ता उपलब्धता एवं पहुॅचता अवसर के लिए, मानचित्र पर पशु एवं पशु मालिक दोनों को उपलब्धित सेवाओं की गुणवत्ता को देखा जा सकता है।

आप इसे कैसे करेगें	
पायदान 1	व्यक्ति और छोटे समूह इस मानचित्र को अपने लिए या अपने गांव के विशिष्ट व्यक्तियों के लिए बना सकते हैं। पहले प्रतिभागियों से उन स्थानों की सूची बनाने को कहें जहाँ पर वे अपने पशुओं के साथ जाते हैं, जिसमें कार्य की जगह, नालबंदी सेवाएं, पशु के लिए साज खरीदने और उसके लिए राशन व चारा इकट्ठा करना, सम्मिलित कर सकते हैं। गांव के मध्य में लोगों के साथ चार्ट पेपर पर अथवा जमीन पर एक मानचित्र तैयार करें।
पायदान 2	एक समय पर एक ही प्रतिभागी के साथ कार्य करें। प्रत्येक व्यक्ति के लिए विभिन्न चिन्हों का प्रयोग कर मानचित्र में उनके स्थानों को जोड़िए तथा उनसे यात्रा के कारण बारम्बारता के विषय में वार्ता करिये। यात्रा करने में बीता हुआ समय एवं उसकी दूरी के बारे में पूछिए। उनके घरों अथवा गांव के मध्य भाग से प्रत्येक लक्ष्य (स्थान) की तरफ रेखा खींचिए। विभिन्न रंगों अथवा विभिन्न प्रकार की रेखाओं का प्रयोग करके (जैसे बिन्दु रेखा) यात्रा के विभिन्न कारणों के संकेत के लिए जैसे रेखा की मोटाई वहां की यात्रा करने की बारम्बारता दर्शा सकती है। जैसा कि एक मोटी रेखा का मतलब है रोजाना और पतली रेखा का मतलब है कभी–कभी, दूरी को रेखा की लम्बाई से अथवा रेखा के बगल में लिखकर दिखाया जा सकता है, पत्थरों और बीजों का प्रयोग करके यात्रा का समय भी दर्शाया जा सकता है।
पायदान 3	गतिशीलता मानचित्र के अन्दर ही एक अवसर मानचित्र को विस्तारित करें पशुमालिक एवं पशु के लिए प्रत्येक संसाधन एवं सेवादाता की पहुँच, उपलब्धता, गुणवत्ता एवं महत्व के बारे में चर्चा को सुगमता दीजिए इन सभी को पत्थर, बीज एवं पत्तियों द्वारा मानचित्र पर दर्शाइए, जैसे कि महत्ता को पत्थरों द्वारा दर्शाइए और उपलब्धता और सुगमता को विभिन्न पेड़ों की पत्तियों द्वारा दर्शाइये।
पायदान 4	समूह को गतिशीलता मानचित्र पर क्या प्रदर्शित है का विश्लेषण करने हेतु प्रोत्साहित करें। और उनके कार्यकारी पशुओं के कल्याण और गतिशीलता (MOVEMENT) के बीच के सम्बन्ध को देखें। उन कारणों पर चर्चा कीजिए जो खराब कल्याण एवं उसके सुधार के किसी भी अवसर पर सहयोग/योगदान कर रहा है।

सुगमकर्ता के लिए टिप्पणी :– गतिशीलता मानचित्रण

- पशु कल्याण के सन्दर्भ में हमें सड़को और रास्तों की गुणवत्ता के बारे में बात करना मनोरंजक लगता है। यह शायद एक पशु की बुग्गी खींचने और बोझा उठाने की सामर्थ्यता है तथा जिस प्रकार की चोटों और कल्याण दिक्कतों का उसे सामना करना पड़ता है को प्रभावित करता है।
- कार्यकारी पशुओं के नजरिये से सेवा दाताओं की गुणवत्ता का पता लगाया जा सकता है, विचार–विमर्श के द्वारा कि वे पशु का कैसा उपचार करते हैं। उदाहरण के लिए क्या उनका खुरा साफ करने वाला अच्छा है, कहीं वह पशु को डरा तो नहीं रहा है या दर्द तो नहीं पहुँचा रहा।

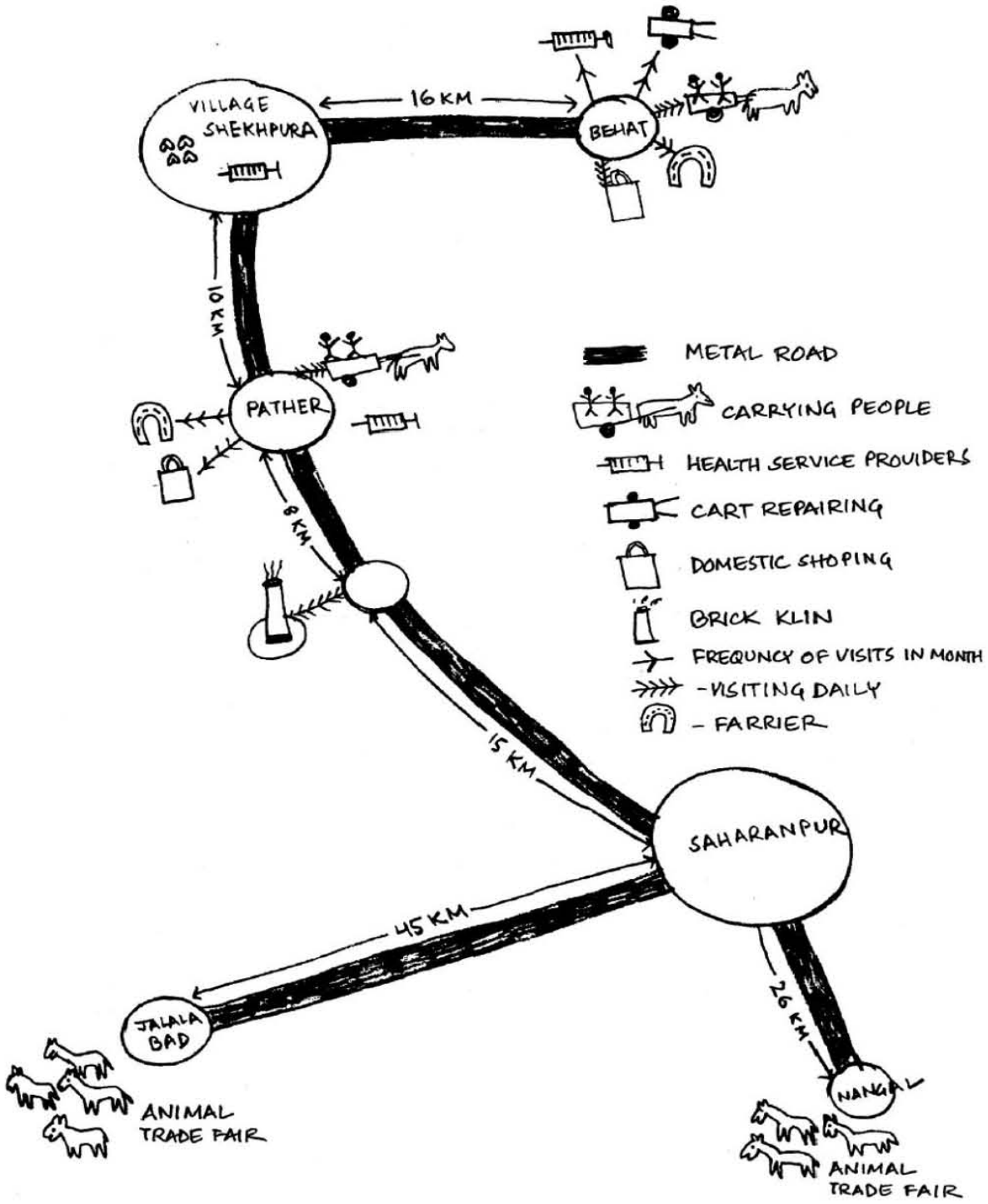

चित्र T2 गतिशीलता चित्रण जो पशु संबंधित सेवाओं एवं संसाधनों को दर्शाता है, शेखपुरा, सहारनपुर, 2008

यह गतिशीलता चित्रण खच्चर मालिकों के समूह द्वारा चित्रित किया गया है। यह दिखाता है कि अधिकांश भ्रमण बेहर एवम् पाथर गॉव से एवम् गॉव को की गई है जिनमें यात्रियों का आवागमन, बुग्गी मरम्मत, घरेलू खरीददारी,नालबंदी एवम् पशु ईलाज शामिल हैं।यह चित्रण काम के समय में भट्ठों के साथ ही नागला एवम् जलालाबाद मेलों में पशुओं के खरीद बिक्री हेतु जाना भी दर्शाता है। मोटी रेखा पक्की सड़क को दर्शाती है।पतली तीर वाली रेखा भ्रमण की संख्या को दर्शाती है।

टी–3 चपाती चित्रण

पशु सम्बंधित सेवा प्रदाता, पशु की बीमारियाँ

यह क्या है

आपसी सम्बन्धों को प्रस्तुत करने के लिए चपाती चित्रण में विभिन्न आकार के गोलों का प्रयोग किया जाता है।मूल रूप में यह समुदाय तथा अन्य व्यक्तियों या संस्थाओं के मध्य सम्बन्ध दर्शाने के लिए प्रयोग किया जाता है। यहाँ पर इसका प्रयोग पशु मालिक व विभिन्न पशु आधारित सेवा प्रदाताओं के मध्य सम्बन्ध दर्शाने के लिए किया गया है। हमने इसका प्रयोग पशु की बीमारियों का प्रभाव देखने के लिए भी किया है।

उद्देश्य

सेवा प्रदाता चपाती चित्रण

यह टूल (चित्र T3) पशु मालिकों को उनके आस पास उपलब्ध सेवा प्रदाताओं को पहचान ने में मदद करता है चाहे वह नालबंद, सुमको बनाने वाला, बाल काटने वाला, दाना बेचने वाला अथवा स्थानीय चिकित्सक हों। यह प्रतिभागियों को विभिन्न सेवा प्रदाताओं के साथ उनके सम्बन्धों तथा सेवा प्रदाताओं की उपयोगिता, उपलब्धता, कीमत, गुणवत्ता तथा महत्व को अपने जीवन व पशुओं के कल्याण के संदर्भ में विश्लेषण करने में मदद करता है।

पशु बीमारी चपाती चित्रण

इस से गांव में पशुओं की बीमारी की स्थिति का विश्लेषण किया जा सकता है। इस विश्लेषण में पशु केन्द्र बिंदु होता है।

इसे कैसे कर सकते हैं	
प्रथम चरण	सेवा प्रदाता चपाती चित्रण सहभागियों से पूछकर उन सभी सेवा प्रदाताओं की एक सूची बनाइये जो उनके जीवन या पशु पर प्रभाव डालते हैं। अब इनको इनके योगदान के आधार पर प्राथमिकता के अनुसार सब से महत्वपूर्ण व क्रमानुसार सूची बद्ध कीजिये। अब सहभागियों से कहिये कि वह केन्द्र में एक पशु (या गांव अथवा समूह के लिए कोई चिन्ह) बनायें। प्रत्येक सेवा प्रदाता को कागज, पत्थर या चाक द्वारा प्रदर्शित कीजिये।वृत्त का आकार सेवा प्रदाता की महत्ता के आधार पर बड़ा या छोटा रखिये।सबसे अधिक महत्वपूर्ण सेवा प्रदाता के लिए सबसे बड़ा वृत्त व सबसे कम महत्वपूर्ण सेवा प्रदाता के लिए सबसे छोटा वृत्त। प्रतिभागियों से इन गोलों को केन्द्र में बने पशु के पास रखने के लिए कहिये।प्रत्येक गोले पर सेवा प्रदाता का नाम लिखें।
द्वितीय चरण	सहभागियों से पूछें कि वह किस सेवा प्रदाता के साथ अच्छे सम्बन्ध रखते हैं और क्यों ? सहभागियों के सेवाप्रदाता के साथ सम्बन्धों के आधार पर गोलों को केन्द्र के पास या दूर व्यवस्थित कीजिये । हम पाते हैं गोलों को व्यवस्थित करने में बहुत तर्क–वितर्क होता है एक विकल्प यह भी है कि सेवाप्रदाता के गोलों को उनकी उपलब्धता के आधार पर भी स्थित करते हैं। इसको पत्थरों या बीजों द्वारा भी किया जा सकता है उदाहरण के लिए स्थानीय चिकित्सक की कीमत, गुणवत्ता या उसके उपयोग के आवृत्ति को मापा जा सकता है।

तृतीय चरण	चपाती चित्रण के पूरा होने पर सहभागियों को आपस में चर्चा करने को प्रोत्साहित कीजिये और कुछ सवाल पूछिए जैसे :– • आप अपने समुदाय में सेवा प्रदाता की भूमिका के बारे में क्या महसूस करते हैं? • सेवा प्रदाता किस तरह आपकी मदद करते हैं? • आप किस तरह से उन से सन्तुष्ट या असन्तुष्ट हैं ? • वह किस तरह से और बेहतर तरीके से आपकी व पशुओं की सेवा कर सकते है? • आप उनकी सेवाओं को बेहतर बनाने के लिए उनकी क्या मदद कर सकते हैं?
चतुर्थ चरण	पशु बीमारी चपाती चित्रण उपरोक्त चरणों का पालन कीजिये, किन्तु प्रत्येक गोले के आकार द्वारा, पशु को प्रभावित करने वाली बीमारी की सापेक्षिक महत्ता को प्रदर्शित कीजिए कि उस बीमारी का पशुपर कितना खतरनाक प्रभाव पड़ता है। केन्द्र से गोले की दूरी द्वारा यह प्रदर्शित कीजिए कि बीमारी के आने की आवृत्ति क्या है। पत्थर या बीजों द्वारा यह दिखाया जा सकता है कि बीमारी के इलाज या बचाव पर कितना खर्च आता है तथा पशुमालिक व उसके परिवार पर क्या प्रभाव पड़ता है। चर्चा में निम्न बिंदु शामिल किये जा सकते है:– • बीमारी पशु को कैसे प्रभावित करती है ? • उसके क्या लक्षण होते है? • प्रत्येक बीमारी पशु मालिक व उसके परिवार को कैसे प्रभावित करती है? • यह पूरे समुदाय को कैसे प्रभावित करती है? • बीमारी के इलाज के लिए क्या किया जा सकता है ? • बीमारी से बचाव के लिए क्या किया जा सकता है ?

चपाती चित्रण के बारे में सुगमकर्ता हेतु टिप्पणी

- इसको बहुत बार गतिशीलता मानचित्रण के जैसा समझ लिया जाता है (T2) यदि कागज के गोले का प्रयोग कर रहे हैं तो उनको पहले से काटकार रखा जा सकता है। विभिन्न रंग के गोले का प्रयोग करने से और भी अच्छा रहेगा।
- स्थानीय उपलब्ध संसाधनों का भी प्रयोग किया जा सकता है जैसे केले के पेड़ की पत्तीयों का प्रयोग।
- गोलों को जमीन पर रंगीन चाक या लकड़ी की छड़ी द्वारा भी बनाया जा सकता है।
- गोले बनाने के लिए एक प्लेट में रखे गए बीजों का प्रयोग भी किया जा सकता है। अनुपात दर्शाने कि लिए बीजों का विभाग भी किया जा सकता है, यदि प्रतिभागियों का मन बदलता है तो वह प्रत्येक गोले का आकार भी बदल सकते हैं।
- समुदाय सेवाओं के बारे में क्या सोचता व समझता है इसको गहराई से जानने के लिए–विभिन्न समूहों जैसे पुरूष, महिला या बच्चों पर सेवाओं की गुणवत्ता की जाँच कर सकते हैं।

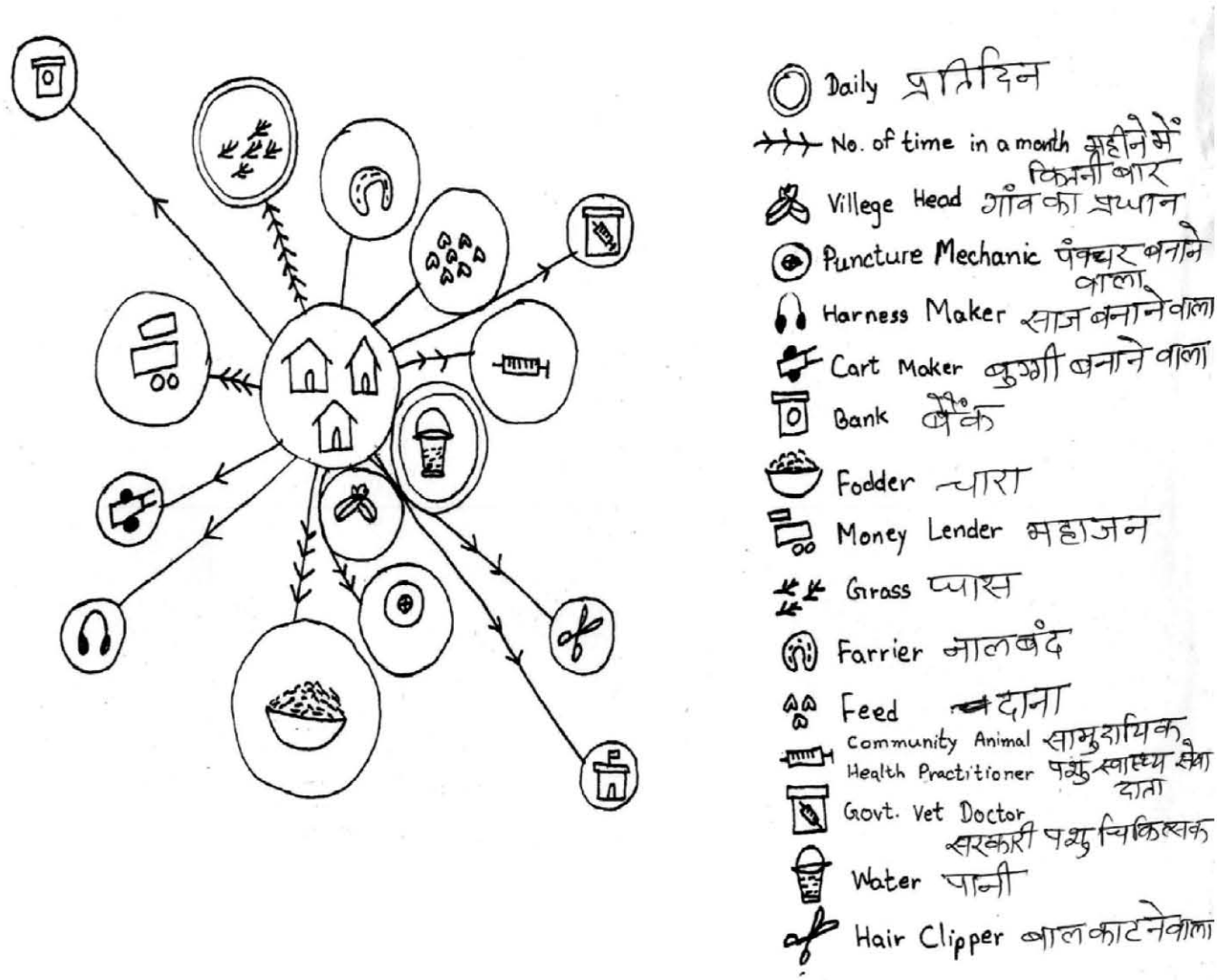

चित्र T 3 : पशु आधारित सेवा प्रदाता व संसाधनों के साथ किया गया चपाती चित्रण, उत्तर प्रदेश का एक गांव, भारत (2006)

केन्द्र का गोला गांव को प्रदर्शित करता है। बाहर के गोले पशु मालिकों द्वारा प्रयोग किये जाने वाले सेवाओं तथा संसाधनों के सापेक्षिक महत्व (गोलों के आकार के अनुसार) को दर्शाते हैं। इसचित्र में बाहर के गोले केन्द्र से विभिन्न दूरियों पर पहुँच के आधार पर स्थापित किये गए हैं। उदाहरण के लिएः सरकारी पशु अस्पताल एक छोटे से गोले द्वारा और दूर रखा गया है, क्योंकि पशु मालिक सोचते हैं कि उनकी सेवाएं कम गुणवत्ता युक्त हैं तथा सरकारी चिकित्सक अक्सर अस्पताल में नहीं मिलता है। तीर का निशान यह दिखाता है कि पशुमालिकों की इन सेवाओं के प्रयोग की आवृत्ति क्या है।

टी–4 दैनिक गति विधि

कार्य करने वाले पशुओं के साथ

यह क्या है

यह एक चार्ट है जो दर्शाता है कि कैसे व्यक्ति तथा पशु अपना समय खर्च करते है। दिन में क्या–क्या गति विधियां होती हैं और प्रत्येक गति विधि में कितना समय खर्च होता है। हमने इस टूल (Kumar 2002) का प्रयोग पशुओं व उनके मालिकों के जीवन के बारे में बताने के लिए किया है।

उद्देश्य

दैनिक गति विधि से दिन के महत्वपूर्ण समय के बारे में पता चलता है कि कब लोग अपने कार्य में अधिक व्यस्त रहते हैं या कब उनके पास अपनी समस्याओं के बारे में बात करने के लिए समय होता है। इसका प्रयोग योजना बनाने के लिए भी किया जा सकता है कि पशु कल्याण के लिए की जाने वाली गति विधियों को कब किया किया जाये, समुदाय के साथ मीटिंग कब की जाये या कार्य कर्ता गांव में किस समय जाये।

पशु मालिकों का दैनिक गतिविधि चित्रण

यह चार्ट (चित्र T4a) दिखाता है कि किस तरह पशु को इस्तेमाल करने वाले तथा अन्य चालक आदि अपना समय खर्च करते हैं। इससे यह समझने में मदद मिलती है कि परिवार कि विभिन्न सदस्यों की पशुओं के प्रति क्या भूमिका व जिम्मेदारियाँ हैं। इसे उन विभिन्न कारकों के विश्लेषण के लिए भी प्रयोग किया जा सकता है जो व्यक्तियों की भूमिका या गतिविधियों को प्रभावित करते हैं और उनको पशुओं की देख भाल करने में क्या परेशानियाँ आती हैं को दर्शाती है।

पशु का दैनिक गति विधि चित्रण

यह चार्ट(T4b)दिखाता है कि कैसे पशु कार्य करने वाले मौसम में व जब उनके पास काम नहीं होता है, अपना समय व्यतीत करते हैं। इसके द्वारा पशु के दृष्टि कोण से दैनिक गतिविधियों को देखा जा सकता है और कोशिश की जा सकती है कि, कहाँ उनके कल्याण को सुधारा जा सकता है, जैसे कि पशुओं के आराम करने या चरने के समय को बढ़ाया जा सकता है।

इसे कैसे करेंगे	
प्रथम चरण	इस अभ्यास के बारे में सहभागियों को बताइये। सर्वोत्तम दैनिक गतिविधि चार्ट तब बनता है जब वह व्यक्तिगत रूप से या छोटे समूह द्वारा बनाये जाएँ। इसलिए बड़े समूह को छोटे–छोटे समूहों में जैसे पुरूष महिलाएं व बच्चों में विभाजित किया जा सकता है।
द्वितीय चरण	ठोस बात के साथ चर्चा की शुरूआत कीजिये कि व्यक्ति या समूह या पशु सुबह जागने से लेकर रात को सोने तक क्या क्या गतिविधियां करते हैं। उनको इन गतिविधियों को क्रमानुसार लगाने के लिए कहिये।
तृतीय चरण	इस बात पर सहमति बनायें कि किसकी गतिविधि को चार्ट पर सबसे पहले लिखा जाये। यह पशु मालिक, परिवार के सदस्य, पशु या पशुओं के समूह की हो सकती है। इस बात पर सहमति बनायें कि क्या समय को दर्शाने के लिए एक घड़ी बना सकते हैं या एक रेखा चार्ट

	बना सकते हैं। यह तय करें कि समय को घंटों में दिन के प्रत्येक समय के सामने गति विधि को संकेतों अथवा चिन्हों के द्वारा दिखाया जा सकता है।
चतुर्थ चरण	दैनिक गति विधि चित्रण की चर्चा करने में निम्न मुख्य बिंदु हो सकते हैं: • खाली समय व कार्य करने वाला समय। • वह समय जब कार्य का अधिक भार होता है। • वह समय जब पशुओं को चारा दिया जाता है या पशुओं के रहने के स्थान को साफ किया जाता है। • पशुओं को चराने के लिए कब ले जाते हैं ? • कब पशुओं का खुरेरा किया जाता है और कब सुम की सफाई की जाती है? • किस गति विधि को वह कितना पसंद और ना पसंद करते हैं ? • पशु मालिक अपने समय को दिन भर में जिस तरह से खर्च करते हैं उसके बारे में वह क्या सोचते हैं? • इसके अतिरिक्त सहभागियों से कहें कि वह अन्य गतिविधियों में व्यक्तिगत या सामूहिक रूप से भाग लें।

दैनिक गतिविधि चित्रण के बारे में सुगमकर्ता के लिए टिप्पणी

- असल जीवन के अनुभवों को जानने के लिए दैनिक गतिविध एक उपयोगी व तालमेल बढ़ाने वाला अभ्यास है।
- आप यह भी चर्चा कर सकते हैं कि दैनिक गतिविधियां किस तरह मौसम के अनुसार बदल जाती हैं।

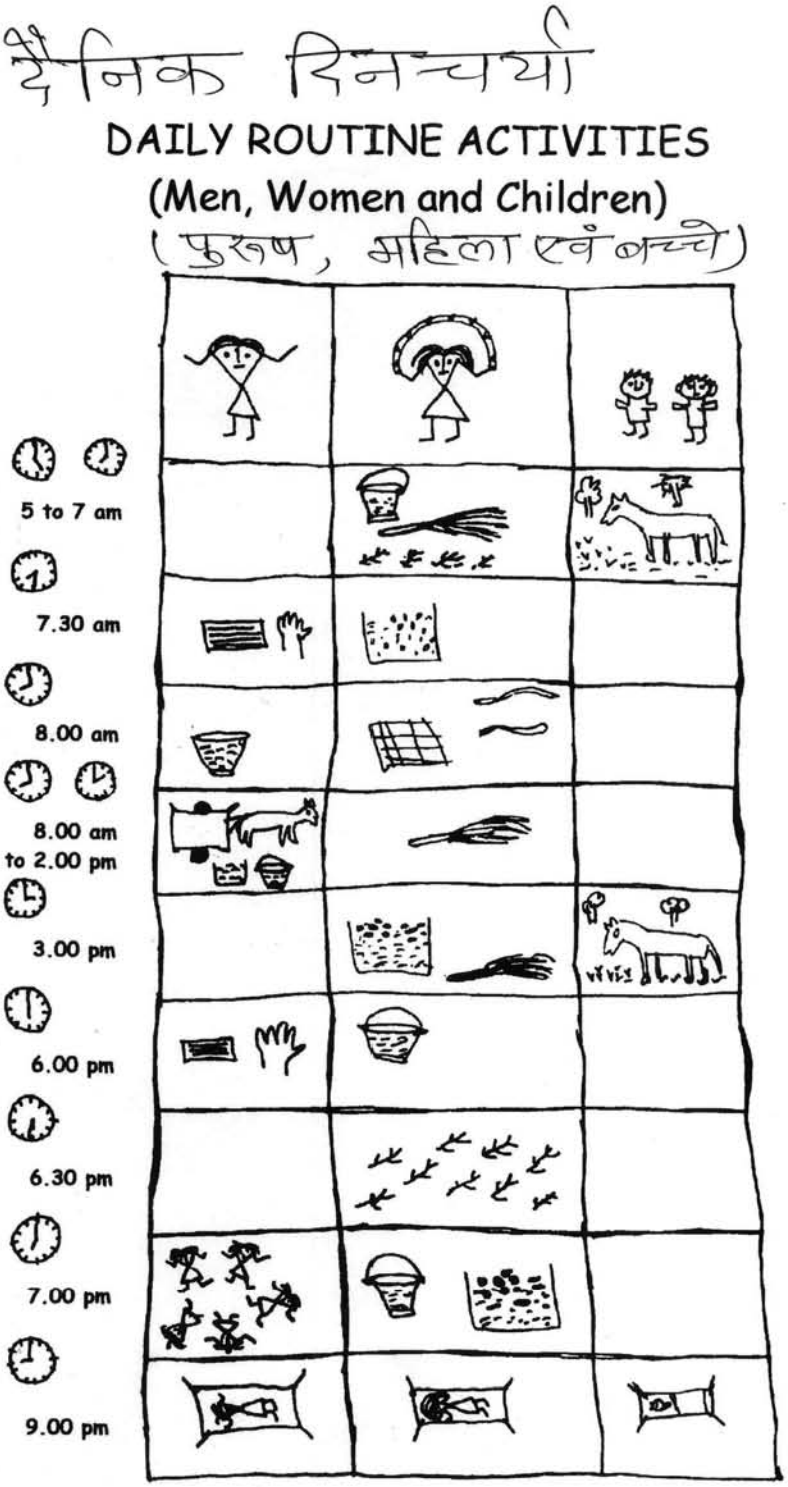

चित्र **T4a** पशु रखने वाले समुदाय का एक दैनिक गति विधि चित्रण, गाजियाबाद, उत्तरप्रदेश, भारत(2008)

इस अभ्यास में पुरूषों, महिलाओं व बच्चों ने उन सभी गतिविधियों को सूचीबद्ध किया है जो वह सुबह 5 बजे से लेकर रात के नौ बजे तक करते हैं। महिलाएं सुबह 5 से 7 बजे के मध्य पशुओं के स्थान की सफाई करती हैं व उनको पानी पिलाती हैं। पुरूष पशुओं को सुबह 8 बजे के लगभग चारा आदि खिलाते हैं व कार्य करने के लिए पशुओं को बाहर लेकर जाते हैं। महिलाएं दिन में कई बार पशु को खाना खिलाती हैं, पानी पिलाती हैं व सफाई करती हैं जबकि पुरूष सिर्फ सुबह 8 से दोपहर के 2 बजे तक अपने पशुओं के साथ रहते हैं। बच्चे पशुओं को चराने के लिए शाम के 3 से 6 बजे तक लगे रहते हैं। इससे परिवार के सदस्यों की पशु के रख रखाव में जिम्मेदारियों व भूमिका की चर्चा की शुरूआत होती है।

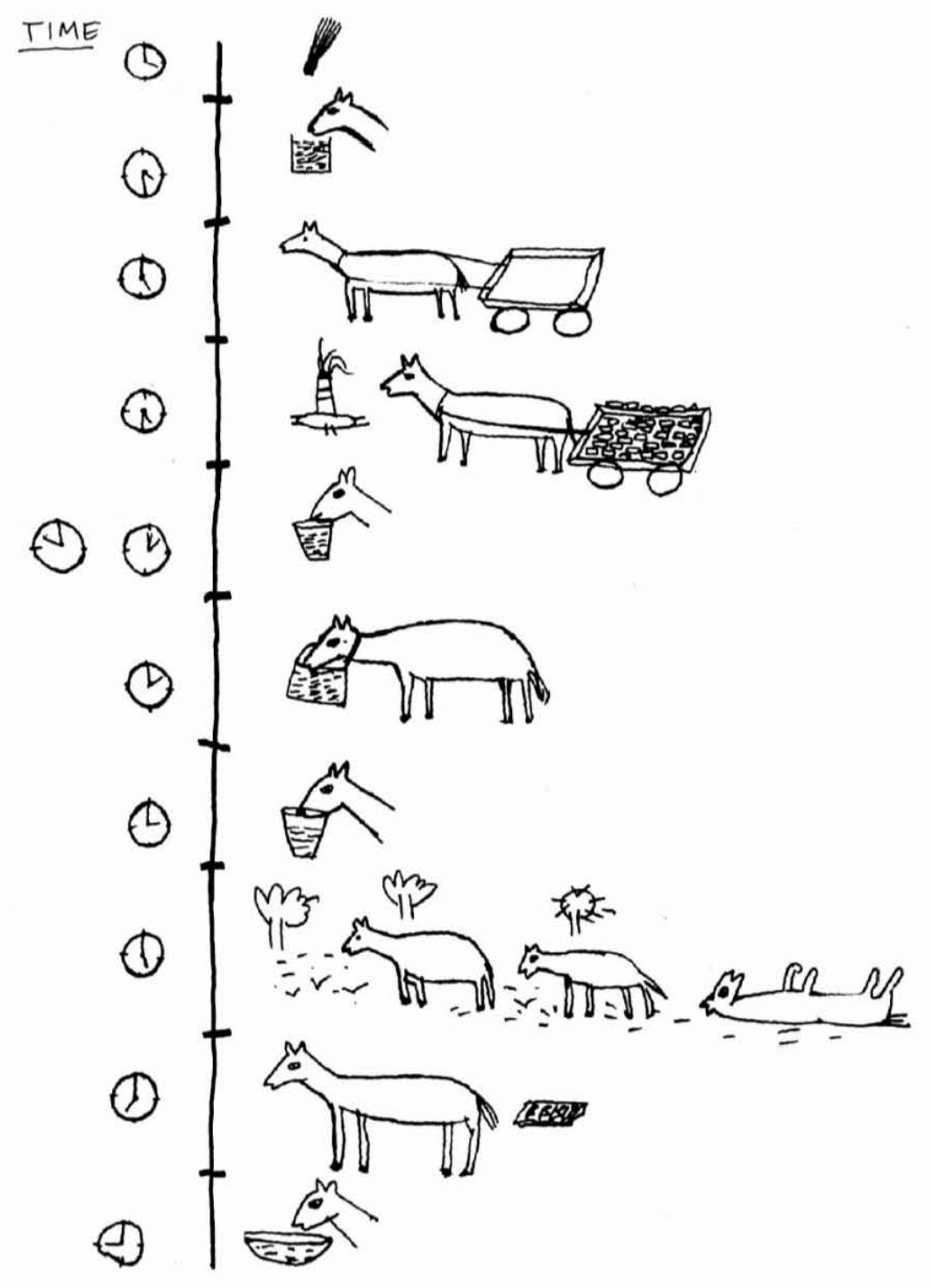

चित्र **T4b** पशु रखने वाले समुदाय का एक दैनिक गति विधि चित्रण, मेरठ, उत्तर प्रदेश, भारत (2008)

यह अभ्यास भट्ठों पर कार्य करने वाले पशु मालिकों के साथ, पशु कल्याण के मुद्दों पर बातचीत शुरू करने के लिए किया गया।पशु ईंटो की ढुलाई के लिए प्रयोग किये जाते हैं। दिन की शुरूआत सुबह 4 बजे से खाने की खोर की सफाई के साथ होती है। उसके बाद 4.30 बजे खाना खिलाया जाता है। 7 बजे पशुओं पर काठी कसी जाती है और 7.30 बजे से पशु भट्टे पर कार्य करना शुरू कर देते हैं। पानी सुबह 10 बजे, दोपहर को 3 बजे पिलाया जाता है जब पशु लौटते हैं । दोबारा खाना कार्य खत्म होने के बाद लगभग 2 बजे खिलाया जाता है। शाम 3 से 6 बजे के मध्य पशु चरते हैं व लोट पोट करते हैं। शाम को 7 से 8 बजे के मध्य खुरेरा मालिश की जाती है और दिन का अंतिम खाना रात में 8 से 9 बजे के मध्य दिया जाता है।

टी–5 जेन्डर गति विधि विश्लेषण

यह क्या है

यह महिला व पुरूषों तथा लड़कों व लड़कियों द्वारा किये जाने वाले पशु के कार्यो को दर्शाता है। यह जेन्डर गतिविधि कलैंडर (Thomas – Layter et al. 1995) से लिया गया है।

उद्देश्य

जब हम पशु रखने वाले समुदायों के साथ कार्य करते हैं तो स्वाभाविक रूप से पुरूषों या लड़कों पर ज्यादा ध्यान केंद्रित करते है क्यों कि वह पशुओं के साथ अधिक समय तक रहते हैं तथा अधिक कार्य करते हैं। पशु के कल्याण को प्रत्येक पहलू में बढ़ाने के लिए हमें महिलाओं व लड़कियों के साथ काम करने की भी जरूरत है जो घर पर पशु की देखभाल करती हैं। जेन्डर गतिविधि विश्लेषण व जेन्डर नियंत्रण टूल (T10) दोनों से, महिलाओं व लड़कियों के पशु के बारे में भूमिकाओं को बेहतर तरीके से समझने में मदद करती है।

यह टूलचित्र (T5) एक ही घर में औरतों व परूषों के कार्यों में फर्क को बताता है। यह निम्न उद्देश्य के लिए प्रयोग किया जा सकता है:

- शुरूआत की एक गतिविधि जिसके द्वारा हम महिलाओं को पशु कल्याण से जोड़ सकते हैं
- सहभागी पशु कल्याण आंकलन की प्रक्रिया की शुरूआत कर सकते हैं
- यह सुनिश्चित करते हैं कि पशु कल्याण से सम्बंधित बातें घर के प्रत्येक सदस्य तक पहुँच गयी हैं।

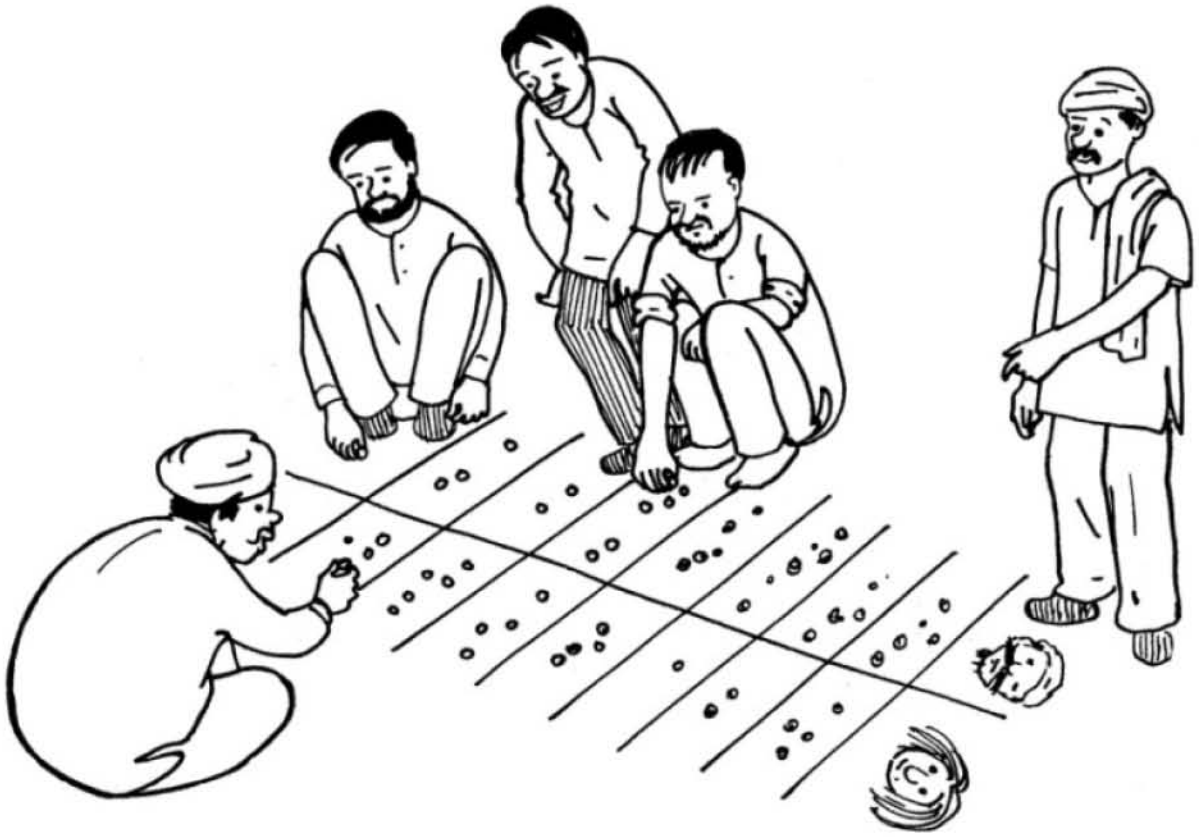

इसे कैसे करें	
प्रथम चरण	इस अभ्यास के बारे में सहभागियों को बताईये। सर्वोत्तम जेन्डर गति विधि विश्लेषण तब होता है जब इसको छोटे समूह द्वारा किया जाए। हमने यह पाया है कि यह सबसे अच्छा तब कार्य करता है जब अलग–अलग जेन्डर समूहों द्वारा किया जाए तथा प्रत्येक जेन्डर समूह, घर के पुरूष तथा महिलाएं दोनों के कार्य को सूचीबद्ध कर सकता है। इसके बाद दोनों समूह मिलकर एक साथ चर्चा की शुरूआत कर सकते हैं।
द्वितीय चरण	इस से शुरूआत कीजिऐ कि अपने पशुओं के साथ पुरूष व महिलाएं दैनिक, साप्ताहिक व मासिक आधार पर क्या कार्य करते हैं। समूह को इनके कार्यो को चित्रों या संकेतों का प्रयोग करते हुए, चार्ट या जमीन पर लिखने के लिए कहिये।
तृतीय चरण	समूह को यह दर्शाने के लिए कहिये कि किस तरह प्रत्येक कार्य का पुरूष व महिला के मध्य बंटवारा होता है या किस तरह मिलकर किया जाता है और उनका सापेक्षिक सहयोग दर्शाने के लिए दस बीजों या पत्थरों का प्रयोग कीजिये (चित्र 5 T) ।
चतुर्थ चरण	दोनों समूहों के साथ जेन्डर गति विधि विश्लेषण की अलग–अलग चर्चा कीजिये।इसके बाद महिला व परूषों के चार्ट के मध्य के फर्क पर चर्चा करने कि लिए दोनों समूहों से एक साथ चर्चा कीजिये। चर्चा के मुख्य बिंदु निम्न हो सकते हैं • किस गति विधि के लिए कौन जिम्मेदार है और क्यों ? • जब पशु घर पर होता है तब कौन सी, जब पशु बाहर होता है तब कौन सी गति विधि की जाती है ? • कुछ गतिविधियां महिला व पुरूषों द्वारा ही क्यों की जाती हैं? • प्रत्येक गतिविधयों में कितना समय लगता है और कार्य का भार किस तरह बराबर विभाजित होता है ? • पशु कि कौन सी गतिविधि लड़को द्वारा की जाती है और क्यों ? क्या लड़के व लड़कियों द्वारा किए जाने वाले कार्यो में कुछ फर्क है ? • बच्चे, महिला या पुरूष के द्वारा कार्य करने से किस तरह (यदि कुछ पड़ता है तो) पशु के कल्याण पर फर्क पड़ता हैं ? • क्या सहभागी चित्र में दर्शाये गए कार्यो के विभाग में कुछ बदलाव करना चाहेंगे, यदि हाँ तो क्या बदलाव और क्यों ?

सुगमकर्ता की टिप्पणी : जेन्डर गतिविधि विश्लेशण

- पशुओं की देखभाल करना सभी सदस्यों की जिम्मेदारी होती है हलांकि अलग–अलग कार्यो के लिए अलग अलग सदस्य जिम्मेदार होता है।
- लड़के व लड़कियां भी इस विश्लेषण को कर सकते हैं और चित्र 5 में दिखाए गए उदाहरण के अनुसार दो अतिरिक्त कालम जोड़ सकते हैं।

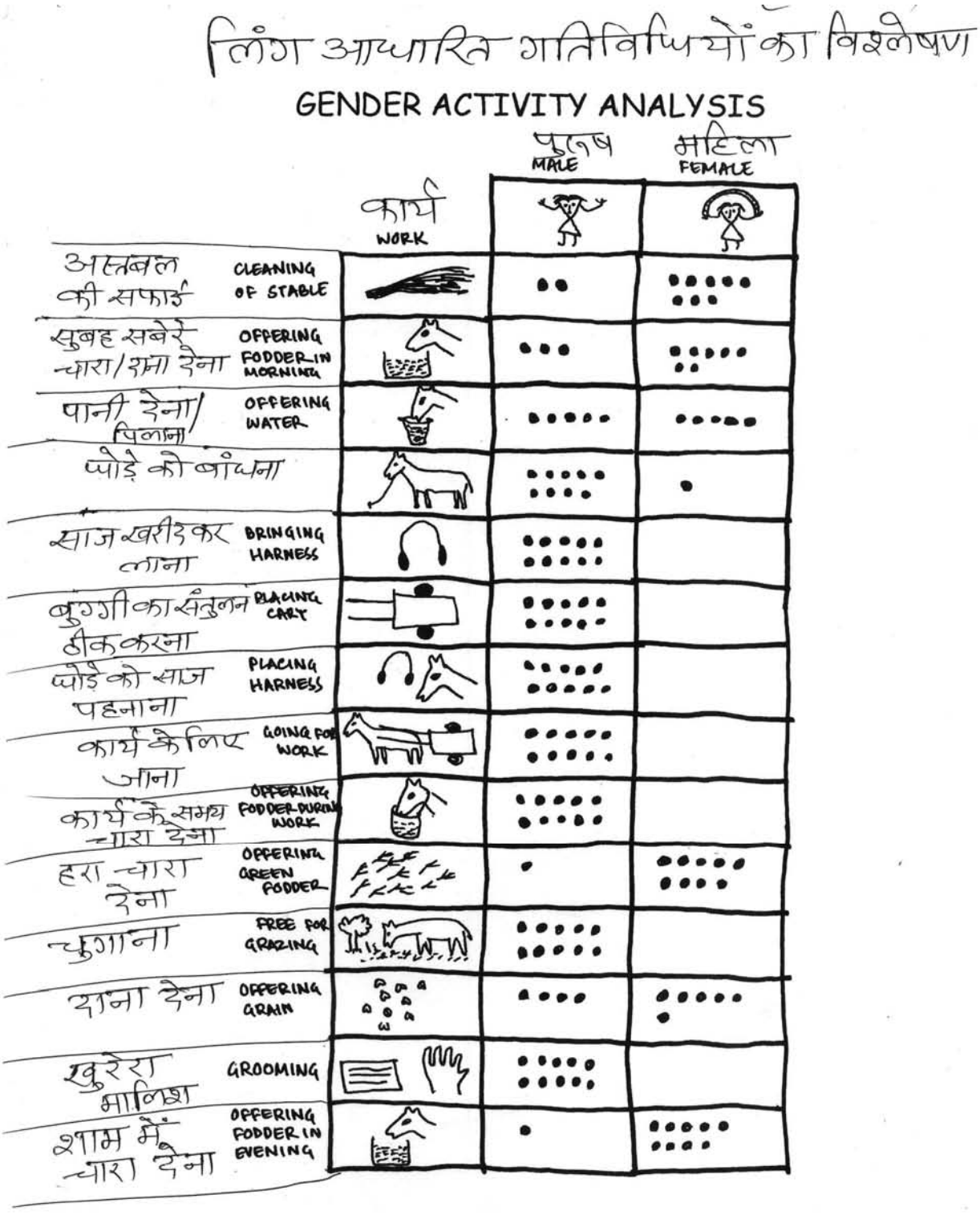

चित्र T5 पशुओं के साथ किये जाने वाले कार्यो का जेन्डर गतिविधि विश्लेषण, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत (2008)

यह चार्ट (चित्र T5) गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत, के एक गांव में महिला एवं पुरूषों द्वारा किये जाने वाले पशुओं के कार्यो के विभाजन को दर्शाता हैं। समूह ने प्रत्येक 14 गतिविधियों के कार्यभार को दर्शाने के लिए 10 पत्थरों का प्रयोग किया है। महिलाओं की पशु के स्थान की सफाई, चारा, दाना व पानी देने की अधिक जिम्मेदारी है। पुरूष, पशु के साथ कार्य करने से जुड़ी प्रत्येक गतिविधि करते है जैसे काठी लगाना, चराने के लिए लेकर जाना व उनको बांधना । सहभागियों ने आपस में चर्चा की कि क्यों कुछ गतिविधियां महिला या परूषों द्वारा ही की जाती है और उनका पशु पर क्या प्रभाव पड़ता है ?

टी–6 कार्य करने वाले पशुओं का मौसमी विश्लेषण

मौसमी बीमारी कैलेंडर

यह क्या है

मौसमी विश्लेषण (मौसमी गतिविधि, मौसमी चित्रण या मौसमी कलेंडर भी कहलाता है) वर्ष भर में होने वाले मौसमी या मासिक परिवर्तनों को दर्शाता है। हमने इस टूल को एक दूसरे समान टूल से बनाया है (कुमार, 2002) जिससे कि कार्य करने वाले पशु तथा उनके मालिकों के सभी पहलू आ जाएँ।

उद्देश्य

इस टूल से समुदाय को समझने में मदद मिलती है कि किस तरह से उनकी आजिविका तथा पशुओं का कल्याण विभिन्न मौसमों में बदलता रहता है और किस तरह यह परिवर्तन एक दूसरे को प्रभावित करता है। उदाहरण के लिए पशुओं के कार्य भार, उपलब्ध भोजन, मौसम में बदलाव आदि के आधार पर इससे समुदाय को पशुओं के कल्याण को सुधारने के लिए क्या करना चाहिए तथा मुश्किल मौसम में कल्याण को खराब होने से कैसे बचाएं, इसकी योजना पहले से बनाने में मदद मिलती है।

कार्य करने वाले पशुओं का तथा उनके मालिकों का मौसमी विश्लेषण

यह विश्लेषण जीवन के विभिन्न पहलुओं पर किया जा सकता है और अंक देने के माध्यम से मौसमी उतार–चढ़ाव को दर्शाया जा सकता है। :

- पशु मालिकों, इस्तेमाल करने वालों, पशु चलाने वालों द्वारा वर्ष में विभिन्न समय पर किये जाने वाले विभिन्न कार्य तथा आजीविका के लिए की जाने वाली गतिविधियाँ
- रोजगार या कार्य की उपलब्धता
- पशु परिवारों का अस्थायी प्रवास का तरीका
- पशुओं का कार्य भार, अधिक कार्य का समय तथा कम कार्य का समय
- पशु के खाने की, चारे की, चराई व अन्य संसाधनों की उलब्धता
- पशुओं की बीमारियाँ
- पशुओं के कल्याण में बदलाव

इसे कैसे करेंगे	
प्रथम चरण	सर्वोत्तम मौसमी विश्लेषण तब होता है जब इसको छोटे या मध्यम आकार के समूह द्वारा किया जाए, इसलिए बड़े समूहों को छोटे समूहों में बांटिये जिससे यह तुलना की जा सके कि कैसे मौसमी परिवर्तन विभिन्न व्यक्तियों को प्रभावित करते हैं। स्थानीय कलेंडर व मौसमी चिन्हों के बारे में चर्चा कीजिये जैसे कि, वर्षा व अन्य मौसम, त्यौहार व धार्मिक समारोह कब होते हैं।सहभागियों से प्रत्येक माह या मौसम की विशेषताओं के बारे में चर्चा कीजिए तथा उनको संकेतों या चिन्ह के माध्यम से अंकित कीजिये।
द्वितीय चरण	वर्तमान मौसम के बारे में और पशुओं के इस मौसम में कार्य के बारे में चर्चा कीजिये। उन पर सहमति बनाईये जिन गतिविधियों, घटनाओं या समस्यों पर चर्चा की जायेगी उन्हें कलेंडर समय रेखा में चिह्नांकित कीजिये। पशु आधारित मुद्दे जैसे बीमारियाँ, चारे की उपलब्धता, पानी, चराई आदि मुद्दों पर बात करने के पहले, समान्य मुद्दों पर बात करना सहभागियों का आसान लग

	सकता है, जैसे कि वर्ष भर में कार्य का प्रकार व आय।
तृतीय चरण	बीजों आदि का उपयोग करते हुए सहभागियों को मौसमी परिवर्तनों को स्कोर करने के लिए उत्साहित कीजिये। जैसे कि जिस माह में अधिक आय होती है उसको अधिक बीजों द्वारा दर्शाया जा सकता है व अगले माह में कम आय कम बीजों द्वारा दर्शायी जा सकती है।
चतुर्थ चरण	मौसमी परिवर्तनों के कारणों के बारे में चर्चा कीजिए। विभिन्न मौसमी घटनाओं, गतिविधियां तथा कार्य करने वाले पशुओं की समस्याओं के आपसी संबंधों को खोजिये। पशु कल्याण के लिए कार्य बिंदु पर या मुश्किल मौसम की तैयारी के कार्य बिंदु के बारे में चर्चा कीजिये।

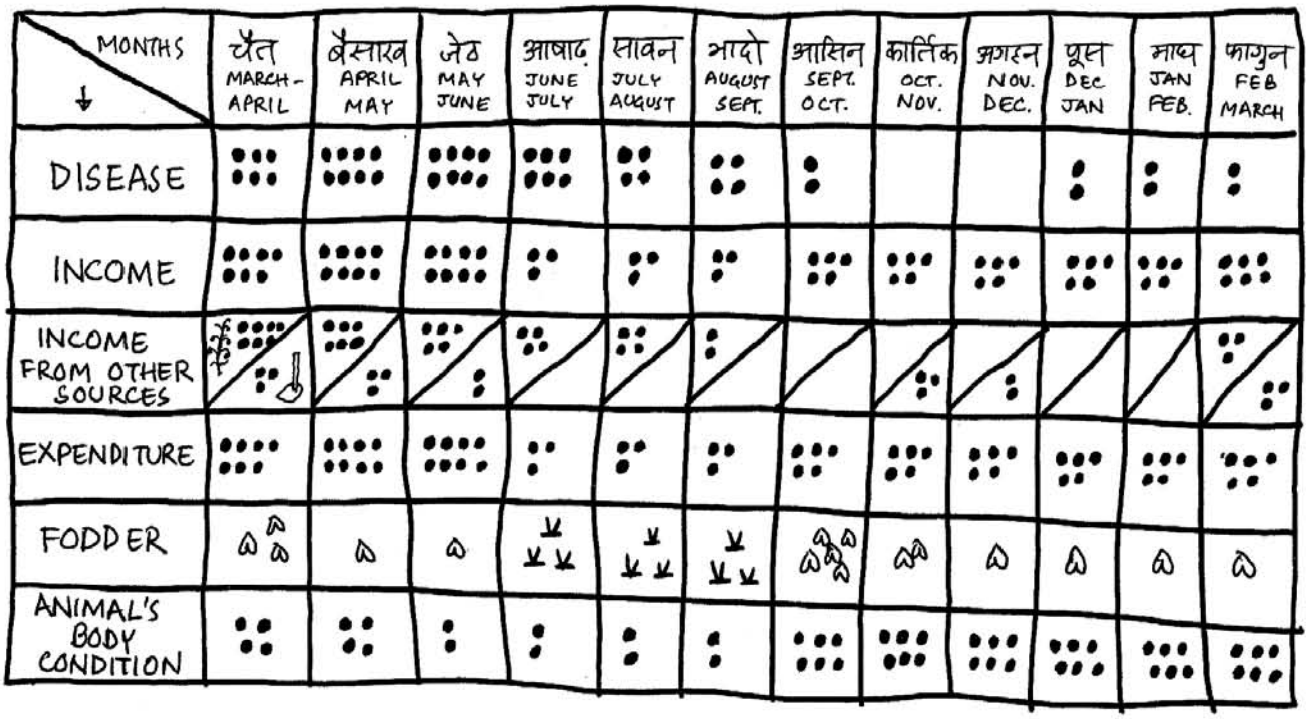

चित्र T6a कार्य करने वाले पशुओं तथा उनके मालिकों का मौसमी चित्रण, भारत (2008)

बीमारी मौसमी चित्रण

इस मौसमी चित्रण (चित्र T 6 b)को किसी एक विशेष क्षेत्र में भी प्रयोग किया जा सकता है जैसे कि पशुओं की बीमारी के आने के तरीके में।

उपरोक्त मौसमी विश्लेषण उन प्रथम अभ्यास में से एक है जो हरदोई, उत्तर प्रदेश में समुदाय के साथ तालमेल बनाने कि लिए की गयी जैसे कि अध्याय 4 में बताया गया है। इस चित्र में दर्शाया गया है कि पशुओं के साथ कार्य करना आय का मुख्य स्रोत है व इसके अतिरिक्त आय के दो और स्रोत हैः मजदूरी करना व कृषि उपज को बेचना। गर्मियों के मौसम में आय सबसे कम रहती है।हरी घास (घास का निशान) सिर्फ वर्षा के मौसम में होती है इसके अतिरिक्त अन्य मौसम में सूखा चारा (दाने का निशान) मिलता है। खाने व बीमारियों के मौसमी कारण तथा पशुओं की शारीरिक स्थिति के आपस के जुड़ाव का समुदाय द्वारा विश्लेषण किया गया : पशुओं का स्वास्थ्य सितम्बर व नवम्बर के महीनों में अच्छा रहा क्योंकि अधिक खाना उपलब्ध था और बीमारियों का जोखिम कम था।

सुगम कर्ता हेतु टिप्पणी : मौसमी कलेंडर

यदि समुदाय द्वारा बारह महीनों का कलेंडर प्रयोग नहीं किया जाता है तो यह महत्वपूर्ण है कि, समुदाय को उनके अपने अनुसार समय को मापने दिया जाये। बीजों आदि द्वारा स्कोरिंग करने के स्थान पर विभिन्न लम्बाई की डंडियों या टहनियों का समय के अनुसार घटते या बढ़ते क्रम को दिखाने के लिए प्रयोग की जा सकती हैं । बीज व डंडियों दोनों का प्रयोग विभिन्न गतिविधियों को दिखाने के लिया किया जा सकता है।

गजियाबाद, उत्तरप्रदेश, भारत के एक गांव में समुदाय के एक समूह द्वारा विकसित होती साझी सोच व सामूहिक दृष्टि कोण के तहत उनके गदहों को प्रभावित करने वाली बीमारियों का मौसमी चित्रण किया गया है (देखें अध्याय 4) तीन विभिन्न मौसमों, सर्दी, गर्मी एवं वर्षा में आने वाली ग्यारह बीमारियों को चिन्हित तथा स्कोरिंग किया गया है। सांस की तकलीफें, पेट दर्द, लंगड़ापन व सुम की बीमारी, अधिकतर सर्दी में होते हैं, जब कि सर्रा, आँख की समस्याएं व सुम की सूजन अधिकतर गर्मी के मौसम में होते हैं, वर्षा में जख्म व सुम की समस्याऐ बड़े मुद्दे हैं। इस विश्लेषण के आधार पर समूह ने यह चर्चा की कि क्यों कुछ समस्याऐं खास मौसम में होती हैं और उनसे कैसे बचा जा सकता है।

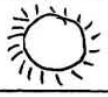

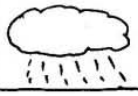

चित्र **T6b** कार्य करने वाले पशुओं के बीमारियों का मौसमी चित्रण, भारत (2008)

टी–7 ऐतिहासिक समय रेखा

क्या है:–

ऐतिहासिक समय रेखा, किसी समुदाय में घटित पिछली घटनाओं को क्रमबद्ध रूप से सूचीबद्ध करता है। यह टूल यदि गांव के बुजुर्ग व्यक्तियों के साथ किया जाये तो ज्यादा अच्छा परिणाम देता है। समुदाय के साथ सम्बंध बनाने हेतु यह एक अच्छा टूल है।

उद्देश्य:–

ऐतिहासिक समय रेखा अभ्यास (चित्र टी–7) आपको तथा भागीदारों को यह समझने का मौका प्रदान करता है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने पिछले इतिहास को कैसे देखता है तथा किन घटनाओं या बदलाव को महत्वपूर्ण समझते हैं। पशु कल्याण के संदर्भ में, गांव में कार्य करने वाले पशुओं का ऐतिहासिक समय रेखा बनाना बहुत ही रोचक है। कुछ महत्वपूर्ण घटनाओं जैसे कि– पहला पशु गांव में कब लाया गया, पशुओं में तेजी से फैली बीमारी, क्षेत्र में पहली मशीनीकृत यातायात का साधन, इत्यादि इसमें शामिल कर सकते हैं।

इसे कैसे करेगें	
चरण–1	शुरूआत पुरानी घटनाओं पर चर्चा तथा कुछ प्रश्नों के साथ करें, जैसे कि – क्या कभी ऐसा समय था जब गांव में काम करने वाला पशु नही था? यदि हां तो कब–2, पहला पशु गांव में कब आया?
चरण–2	जब प्रतिभागी पुरानी घटनाओं को याद करने लगे तो, समूह के एक सदस्य से कहें कि वह उन्हें कार्ड पर लिखें, या जमीन पर निशान या चिन्ह बनाकर उन्हें प्रदर्शित करें। प्रतिभागियों से घटनाओं का निश्चित वर्ष पूछें, या उस वर्ष हुई अन्य महत्वपूर्ण घटनाओं के बारे में पूछें। इससे आपको घटनाओं के निश्चित वर्ष का पता करने में सहायता होगी। ऐसी घटनाओं पर चर्चा करें तथा प्रश्न पूछें, जो कि प्रतिभागियों को स्थानीय कार्य करने वाले पशुओं के इतिहास से सम्बंधित घटनाओं को याद करने में सहायक हो।
चरण–3	इसके पश्चात् प्रतिभागी समूह से कहें कि उन घटनाओं को वर्ष के अनुसार क्रम में क्रमबद्ध करें। सबसे पुरानी धटना सबसे ऊपर तथा सबसे नई घटना सबसे नीचे होगी। जब प्रतिभागी समूह ऐतिहासिक समय रेखा कर लें, तो उन्हें पुनः उसकी जांच करने को कहें, कि क्या सारी घटनायें इसमें आ गई हैं और यह समय रेखा सही है?
चरण–4	उन घटनाओं या बिन्दुओं पर विस्तृत चर्चा करें, जिसमें प्रतिभागियों की रूचि हो। जिन घटनाओं में आपकी रूचि हो उन्हें प्रतिभागियों के सामने लायें, तथा समूह के साथ चर्चा करके इसके इतिहास के बारे में और ज्यादा जानकारी निकालें।

सुगमकर्ता हेतु टिप्पणीः– ऐतिहासिक समय रेखा

- शुरूआत में प्रतिभागियों को घटनाओं को समय (वर्ष) से जोड़ने में समस्या हो सकती है। प्रतिभागी स्थानीय समय प्रारूप का इस्तेमाल कर सकते हैं जो हमारे वार्षिक कैलेंडर से भिन्न होता है।
- आपको अपने निर्णय क्षमता का प्रयोग कर ऐसी विधि का प्रयोग करना होगा कि, प्रतिभागी द्वारा बतायें गये समय को आप और प्रतिभागी दोनों समझ सकें।
- घटनाओं को समय रेखा में याद करना इस अभ्यास का मुख्य उद्देश्य नहीं है। पूरी प्रक्रिया के दौरान जिन बिन्दुओं पर चर्चा होती हो वह ज्यादा महत्वपूर्ण है बनिस्पद ऐतिहासिक समय रेखा के, जो कि बहुत कम सूचनायें उपलब्ध कराता है। समय रेखा बनाते समय पशु सम्बंधी जो महत्वपूर्ण मुद्दे निकल कर आते हैं, उन्हें इस प्रतिभागी समूह में आगे के लिए खोज या चर्चा होती रख सकते हैं।

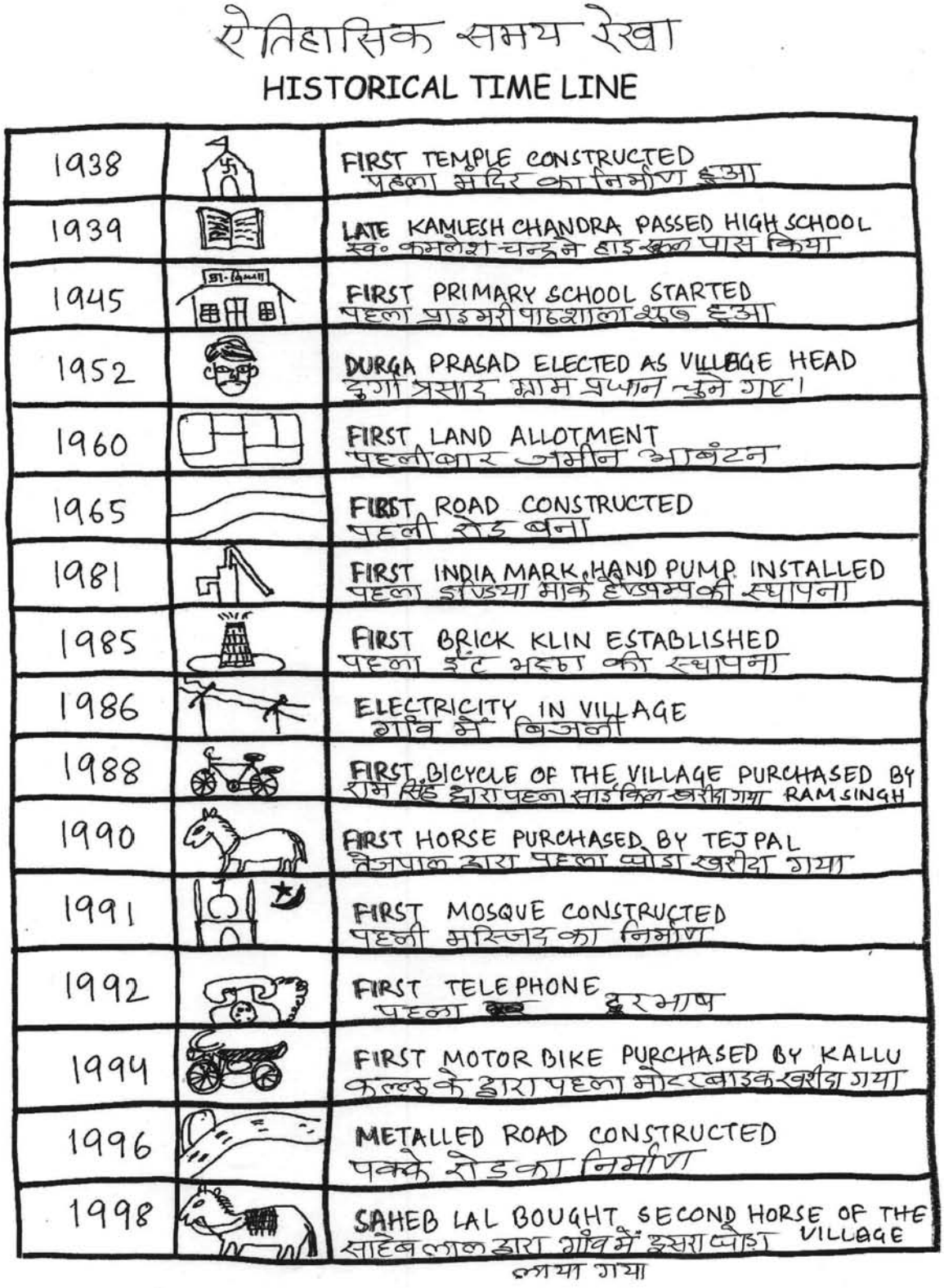

चित्र टी–7 ऐतिहासिक समय रेखा, ग्राम–सुन्नी, जिला–हरदोई, यू0पी0 (भारत) पशु सम्बंधित महत्वपूर्ण घटनायें

ऐतिहासिक समय रेखा (चित्र संख्या टी–7) की शुरूआत सन् 1938 से हुई है, जब उत्तर प्रदेश के जिला हरदोई के ग्राम सुन्नी में पहला मंदिर बना। गांव में पहला घोड़ा तेजपाल ने 1990 में खरीदा था, तथा दूसरा घोड़ा साहिब लाल द्वारा 1998 में खरीदा गया था। यह अभ्यास, प्रथम चरण में समुदाय के साथ प्राथमिक बातचीत करने (नब्ज को महसूस करना (पाठ–4) तथा पशु स्वामित्त्व एवं गांव में उसके उपयोग पर रूचिकर चर्चा करने के लिए की गई थी।

टी–8 जोड़ावार रैंकिग तथा स्कोरिंग

यह क्या है

यह टूल एक मैट्रिक्स का उपयोग करके कई मुद्दों या चीजों के बीच बिना किसी स्कोरिंग पद्धति या पूर्व निर्धारित मानकों का उपयोग किये, सीधा तुलनात्मक अध्ययन करता हैं। इसी प्रकार की एक विधि (कुमार–2002) अपनाकर, यह टूल विश्लेषण या कार्य योजना हेतु विभिनन मुद्दों का प्राथमिकीकरण करता है। कभी–कभी यह टूल, ज्यादा विस्तृत रैंकिंग टूल के पहले भी उपयोग में लाया जाता है। जैसे कि मैट्रिक्स रैंकिंग (टी–9)

उद्देश्य

जोड़ावार रैंकिंग, चीजों की तुलना करने तथा प्राथमिकीकरण करने में मदद करता है तथा यह टूल विभिन्न मुद्दों के सम्बंध में यह निर्णय लेने में मदद करता है कि समुदाय किस को महत्व या प्रमुखता देता है। जैसा कि– विभिन्न संवदादाता, पशु सम्बंधी बीमारी, चारा/दाना इत्यादि यह टूल सहभागी पशु कल्याण आंकलन के पश्चात् कल्याण सम्बंधी मुद्दों के प्राथमिकीकरण एवं उन मुद्दों पर कार्य करने में भी मदद करता है (देखें अध्याय–4, अवस्था–3), जोड़ावार रैंकिंग के कई उदाहरण मौजूद हैं, जो दर्शाते हैं कि हम इसे पशु पालकों के साथ बार–बार कर सकते हैं।

पशु सम्बंधी बीमारियों का जोड़ावार रैंकिंग:–

(चित्र सं0–टी–8ए) कार्य करने वाले पशुओं में होने वाली सामान्य बीमारियों में तुलना कर यह पता लगाया गया है कि कौन सी बीमारी बड़ी समस्या है। यह टूल लोगों को पशुओं में होने वाली स्थानीय सामान्य बीमारियों की समझ बनाने में मदद करता है तथा इसे पशु कल्याण सम्बंधी कारण एवं प्रभाव विश्लेषण टूल (टी 26) के आधार के रूप मे भी प्रयोग कर सकते हैं।

पशु सम्बंधी सेवादाताओं का जोड़ावार रैकिंग

जोड़ावार रैकिंग का प्रयोग सेवादाताओं हेतु कई मायनों में प्रयोग कर सकते हैं। जैसे कि पशु कल्याण हेतु सेवाददाताओं का महत्व, गुणवत्ता का वर्गीकरण, विभिन्न सेवादाताओं की उपलब्धता उनकी फीस या कीमत, (उदाहरण स्वरूप–पशु स्वास्थ्य कार्यकर्ता, नालबंद, साज बनाने वाला, दाना वाला इत्यादि) या फिर एक ही सेवा हेतु कई संवादाताओं का वर्गीकरण,जैसे कि एक क्षेत्र के कई नालबंदों का वर्गीकरण।

विश्लेषण का एक दूसरा तरीका या दृष्टिकोण भी मैट्रिक्स में जोड़ सकते हैं। जैसा कि नीचे चित्र (टी–8 बी) में दर्शाया गया है। इसके साथ ही साथ पशु कल्याण में विभिन्न सेवादाताओं के महत्व के वर्गीकरण हेतु समूह उसी चार्ट में तीर का निशान लगाकर यह दर्शा सकता है कि सेवाओं की गुणवत्ता तथा मित्रतापूर्ण व्यवहार के हिसाब से वे किस सेवादाता को पसन्द करते हैं।

पशु कल्याण संबंधी मुद्दों का जोड़ावार रैकिंग

यह समुदाय को पशु कल्याण सम्बंधी मुददों के प्राथमिकी करण में सहयोग करता है, जो हमें सहभागी पशु कल्याण आंकलन में निकालने हों।

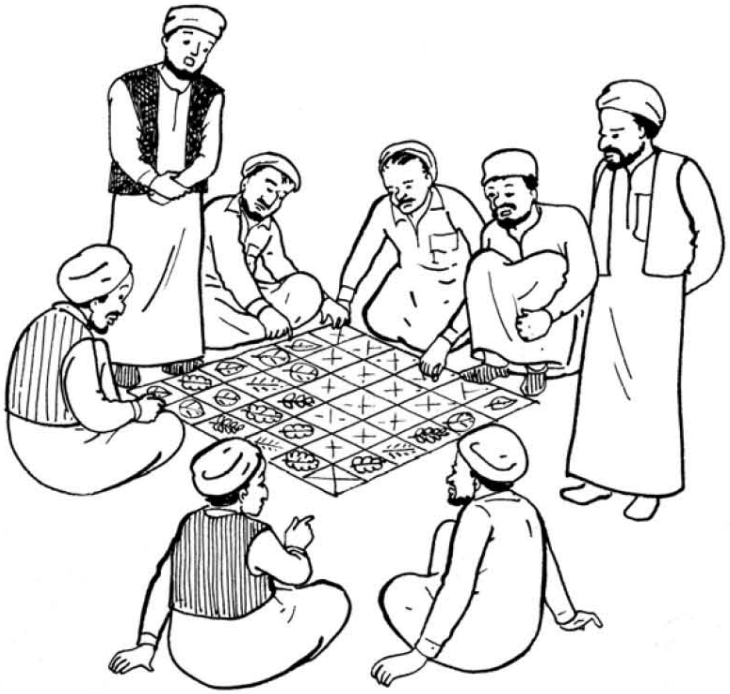

कैसे करेंगे?	
प्रथम चरण	निर्धारित विषय, जैसे कि गांव में कामकाजी पशुओं में सबसे खतरनाक बीमारी कौन सी देखी जाती है? प्रतिभागियों से पूछें की सामान्य तौर पर कौन सी बीमारी ज्यादा होती है। उसके बीच चर्चा कर एक सूची तैयार करें। ध्यान रखें कि कोई बीमारी छूटे नहीं। प्रतीकों का प्रयोग कर बीमारी चित्रित करें। जैसे कि विभिन्न पेड़ों की पत्तियों से, रंगीन कार्ड या अन्य स्थानीय स्तर पर उपलब्ध वस्तुओं से प्रत्येक का दो सेट बनायें।
द्वितीय चरण	रंगीन पाउडर,चाक या छड़ी द्वारा समूह से जमीन पर मैट्रिक्स या जालीदार संरचना बनाने को कहें उपर से नीचे तक सभी प्रतीकों को कालमों में सजायें। दूसरे प्रतीक सेट को एक पंक्ति (जैसा समूह पसंद करे बायें से दायें या दायें से बायें) क्रम में सजायें एक–एक कर कालम के प्रतीकों की तुलना पंक्ति के प्रतीकों से करें। प्रतिभागियों को चर्चा के लिए उत्साहित करें कि कौन बड़ी समस्या है तथा क्यों? मैट्रिक्स में चुना गया प्रतीक सम्बंधित खाने में रखें। उन खानों को काट दें जिनमें तुलना के समय वही प्रतीक हों। नीचे के आधे खाने काट दिये जायेंगे क्योंकि वे उपर पहले से मौजूद हैं। (देखें चित्र टी–8ए)
तृतीय चरण	मैट्रिक्स में आये सभी विकल्पों की बारबारता को गिने। गिनने के पश्चात अनाज के दाने या रोड़ों का प्रयोग करके संख्या को मैट्रिक्स के नीचे प्रदर्शित करें। इसके पश्चात् विकल्पों की एक सूची तैयार करें जिस विकल्प की प्राथमिकता सबसे अधिक है (या सबसे खतरनाक बीमारी है) इस विकल्प के परिणाम पर चर्चा करें। अगले चरण में जो बीमारी सबसे बड़ी समस्या के रूप मे सामने आई हो उसके कारणों का विश्लेषण करें। या सबसे ज्यादा पसंद किये जाने वाले सेवा दाताओं को समूह बैठक में बुलाकर उनके साथ सम्बंधित मुद्दों पर अश्व कल्याण हेतु कार्य योजना बना सकते हैं।

अश्व कल्याण जोड़ावार रैंकिंग करते समय सुगमकर्ता को ध्यान देने योग्य बातें

यदि तुलना करने वाले विकल्पों की संख्या बहुत ज्यादा हो तो यह अभ्यास प्रतिभागियों के लिए उबाउ हो सकता है।ऐसी दशा में विकल्पों की संख्या पर केन्द्रित होकर उसे कम करें।

पशु मालिक द्वारा किसी एक विकल्प के चुनाव पर चर्चा उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि उसका परिणाम। उस विकल्प के चुनाव के कारणों को लिखें।

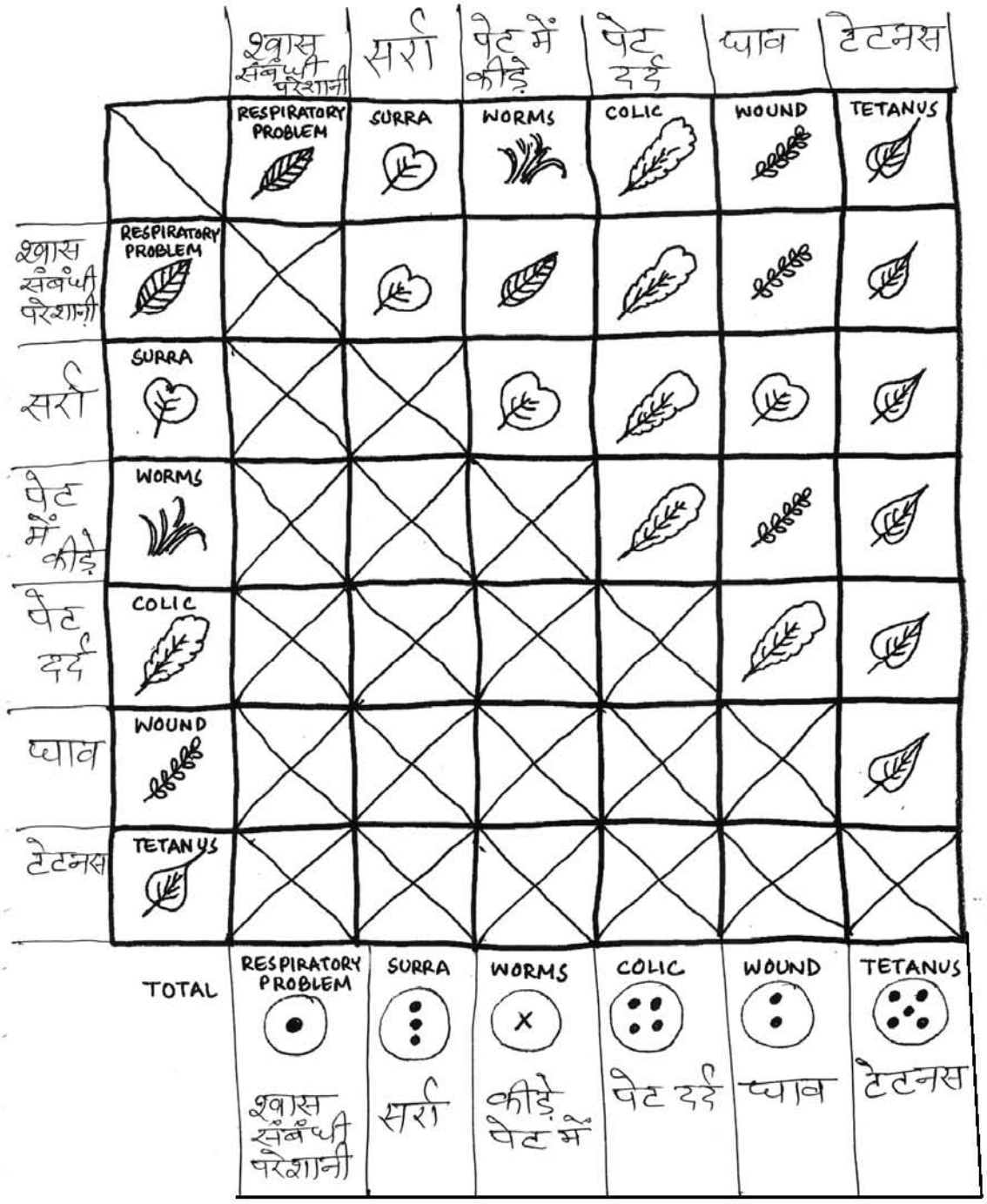

चित्र – टी 8 अ, पशु बीमारियों का जोड़ावार रैकिंग, मेरठ, उ0प्र0 भारत (2007)

उ0प्र0 के मेरठ जिले के अश्व मालिकों के एक समूह ने 6 बीमारी चिन्हित कर पेड़ के पत्तों को चिन्ह मानकर तुलना किया तथा उनको श्रेणीबद्ध किया श्वसन की समस्या, सर्रा (ट्राइपेनोसोमिया कीड़ों का कुप्रभाव, पेटदर्द, जख्म, टिटनेस। समूह द्वारा पाया गया कि टिटनेस बीमारी पशु कल्याण में सबसे बड़ी समस्या है इसके बाद पेट दर्द कीड़ों का कुप्रभाव शुरू में सबसे महत्वपूर्ण है। बीमारी को चिन्हित किया गया था परन्तु पाया गया कि जोड़ावार तुलना के दौरान यह सबसे कम महत्वपूर्ण यह P.R.A. टूल स्थिति आंकलन के भाग के रूप में प्रयोग किया गया इसका विवरण पाठ–4 के पैराग्राफ–2 से है। परिणामतः समुदाय ने निर्णय लिया कि टिटेनस से बचाव के लिए सामूहिक टीकाकरण करवाया जाये (देखें लागत लाभ विश्लेषण टी–15)

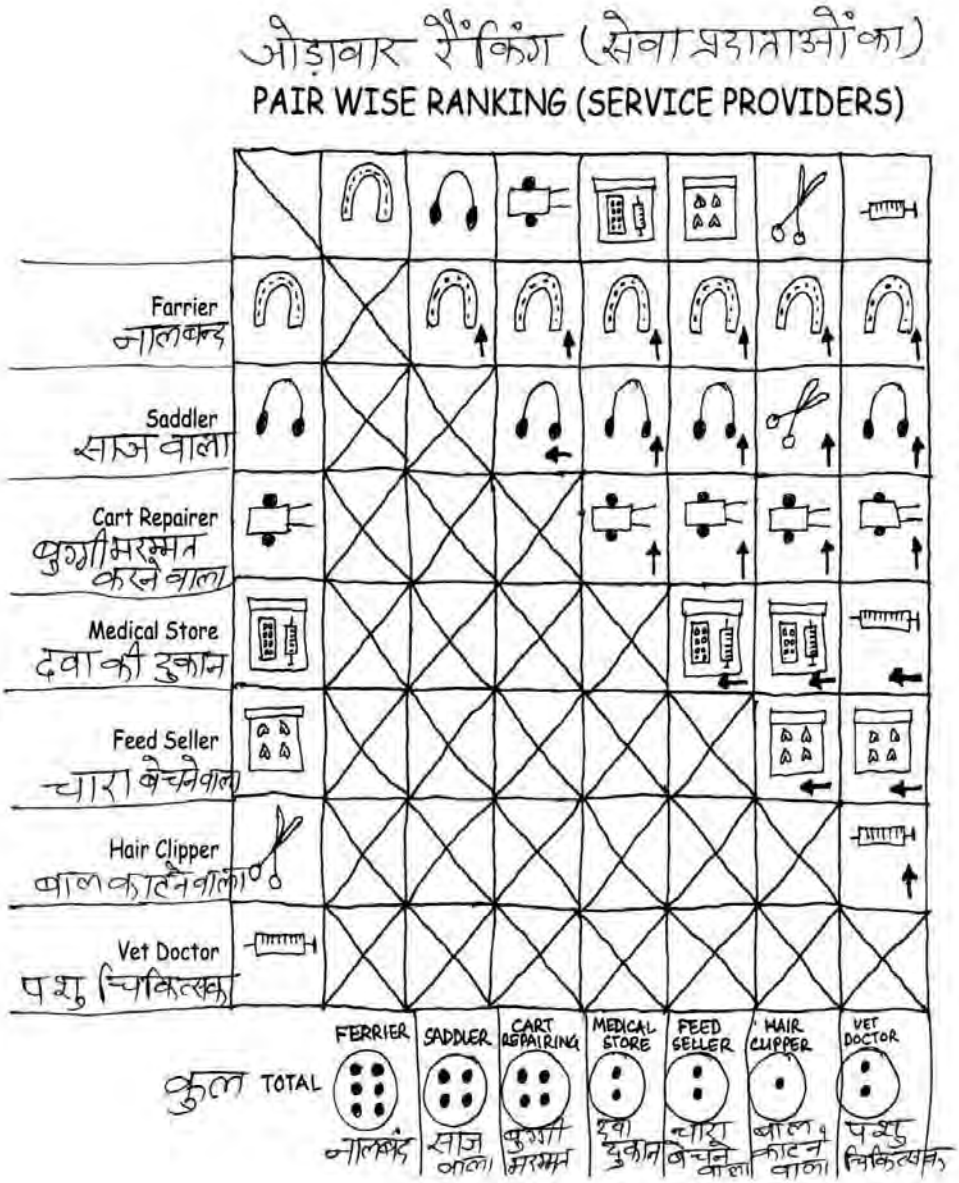

चित्र टी–8 बी–सेवादाताओं का जोड़ावार रैंकिंग,ग्राम अबुपुर, सहारनपुर, उत्तर प्रदेश भारत–2007

सहारनपुर जिले के ग्राम अबूपुर के पशु मालिकों ने अपने पशुओं के कल्याण हेतु अपने क्षेत्र के सेवादाताओं का वर्गीकरण किया, जिसमें नालबन्द सबसे महत्वपूर्ण पाया गया। समूह ने एक दूसरा दृष्टिकोण भी इस मैट्रिक्स में जोड़ा। तीर के निशान का प्रयोग यह दर्शाता है कि गुणवत्ता एवं मित्रतापूर्ण व्यवहार के अनुसार वे किस सेवादाता को ज्यादा पसन्द करते हैं।

टी–9 मैट्रिक्स रैकिंग और स्कोरिंग

ये क्या है?

इस टूल का प्रयोग निर्धारित मानकों के आधार पर पशु सम्बंधित मुद्दों की तुलना के लिए करते हैं। यह एक दूसरे मैट्रिक्स रैकिंग (कुमार 2002) से लिया गया है।

<u>उददेश्य</u>:–

मैट्रिक्स रैकिंग, जोड़ावार रैकिंग से भिन्न है। क्योंकि इसमें मुद्दा या वस्तु का रैंक या स्कोर समूह द्वारा पूर्व निर्धारित मानकों के आधार पर किया जाता है। इसमें आप और प्रतिभागी दोनों एक अच्छी समझ विकसित करेंगे कि समुदाय में निर्णय लेने का तरीका, उसका महत्व व चुनाव कैसे होता है।
पशु कल्याण के संदर्भ में मैट्रिक्स रैकिंग या स्कोरिंग का प्रयोग निम्नलिखित के लिए किया जा सकता है:–

पशु बीमारियों का मैंट्रिक्स रैंकिंग (या अन्य पशु कल्याण के मुद्दे)

सम्बंधित रैंक या स्कोर एक निश्चित मानक के सापेक्ष जो कि बीमारी की बारम्बरता, गम्भीरता, इलाज खर्च, अच्छा होने की दर व समय के लिए किया जाता है।

सेवा प्रदाता हेतु मैट्रिक्स स्कोरिंग

कामकाजी पशुओं के कल्याण हेतु। सेवा प्रदाताओं के स्थानीय उपलब्धता का स्कोर या रैंक निश्चित मानक के सापेक्ष (चित्र टी–9ए देखें) करते हैं। जैसे कि सेवा की गुणवत्ता, मूल्य, मित्रवत व्यवहार उपलब्धता, या महत्व, विभिन्न प्रकार के सेवा प्रदाताओं का भी तुलना किया जा सकता है जैसे बाल काटने वाला, नालबंद, मैडिकल स्टोर, समुदायिक पशु स्वास्थ्य कार्य कर्ता या बहुत से सेवा प्रदाताओं का एक ही सेवा के लिए भी तुलना किया जा सकता है। जैसे (क्षेत्र के सभी दवा विक्रेता)

ऋण स्रोतों का मैट्रिक्स स्कोरिंग

समुदाय/समूह अपने कामकाजी पशुओं के कल्याण स्तर को बढ़ाने हेतु ऋण स्रोतों का तुलना कर उनमें से एक को अपना सकता है अथवा नए विकल्पों का चुनाव भी कर सकता है। (मैट्रिक्स रैकिंग या स्कोरिंग चित्र टी–9बी देख सकते हैं) मैट्रिक्स पर देख सकते हैं ब्याज दर, ऋण की उपलब्धता, वापसी की आसान किस्त या जायदाद जाने का खतरा या जमीन जाने का खतरा यदि समय से वापसी में अक्षम होने पर। ऋण स्रोत को ऋण विश्लेषण टूल के माध्यम से भी चिन्हित किया जा सकता है (टी–13)

इसे कैसे करेंगें	
प्रथम चरण	निर्णय लेने हेतु चिन्हित मुद्दों या वस्तु का विश्लेषण पूर्व चर्चा या अभ्यास के आधार पर समूह के साथ आम सहमति से किया जा सकता है। कारणों और मानकों पर बहस जो कि निर्णय लेने में प्रयोग किये गये या किसी मुद्दे के लिए जो ज्यादा पंसद की गयी। यदि ज्यादा या बहुत से मानक या मान दिये जाये तो प्रतिभागियों को उत्साहित कर सबसे महत्वपूर्ण निकालना। उन मानकों की लिस्ट बनाना। मानक या तो सभी धनात्मक होंगे या सभी ऋणात्मक। मिलाने पर बाद में धनात्मक और ऋणात्मक मानक भ्रम उत्पन्न करेंगे।
द्वितीय चरण	ऊपर से नीचे तक सूचीबद्ध मानकों का एक मैट्रिक्स जमीन पर बनाना और जो वस्तु रैकिंग के लिए है बायें से दाहिने लिस्ट करना। समूह से समस्त वस्तु के लिए रैंक पूछना पहले मानक के आधार पर वे चुनें। तब सभी अच्छे मानक, द्वितीय अच्छे मानकों से, इस प्रकार करते जाने से पूरी सूची सभी मानकों के सापेक्ष तुलनात्मक होगी।
तृतीय चरण	अब रैंकिंग पूर्ण है। प्रश्न पूछताछ के द्वारा निष्कर्ष पर पहुंचने हेतु सम्बोधित करें। उदाहरण के लिए उनके बारे में पूछें जो वस्तु प्रथम रैंक पर है और अन्तिम रैंक पर है। अधिकाधिक गहराई तक चर्चा परिचर्चा के लिए जिस कारण से यह निर्णय लिया गया के लिए उत्साहित करना। सीधे रैंक करने के बजाय 10 या अधिक बीज या पत्थरों का प्रयोग कर स्कोरिंग करें। पर्याप्त समय दें कारणों पर चर्चा परिचर्चा और विश्लेषण हेतु और रैकिंग एवं स्कोरिंग हेतु। और पर्याप्त समय ध्यान केन्द्रित रहें। इनटायर मैट्रिक्स निश्चित निर्णय और कार्य नियोजन के लिए अंकित हो जायेगी ।

मैट्रिक्स रैंकिग या स्कोरिंग पर सुगमकर्ता हेतु टिप्पणी

- जाने–अनजाने में अक्सर यह प्रवृति बन गयी है कि सुगमकर्ता समुदाय के बजाय अपना मानक रैकिंग या स्कोरिंग के लिए दे देता है। यह बहुत महत्वपूर्ण है कि आप समुदाय को समर्थ बनाएँ ताकि वे अपने मानक लायें। समुदाय द्वारा लाये गये कुछ मानक विचित्र दिख सकते हैं, परन्तु यदि प्रतिभागी मान रहे हैं कि यह भी महत्वपूर्ण है एवं इसकी आवश्यकता है तो इसका आदर करते हुए इसके मूल आधार को समझना चाहिए।
- जैसे–जैसे कल्याण। विकास कार्यक्रम आगे बढ़ता है हम प्रभावी ढंग से मुद्दों में समय के साथ आ रहे परिवर्तन के अनुश्रवण एवं मूल्यांकन के लिए इस टूल का प्रयोग करते हैं।
- यह बहुमुखी अभ्यास है और विकसित होने तथा नये खोज के लिए खुला है ।

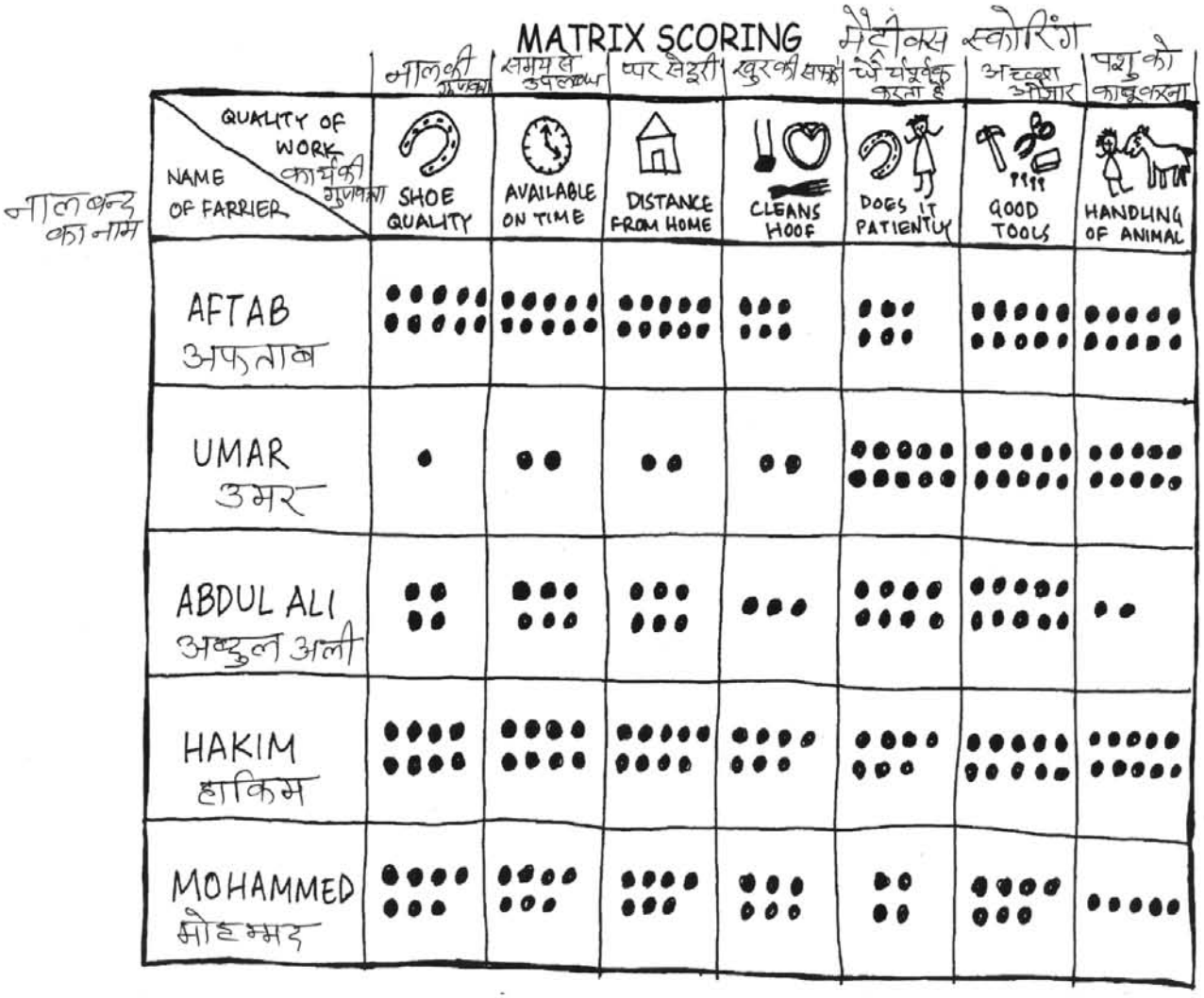

चित्र – टी 9 अ, नालबन्दों द्वारा दी जा रही सेवाओं का मैट्रीक्स स्कोरिंग, भारत (2007)

उ0प्र0 के सहारनपुर जिले में ''मैट्रिक्स स्कोरिंग'' अभ्यास का प्रयोग करके अश्व पालक समुदाय में पांच स्थानीय नाल बंदों की तुलना की गयी। समुदाय समूह ने सात मानक निर्धारित किये जिसमें नालबंद का धैर्य और काबू करने का अच्छा तरीका भी शामिल था। प्रत्येक मानक अंक हेतु 10–10बीज का प्रयोग किया गया। समूह ने तय किया कि दो सबसे अच्छे नालबंदों को दूसरी बैठक में आमंत्रित कर क्रमशः उनसे बहुत अच्छा सम्बन्ध बनाकर सामूहिक नालबंदी दर तय किया जाये।

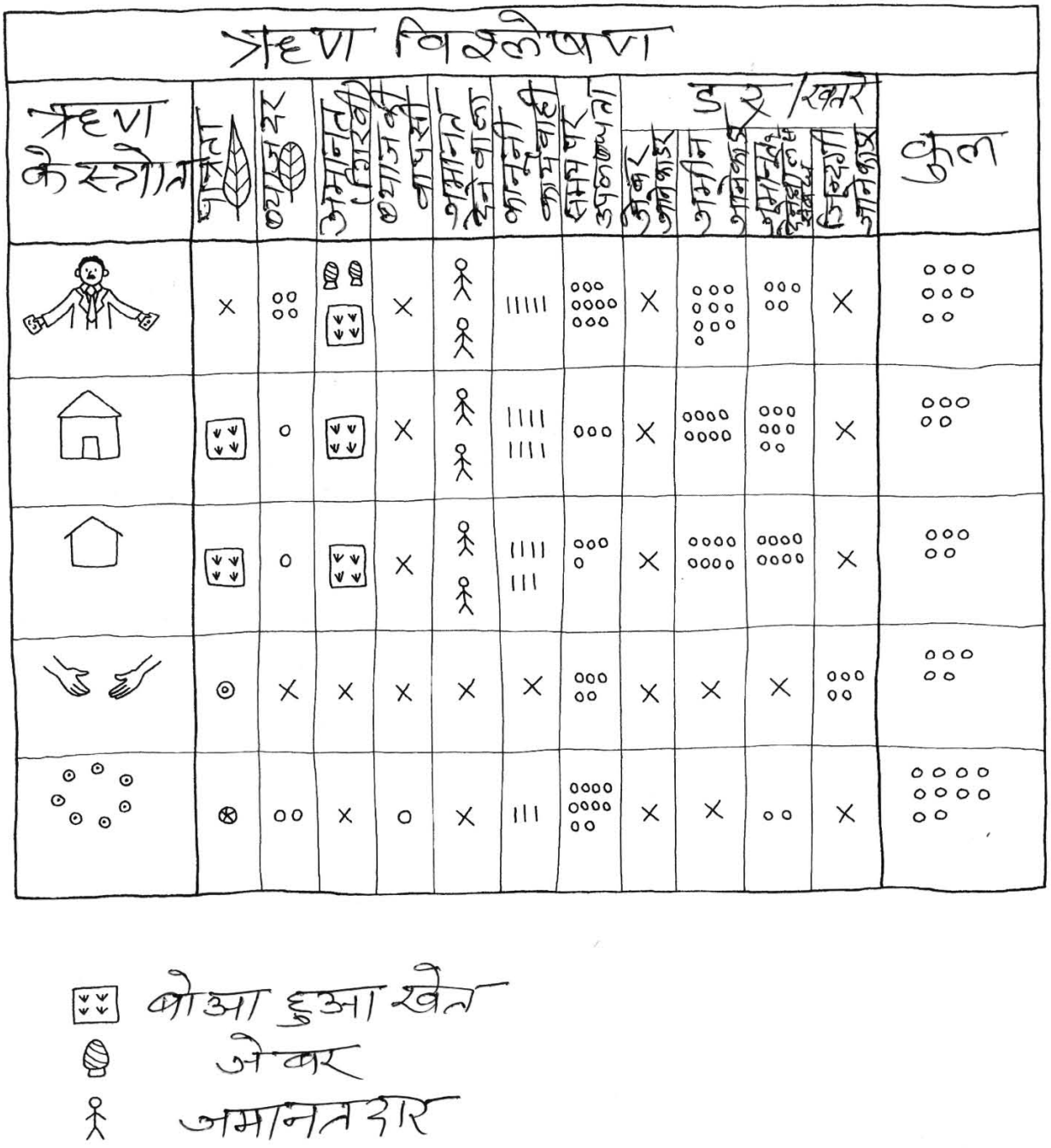

टी–9 बी भारत (2009) उ0प्र0 ,उन्नाव जिला के रूपक ग्राम में, पशुपालकों द्वारा 5 विभिन्न ऋण स्रोतों का 11 मानक चिन्हित कर, जोड़ावार तुलनां।

उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले के रूपक ग्राम के पशुपालकों द्वारा 5 विभिनन ऋण स्रोतों का विश्लेषण गयारह, आम सहमति द्वारा तय मानक के आधार पर किया गया। उपरोक्त अभ्यास कुछ ऐसे उच्च कोटि के भय का राज खोला जो पैसा उधार लेने से सम्बंधित थे उसमें यह भी जुड़ा था कि उनकी भूमि जाने का भय, प्रतिभूति (गारन्टी) की हानि, यहां तक कि जीवन की हानि, जिसे पैसा नहीं पूरा कर सकता। इस अभ्यास द्वारा समूह को आभास कराया कि ब्याज और उधार पैसा लेने का किससे लाभ है। समूह ही एक मात्र रास्ता है। ऋण विश्लेषण की गतिविधि से समूह में बचत प्रारम्भ हुयी, जिससे कि शामिल सदस्य उनके जानवर और उनके परिवार की सहायता हो सके।

टी–10 लिंग आधारित पहुंच एवं नियंत्रण विवरणिका

यह क्या है

यह टूल विश्लेषित करता है कि समुदाय के किन सदस्यों की विभिन्न ससांधनों एवं सेवाओं तक पहुँच है और किस प्रकार ये संसाधन एंव सेवायें नियंत्रित होती है (हमने इसके मूल स्वरूप (थामस लायटर अधि,1995) से ग्रहण किया है।) यह रूपान्तरण पशु कल्याण से सम्बंधित संसाधनों जैसे पानी, दाना–चारा, चारागाहे और बाह्य सेवा प्रदाता जो काम करने वाले पशुओं को सेवा देते हैं जैसे नालबन्द पशु चिकित्साक आदि पर केन्द्रित है।

उददेश्य – लिंगानुसार पहुंच एवं नियंत्रण (देखें चित्र टी–10)

टूल गांव या परिवार के सदस्यों की पशु कल्याण से सम्बंधित सेवा एवं संसाधन तक पहुंच एवं नियंत्रण की एक समान समझ पैदा करता है। यह समझ प्रतिभागियों में अपने पशु के कल्याण को बढ़ाने हेतु कदम उठाने की आवश्यकता का निर्णय लेने में मदद करती है। कौन इसको कर सकता है और किसको इस विशेष कदम से लाभ होगा। उदाहरणार्थ हमने इस टूल का प्रयोग पशु चिकित्सकीय सेवाओं हेतु परिवार द्वारा निर्णय लेने की प्रक्रिया को जानने के लिए किया।

इस विवरणिका का प्रयोग अक्सर गांव या घरों में महिला एवं पुरूष के मध्य पहुंच एवं नियंत्रण को प्रदर्शित करने के लिए किया जाता है बच्चों को भी इसमें शामिल किया जा सकता है। इसका प्रयोग पशु मालिक, प्रयोगकर्ता एवं चालकों के मध्य पहुंच एवं नियंत्रण जानने हेतु किया जा सकता है।

इसे कैसे करेंगें	
प्रथम चरण	समूह से अपने कार्य करने वाले पशु के लिए आवश्यक सेवाओं एवं संसाधनों को सूचीबद्ध करने को कहें। अब एक तालिका बनाकर सभी साधनों एवं सेवाओं को नीचे तक सूचीबद्ध करें। इसके साथ दो बड़े कालम, एक पहुंच का तथा दूसरा नियंत्रण का बनायें (चित्र टी 10 में पहुंच को कौन करता है से विस्थापित किया गया है)। अब पहुंच और नियंत्रण वाले कालमों को अपनी आवश्यकतानुसार कालमों में विभक्त करें उदाहरण–एक महिला हेतु दूसरा पुरूष हेतु अथवा तीन कालम पहला पशु मालिक, दूसरा प्रयोगकर्ता तीसरा किराये पर लेने वाले का बना सकते हैं।
द्वितीय चरण	समूह को सेवाओं और उससे सम्बंधित साधनों को अंक देने हेतु प्रोत्साहित करें। (बीज या कंकड़ के माध्यम से) समूह प्रत्येक विषय वस्तु को 10 अंकों के आधार पर अंक दे सकते हैं (कोई और अंक जो वे तय करें) इसी के अनुसार सेवा और साधन पर किसकी पहुंच हैं और किसका नियंत्रण है को भी तय करें।
तृतीय चरण	प्रतिभागियों को पहुंच व नियंत्रण पर पुरूष व महिलाओं को दिए गए अंकों के अन्तर का विश्लेषण करवायें। इस अन्तर का उनके पशु पर क्या प्रभाव पड़ रहा है? क्या पहुंच और सेवा के अन्तर को बदलने या बढ़ाने पर पशु के कल्याण के लिए लाभप्रद होगा। यदि हां तो इसके लिए कदम तय करें तथा कौन इसको करेगा भी तय करें।

सुगमकर्ता हेतु सुझाव

- इस अभ्यास के करने से पूर्व तय कर लें कि ये महिलाओं के समूह के साथ अलग तथा पुरूषों के समूह के साथ अलग करना ठीक रहेगा या मिश्रित समूह के साथ। यह आपकी समुदाय के साथ पकड़ या उसकी स्थिति पर निर्भर है।